BIHISHT KI KUNJIYAN (HINDI)

जन्नत के एह़वाल और जन्नत में ले जाने वाले आमाल पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

तख़रीज शुदा

बिहिश्त की कुन्जियां

-: मुअल्लिफ़ :-

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आज़मी

इस किताब में आप मुलाह़ज़ा फ़रमाएंगे :

जन्नत में ख़ुदा का दीदार	29
बग़ैर अ़मल के फ़क़त़ निय्यत पर सवाब	41
अज़ान के दुन्यावी फ़वाइद	63
शहादत मिलने का आसान त़रीक़ा	131
अज़कारे मासूरा	157
तवलीफ़ों के बदले जन्नत	236

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत़र नम्बर के साथ **Sms**, **E-mail**, **Whats App** या **Telegram** के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

जन्नत के एह़वाल और जन्नत में ले जाने वाले आमाल

पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

बिहिश्त की कुन्जियां

-: मुअल्लिफ़ :-

शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दावते इस्लामी)

(शोबए तख़रीज)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

नाम किताब : बिहिश्त की कुन्जियां
मुअल्लिफ़ : शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तख़रीज)
सिन त़बाअ़त : जमादिल आख़िर-1441, फ़रवरी-2020
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁..... अजमेर : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❁..... बरेली : मक्तबतुल मदीना, दरगाह आला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी. फ़ोन : 09313895994

❁..... गुलबर्गा : मक्तबतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❁..... बनारस : मक्तबतुल मदीना, सी. के. 68/26 मुस्लिम मुसाफ़िर ख़ाने के सामने, कच्छी सराय, दालमन्डी, वाराणसी (बनारस) यू.पी. फ़ोन : 09369023101

❁..... कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द ग़ुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यू.पी. फ़ोन : 09616214045

❁..... कलकत्ता : मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❁..... नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❁..... सुरत : मक्तबतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❁..... इन्दौर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदापुरा, इन्दौर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❁..... बेंग्लोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नं. 13, जामिआ़ ह़ज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783

❁..... हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / Website : www.dawateislamihind.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं है

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिए, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिए । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	3	बग़ैर अ़मल के फ़क़त़ निय्यत पर सवाब	41
पेश लफ़्ज़	7	इत्तेबाए़ सुन्नत	42
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه	12	अक़्सामे बिदअ़त	44
तम्हीदी तजल्लियां	21	इ़ल्मे दीन	51
जन्नत क्या है ?	23	वुज़ू	57
जन्नत कहां है ?	24	वुज़ू के दुन्यावी फ़ाएदे	60
जन्नतें कितनी हैं ?	25	अज़ान	60
जन्नत की मन्ज़िलें ?	25	अज़ान के दुन्यावी फ़वाइद	63
जन्नत के फाटक	25	तामीरे मसाजिद	64
जन्नत के बाग़ात	26	नमाज़	66
जन्नत की इ़मारतें	26	ह़ज़रते ह़ातिमे असम की नमाज़	70
जन्नत की नहरें	27	फ़ाक़े का ख़त़रा	72
जन्नत के चश्मे	28	जमाअ़त की अहम्मिय्यत	72
एह्ले जन्नत की उ़म्रें	28	सुनने मुअक्कदा	74
जन्नतियों की बीवियां और ख़ुद्दाम	28	नमाज़े तहज्जुद	75
हूरों का जल्सा और गाना	28	नमाज़े तह़िय्यतुल वुज़ू	76
जन्नत के बाज़ार	29	नफ़्ल नमाज़ों की कसरत	77
जन्नत में ख़ुदा का दीदार	29	ज़कात	81
जन्नत में ले जाने वाले आमाल	31	सदक़ा	87
कलिमए इस्लाम	31	सदक़े की त़ाक़त	94
कलिमए इस्लाम का सवाब	36	रोज़ा	96
अच्छी निय्यत	37	रमज़ान के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुत़बए नबवी	99
एक शहीद, एक आ़लिम, एक सख़ी का अन्जाम	38	शबे क़द्र व इ़दुल फ़ित्र	100
		ह़ज्जो उ़मरह	102
रात में सदक़ा देने वाला	40	ह़ज्जे मबरूर	107

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
अ़शरए ज़ुल हिज्जा	108	इत़ाअ़ते वालिदैन	191
कुरबानी	110	रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक	194
तिलावते कुरआने मजीद	111	पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव	198
मदीनए त़य्यिबा की सुकूनत	116	यतीमों पर शफ़्क़त	200
जेहाद	117	अच्छे अख़्लाक़	202
शहादत	122	ज़बान व शर्मगाह की हिफ़ाज़त	207
शहादत मिलने का आसान त़रीक़ा	131	रास्तों से तक्लीफ़ों को दूर करना	208
सामाने जेहाद की तय्यारी	131	लोगों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ करना	211
अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र	134	मेहमान नवाज़ी	212
दुरूद शरीफ़	141	सलाम व मुसाफ़हा	213
तौबाओ इस्तिग़फ़ार	149	तवाज़ोअ़ व इन्किसारी	216
तौबा का त़रीक़ा	157	ह़या	218
अज़्कारे मासूरा	157	सब्र	220
अल्लाह के लिए मह़ब्बत व अ़दावत	164	ख़ैर ख़्वाही	222
लिल्लाही मह़ब्बत व अ़दावत की अहम्मिय्यत	169	मुसलमानों की पर्दापोशी	224
		रेह़्म व शफ़्क़त	225
ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी	170	सख़ावत	227
मौत को याद करना	173	ह़दीस الابرص والاقرع والاعمٰی	230
बीमार पुर्सी	176	गोश्त पथ्थर हो गया	233
सच्चा ताजिर	180	तवक्कुल	234
लेन देन में नर्मी	181	छे कामों पर जन्नत की गारन्टी	235
सच बोलना	182	तक्लीफ़ों के बदले जन्नत	236
निकाह़	184	मुफ़्लिसी और फ़क़ीरी	237
लड़कियों की परवरिश	185	सालिह़ीन की ख़िदमत	238
शौहर की रिज़ामन्दी	187	दुआ़	240
बच्चों की मौत	188	मआख़िज़ो मराजेअ़	241

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"जन्नत के लिए कमर बस्ता हो जाइए" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "22 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।" (الجامع الصغير،ص٥٥٧،الحديث٩٣٢٦، دارالكتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल : ❀ बग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

❀ जितनी अच्छी निय्यतें ज़्यादा, उतना सवाब भी ज़्यादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिए इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल इम्कान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ कुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (यानी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिए ब निय्यते

हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़हात पढ़ कर इल्मे दीन हासिल करने के सवाब का हक़दार बनूंगा ﴾15﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस हदीसे पाक "تَهَادُوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महब्बत बढ़ेगी" (مؤطا امام مالك، ج٢،ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अमल की निय्यत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़ तादाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा ﴾17﴿ जिन को दूंगा हत्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 26) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिए ﴾18﴿ इस किताब के मुतालए का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾19﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिए आयते करीमा فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।" (پ١٤، النحل:٤٣) पर अमल करते हुवे उलमा से रुजूअ करूंगा ﴾20﴿ जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा ﴾21﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾22﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तेहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअल्लिक़ रेहनुमाई के लिए, **अमीरे एहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मुतअल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** और **पेम्फ़लेट मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन हासिल फ़रमाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तेह़रीक "**दावते इस्लामी**" नेकी की दावत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिए **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दावते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शोबे** हैं :

《1》 शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत　　《2》 शोबए दर्सी कुतुब
《3》 शोबए इस्लाह़ी कुतुब　　《4》 शोबए तराजिमे कुतुब
《5》 शोबए तफ़्तीशे कुतुब　　《6》 शोबए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिए सुन्नत, माह़िए

बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दावते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेश लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बिहिश्त यानी जन्नत इन्तिहाई ह़सीन व बहुत ही शानदार मक़ाम है, इस में **अल्लाह** तआ़ला उन लोगों को दाख़िल फ़रमाएगा जो ईमान लाए और नेक आमाल करते रहे। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में इरशादे रब्बानी है :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط

(پ٥، النسآء: ١٢٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान लाए और अच्छे काम किए कुछ देर जाती है कि हम उन्हें बाग़ों में ले जाएंगे जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें।

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करने वालों को जन्नत की बिशारत दी गई चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٥ (پ٤، النسآء: ١٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी कामयाबी।

जन्नत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम क़िस्म की रूह़ानी व जिस्मानी लज़्ज़तों के वोह तमाम सामान मुहय्या फ़रमाए हैं जो किसी बड़े से बड़े दानिश्वर के गुमान व तसव्वुर में भी नहीं आ सकते जो कोई मिसाल उन नेमतों की तारीफ़ में दी जाए वोह मेह़ज़ तक़रीबे फ़ेह़्म (समझाने के लिए)

है वरना दुन्या की आला से आला शै को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कोई मुनासबत नहीं। ज़ाहिर है कि जिन नेमतों को न आंखों ने देखा न कानों ने सुना न किसी आदमी के दिल पर बे देखे इन का ख़त़रा गुज़रा तो वोह तम्सील व तशबीह से अपनी पूरी ह़क़ीक़त के साथ क्यूंकर निगाहों में समा सकती और ज़ेह्नों में जगह पा सकती है इस लिए इन्सान को जन्नत की नेमतों का पूरा अन्दाज़ा अपने ह़वास से हो ही नहीं सकता। ग़फ़ूरुर्रह़ीम की मर्ह़मतों, मेह्रबानियों, बख़्शिशों, इनायतों और नेमतों का कुछ तज़किरा आयाते कुरआनी की रौशनी में दर्जे ज़ैल है :

﴾1﴿ जन्नती जन्नत में हमेशा रहेंगे उन्हें कभी मौत न आएगी ﴾2﴿ एक एक जन्नती के लिए चार चार बाग़ होंगे ﴾3﴿ और उन बाग़ों में शराबे त़हूर, कभी ख़राब न होने वाले दूध, साफ़ किए हुवे शहद और ठन्डे खुशगवार पानी की नहरें हैं ﴾4﴿ उन में खजूर, अनार, अंगूर और हर क़िस्म के मेवे हैं ﴾5﴿ उन बाग़ों में ख़ैमे उस्तादा हैं और उन में बालाख़ानों के ऊपर बालाख़ाने बने हैं ﴾6﴿ उन बाग़ों में पर्दा नशीन, बड़ी बड़ी आंखों वाली, एक उ़म्र वाली हूरें हैं जो अपने शौहरों पर प्यारी, उन्हें प्यार दिलाती हैं, आ़दत की नेक, सूरत की ह़सीन होंगी, हुस्नो लत़ाफ़त में याक़ूत व मरजान की मिस्ल होंगी, उन के हुस्न की चमक दमक छुपे हुवे मोतियों की आबो ताब की त़रह़ होगी, उन को उन के शौहरों से पेहले न किसी आदमी ने हाथ लगाया होगा न किसी जिन्न ने ﴾7﴿ उन में जन्नतियों की ख़िदमत के लिए, निहायत ख़ूब सूरत, कमसिन लड़के होंगे जो कभी जन्नतियों की ख़िदमत से न थकेंगे और न कभी उन की ख़ूब सूरती व कमसिनी में फ़र्क़ आएगा ﴾8﴿ वोह ग़िलमान जन्नतियों के गिर्द कूज़े, आफ़्ताबे, जाम और चांदी सोने के बरतन लिए फिरेंगे ﴾9﴿ उन में पसन्द के मुत़ाबिक़ मेवे, मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ परिन्दों के गोश्त होंगे ﴾10﴿ उन के साए जन्नतियों पर झुकने

वाले होंगे कि जन्नती जिस त़रफ़ जाएगा जन्नत के दरख़्त का साया उसी त़रफ़ झुक जाया करेगा ﴾11﴿ उन के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिए गए होंगे कि जब जन्नती कोई मेवा खाना चाहेगा उस की शाख़ उस के मुंह तक झुक कर नीची हो जाया करेगी ﴾12﴿ उन बाग़ों में न धूप की ह़िद्दत होगी न सर्दी की शिद्दत ﴾13﴿ जन्नतियों को क़नावीज़ और करेब (रेशम के दो क़िस्मों) के कपड़े और सोने चांदी के कंगन और मोतियों के ज़ेवर पेहनाए जाएंगे ﴾14﴿ ऊंचे ऊंचे जड़ाव तख़्तों पर ऐसे रेशमी नर्म बिछौनों पर, जिन का अस्तर क़नावीज़ का होगा और ख़ूब सूरत मुनक़्क़श चांदनियों पर तक्ये लगाए बैठे होंगे।

इसी त़रह़ मालिके जन्नत, क़ासिमे नेमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमूदाते आ़लिया की रौशनी में जन्नत का कुछ तज़किरा मुलाह़ज़ा फ़रमाइए।

﴾1﴿ जन्नत में सौ दर्जे हैं हर दो दर्जों में वोह मसाफ़त है जो ज़मीनो आस्मान के दरमियान है ﴾2﴿ जन्नत में क़िस्म क़िस्म के जवाहिर के मह़ल हैं ऐसे साफ़ शफ़्फ़ाफ़ कि अन्दर का ह़िस्सा बाहर से और बाहर का अन्दर से दिखाई दे ﴾3﴿ जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं, ज़मीन ज़ाफ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याक़ूत ﴾4﴿ जन्नत में एक एक मोती का ख़ैमा होगा जिस की बुलन्दी साठ मील होगी ﴾5﴿ जन्नत की नह्रें जो हर एक जन्नती के मकान में जारी हैं उन का एक कनारा मोती का दूसरा याक़ूत का है और नह्रों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की ﴾6﴿ वहां नजासत गन्दगी बोलो बराज़ वग़ैरा बल्कि बदन का मैल अस्लन न होगा एक ख़ुश्बूदार फ़रह़त बख़्श डकार आएगी ख़ुश्बूदार फ़रह़त बख़्श पसीना निकलेगा और सब खाना हज़्म हो जाएगा और डकार और पसीने से मुश्क की ख़ुश्बू निकलेगी ﴾7﴿ हर वक़्त ज़बान से तस्बीह़ व तक्बीर बिल क़स्द और बिला क़स्द मिस्ले सांस के जारी होगी ﴾8﴿ हर

शख़्स के सिरहाने कम अज़ कम दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे क़िस्म क़िस्म की नेमतों के साथ ﴾9﴿ हर निवाले में सत्तर मज़े होंगे और हर मज़ा दूसरे से मुमताज़ ﴾10﴿ अदना जन्नती के लिए अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर बीबियां होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे कि उन में का अदना मोती मशरिक़ो मग़रिब को रौशन कर दे ﴾11﴿ जन्नत में नींद नहीं कि नींद एक क़िस्म की मौत है और जन्नत में मौत नहीं ﴾12﴿ जब कोई जन्नती जन्नत में जाएगा तो उस के सिरहाने और पाइंती दो हूरें निहायत अच्छी आवाज़ से गाएंगी मगर उन का गाना येह शैतानी मज़ामीर नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द व पाकी होगा वोह ऐसी ख़ुश गुलू होंगी कि मख़्लूक़ ने वैसी आवाज़ कभी न सुनी होगी और येह भी गाएंगी कि हम हमेशा रेहने वालियां हैं कभी न मरेंगी हम चैन वालियां हैं कभी तक्लीफ़ में न पड़ेंगी हम राज़ी हैं नाराज़ न होंगी मुबारक बाद उस के लिए जो हमारा और हम उस के लिए हों ﴾13﴿ सब से कम दरजे का जो जन्नती है उस के बाग़ात, बीबियां, नेमतें और ख़ुद्दाम हज़ार बरस की मसाफ़त तक होंगे। सब से आज़म व आला नेमत जो मुसलमानों को नसीब होगी वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार है कि उस के बराबर कोई नेमत नहीं जिसे एक बार दीदार मुयस्सर होगा हमेशा हमेशा उस के ज़ौक़ में मुस्तग़्रक़ रहेगा कभी न भूलेगा।

जन्नत की ऐसी ऐसी दाइमी नेमतों को पेशे नज़र रखते हुवे, जिस में रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार शामिल है हर मुसलमान को चाहिए कि वोह जन्नत के लिए कमरबस्ता हो जाए और सुनने इब्ने माजा की एक ह़दीसे मुबारका में है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "है कोई जो जन्नत को पाने के लिए कमरबस्ता हो" (سنن ابن ماجه، الحديث: ٤٣٣٢، ج٤، ص٥٣٥) लेहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत से उम्मीद रखते हुवे ऐसे आमाल में मश्ग़ूल हो जाइए जिन पर

अ़मल करने वालों के लिए जन्नत की बिशारत है और अह़ादीसे मुबारका में उन आमाल का तज़किरा मौजूद है जिन पर जन्नत की ख़ुश ख़बरी है, उन अह़ादीसे जन्नत निशान में से साठ आमाल को ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने अपनी किताब "**बिहिश्त की कुन्जियां**" में ज़िक्र फ़रमाया है जन्नत की तय्यारी के लिए येह किताब मश्अ़ले राह साबित होगी।[1] "**दावते इस्लामी**" की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" इस मदनी गुलदस्ते को दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है, जिस में मदनी उ़लमाए किराम دَامَ فُيُوْضُهُمْ ने दरजे ज़ैल काम करने की कोशिश की है।

❁ किताब की नई कम्पोज़िंग, जिस में रुमूज़े औक़ाफ़ का भी ख़याल रखने की कोशिश की गई है ❁ एह़तियात़ के साथ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ताकि अग़लात़ का इमकान कम हो ❁ दीगर नुस्ख़ों से तक़ाबुल और ह़वाला जात की ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज ❁ अ़रबी इबारात और आयाते क़ुरआनिया के मतन की तत़बीक़ व तस्ह़ीह़ ❁ और आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, उन के सिन वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

इस किताब को ह़त्तल मक़्दूर अह़सन अन्दाज़ में पेश करने में उ़लमाए किराम ने जो मेह़नत व कोशिश की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाए, उन्हें बेहतरीन जज़ा दे और उन के इ़ल्मो अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और दावते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शोबए तख़रीज मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दावते इस्लामी)

1.....इस सिलसिले में दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान के बयान का रिसाला "**जन्नत की तय्यारी**" का मुत़ालआ़ भी निहायत मुआ़विन साबित होगा, मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

तआरुफ़े मुसन्निफ़

हज़रते अल्हाज मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़ी क़ादा सिन 1333 हिजरी को अपने आबाई वत़न घोसी ज़िल्अ़ आज़म गढ़ में पैदा हुवे।

शजरए नसब येह है

मुह़म्मद अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा बिन शैख़ ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़ीम बिन शैख़ ह़ाजी अ़ब्दुल वह्हाब बिन शैख़ चमन बिन शैख़ नूर मुह़म्मद बिन शैख़ मिठ्ठू बाबा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)

आप के वालिदे गिरामी ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़ीम साह़िब ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, उर्दू ख़्वां, वाक़िफ़े मसाइले दीनिय्या, मुत्तक़ी, परहेज़गार थे। गाऊं के मश्हूर बुज़ुर्ग ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुस्सत्तार साह़िब से शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल था जो ह़ज़रते अशरफ़ी मियां किछौछवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बड़े भाई ह़ज़रते शाह सय्यिद अशरफ़ हुसैन साह़िब क़िब्ला किछौछवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुरीद थे चन्द साल हुवे इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

तालीम

अ़ल्लामा आज़मी साह़िब क़ुरआने मजीद और उर्दू की इब्तिदाई तालीम अपने वालिदे माजिद से ह़ासिल कर के मद्रसा इस्लामिय्या घोसी में दाख़िल हुवे और उर्दू फ़ारसी की मज़ीद तालीम पाई। चन्द माह मद्रसा नासिरुल उ़लूम घोसी में भी तालीम ह़ासिल की। इस के बाद मद्रसए मारूफ़िय्या मारूफ़ पुरा में मीज़ान से शर्हे जामी तक पढ़ा। फिर सिन 1351 हिजरी में मद्रसए मुह़म्मदिय्या ह़नफ़िय्या अमरोहा ज़िल्अ़ मुरादाबाद (यूपी) का रुख़ किया और वहां शैख़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना शाह उवैस ह़सन उ़र्फ़ ग़ुलाम जीलानी आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (शैख़ुल ह़दीस दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ मुतवफ़्फ़ा सिन 1397 हिजरी) और ह़ज़रते

मौलाना हिक्मतुल्लाह साहिब क़िब्ला अमरोही और हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद ख़लील साहिब चिश्ती काज़िमी अमरोही की ख़िदमत में एक साल रेह कर इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

इस के बाद सिन 1352 हिजरी में हज़रते सदरुश्शरीआ मौलाना हकीम मुहम्मद अमजद अली साहिब आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हमराह बरेली शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और मद्रसा मन्ज़रे इस्लाम महल्ला सौदा गरान बरेली में दाख़िल हो कर तालीमी सिलसिला शुरूअ फ़रमाया। मुल्ला हसन, मीबज़ी वग़ैरा चन्द किताबें हज़रते मुहद्दिसे आज़म पाकिस्तान मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद साहिब चिश्ती गोरदासपुरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं बाक़ी किताबें हज़रते सदरुश्शरीआ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पढ़ीं।

इस दौरान हुज्जतुल इस्लाम हज़रते मौलाना शाह हामिद रज़ा ख़ान साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (ख़लफ़े अक्बर सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा قُدِّسَ سِرُّه) की ख़िदमत में हाज़िरी दी और शरफ़याब हुवे। मौसूफ़ आप पर बड़ा करम फ़रमाया करते थे। आला हज़रत قُدِّسَ سِرُّه के बरादरे ख़ुर्द हज़रते मौलाना मुहम्मद रज़ा ख़ान साहिब उर्फ़ नन्हे मियां رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से फ़राइज़ की मश्क़ की और हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द मौलाना शाह मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान नूरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (ज़ैब सज्जादा आलिया क़ादिरिय्या रज़विय्या बरेली शरीफ़, ख़लफ़े असग़र हुज़ूर आला हज़रत قُدِّسَ سِرُّه) के दारुल इफ़्ता में भी हाज़िरी दी।

बरेली शरीफ़ में दौराने तालिबे इल्मी आप की इक्तिसादी हालत अच्छी नहीं थी। मस्जिद की इमामत और ट्यूशन से अख़राजात पूरे करते थे। जब हज़रते सदरुश्शरीआ मौलाना अमजद अली साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बरेली से रुख़्सत हो कर मद्रसए हाफ़िज़िय्या सईदिय्या दादूं ज़िल्अ अलीगढ़ में मस्नदे तदरीस पर जल्वा फ़रमा हुवे तो मौलाना आज़मी साहिब भी बरेली शरीफ़ न रेह सके और 10 शव्वाल सिन 1355 हिजरी को अलीगढ़ हज़रते सदरुश्शरीआ की ख़िदमत में हाज़िर

www.dawateislami.net

हुवे और मद्रसए ह़ाफ़िज़िय्या सइ़दिय्या में दाख़िला लिया और इम्तिह़ानात में अच्छी पोज़ीशन से कामयाब हो कर इन्आ़मात भी ह़ासिल किए।

अ़लीगढ़ के दौराने क़ियाम ह़ज़रते मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ बिहारी प्रोफ़ेसर दीनियात मुस्लिम यूनीवर्सिटी अ़लीगढ़ (ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ) की ख़िदमत में भी ह़ाज़िरी देते और इ़ल्मी इक्तिसाब फ़रमाते रहे।

सिने 1356 हिजरी में मद्रसए ह़ाफ़िज़िय्या सईदिय्या दादूं से सनदे फ़राग़ ह़ासिल किया। ह़ज़रते मौलाना सय्यिद शाह मिस्बाहुल ह़सन साह़िब चिश्ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत बांधी।

बैअ़त

17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिन 1353 हिजरी में ह़ज़रते क़ाज़ी इब्ने अ़ब्बास साह़िब अ़ब्बासी नक़्शबन्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पेहले उ़र्स में ह़ज़रते अल्ह़ाज ह़ाफ़िज़ शाह अबरार ह़सन ख़ान साह़िब नक़्शबन्दी शाहजहांपुरी (जो क़ाज़ी साह़िब मौसूफ़ के पीरभाई थे) से मुरीद हुवे।

2 ज़ी क़ादा सिन 1370 हिजरी को ह़ज़रते शाह अबरार ह़सन साह़िब नक़्शबन्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बाद आप के ख़लीफ़ए बरह़क़ अल्ह़ाज क़ाज़ी मेह़बूब अह़मद साह़िब अ़ब्बासी नक़्शबन्दी से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

चूंकि शुरूअ़ ही से मौसूफ़ का रुजह़ान सिलसिलए नक़्शबन्दिया की त़रफ़ ज़्यादा था इसी लिए इस सिलसिले में मुरीद हुवे मगर दीगर सलासिल के बुज़ुर्गों से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ो बरकात का सिलसिला जारी रखा।

25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिन 1358 हिजरी में उ़र्से रज़वी के मुबारक व मसऊ़द मौक़अ़ पर ह़ज़रते हुज्जतुल इस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान साह़िब (सिन 1363 हिजरी) ने सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या की ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

सिलसिलए तदरीस

फ़ारिगुत्तह़सील होने के बाद सब से पेहले मद्रसए इस्ह़ाक़िय्या जोधपुर (राजस्थान) में मुदर्रिस हुवे। दर्से निज़ामी का इफ़्तिताह़ फ़रमाया और मद्रसा तरक़्क़ी की राह पर चल निकला था कि अचानक जोधपुर में हिन्दू मुस्लिम फ़साद होने की वज्ह से बहुत से बैरूनी उ़लमा के साथ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को गिरिफ़्तार किया गया और बाद में इश्तिआ़ल अंगेज़ तक़रीर करने का इल्ज़ाम लगा कर हुकूमत ने शह्र बदर कर दिया जिस से मद्रसे को भी नुक़्सान हुवा और मौलाना मौसूफ़ को भी वहां से आना पड़ा।

सितम्बर सिन 1939 ईसवी में ह़ज़रते क़ाज़ी मह़बूब अह़मद साह़िब की दावत पर अमरोहा तशरीफ़ ले गए और वहां मद्रसए मुह़म्मदिय्या ह़नफ़िय्या में तदरीसी ख़िदमात अन्जाम दीं जिस का सिलसिला तीन साल तक रहा। उस वक़्त वहां पर मौलाना सय्यिद मुह़म्मद ख़लील साह़िब काज़िमी अमरोही सद्र मुदर्रिस थे इस दौरान भी मौसूफ़ से इस्तिफ़ादा किया। इस के बाद सिन 1942 ईसवी में दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मुबारकपुर में तदरीसी ख़िदमात का आग़ाज़ फ़रमाया और ग्यारह साल तक यहां भी दर्स देते रहे और इस की तामीर व तरक़्क़ी में भरपूर ह़िस्सा लिया।

सिने 1952 ईसवी में आप का अह़मदाबाद गुजरात ब सिलसिलए तक़रीर दौरा हुवा। मुतअ़द्दद तक़ारीर के सबब लोग गिरवीदा हुवे और जब वहां पर एक दारुल उ़लूम का क़ियाम अ़मल में आया तो अह़मदाबाद के अ़माइदे एह्ले सुन्नत ने ब इसरार मुबारकपुर से बुलवा कर दारुल उ़लूम शाहे आ़लम में मुदर्रिस रखा। इस सिलसिले में ह़ज़रते मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ां साह़िब नबीरए आला ह़ज़रत और

हुज़ूर मुफ़्तिए आज़म हिन्द مدظلہ الاقدس ने भी दारुल उ़लूम के क़ियाम और तरक़्क़ी में भरपूर हि़स्सा लिया।

मौलाना ने इस दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी और बक़ा में भरपूर और जान तोड़ कर कोशिश की और इस को उ़रूज तक पहुंचा कर दम लिया।

बाज़ नागुफ़्ता बेह ह़ालात और अरकान में से बाज़ के दरपै आज़ार होने की वज्ह से इस्तिफ़ा दे कर 17 शाबान सिन 1378 हिजरी को वहां से वत़न आ गए। इस के बाद ह़ज्जे बैतुल्लाह को रवाना हुवे। वापसी पर दारुल उ़लूम समदिय्या भीवन्डी (महाराष्ट्र) की त़लबी पर मार्च सिन 1960 ईसवी को त़लबा की एक जमाअ़त के साथ मद्रसए मज़्कूर में तशरीफ़ ले गए और चार बरस तक जम कर वहां तदरीसी ख़िदमात को अन्जाम दिया और मद्रसए मज़्कूर की तामीर में भी भरपूर कोशिश फ़रमाई, जिस के तुफ़ैल एक शानदार इ़मारत आज भी मौजूद व शाहिद है।

मगर जब वहां के भी बाज़ ह़ज़रात से तअ़ल्लुक़ात मामूल पर न रहे तो ख़ात़िर बरदाश्ता हो कर सिन 1964 ईसवी में मुस्ताफ़ी हो गए। इस के बाद फ़ौरन दारुल उ़लूम मिस्कीनिय्या धोराजी गुजरात से त़लबी आ गई और मौलाना ह़कीम अ़ली मुह़म्मद साहि़ब अशरफ़ी के और दूसरे लोगों के इसरार पर वहां मअ़ जमइ़यते त़लबा तशरीफ़ ले गए मगर वहां भी ज़्यादा दिनों क़ियाम न कर सके और बिल आख़िर दारुल उ़लूम मन्ज़रे ह़क़ टान्डा फ़ैज़ाबाद (यूपी) में ब ओ़हदा सदरुल मुदर्रिसीन व शैख़ुल ह़दीस तशरीफ़ ले गए जहां तक़रीबन दस साल से उ़लूमो मआ़रिफ़ के गौहर लुटा रहे हैं। ख़ुदा ने तफ़्हीम की ख़ूब ख़ूब सलाहि़य्यत बख़्शी है। तमाम मुतदावल किताबों पर यक्सां क़ुदरत रखते हैं और पूरी महारत से दर्स देते हैं और त़लबा ख़ूब मानूस होते हैं। तदरीस की इस त़वील मुद्दत में त़लबा की एक तादाद तय्यार हो गई और आज मुल्को बैरूने मुल्क आप के तलामिज़ा तदरीस व तक़रीर और मुनाज़रा व तस्नीफ़ की ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं।

इफ़्ता

तदरीस के साथ साथ फ़तवा नवेसी का काम भी करते रहे हैं। तेह़रीर कर्दा फ़तवों की नक़्लें कम मेह़फ़ूज़ हैं फिर भी छे सौ से ज़्यादा फ़तावा मन्क़ूल हैं जो कभी शाएअ़ किए जा सकते हैं।

वाज़

मौला तआ़ला ने वाज़ो नसीह़त की भी ख़ूब सलाहि़य्यत बख़्शी है। मुल्क के गोशे गोशे में आप के मवाइ़ज़े ह़सना की धूम मची हुई है और बहुत से मवाइ़ज़ तो मत़बूआ़ भी हैं जिन से अ़वाम हमेशा फ़ाएदा ह़ासिल करते रहेंगे।

ज़ौक़े सुख़न

ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी ही से शेरो शाइ़री का ज़ौक़ है। नात शरीफ़, क़ौमी नज़्में और ग़ज़ल में भी त़ब्अ़ आज़माई फ़रमाई है। कोई मज़मूअ़ए कलाम मत़बूआ़ नहीं है।

तस्नीफ़ो तालीफ़

तदरीस, इफ़्ता, वाज़ वग़ैरा के साथ आप ने तस्नीफ़ो तालीफ़ का भी बहुत अच्छा और ख़ूब ज़ौक़ पाया है। और इस की त़रफ़ ख़ासी तवज्जोह मब्ज़ूल फ़रमाई है। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर आप की मत़बूआ़ उर्दू तसानीफ़ मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

﴾1﴿ मौसिमे रेह़मत (सब से पेहली तस्नीफ़ जो मुतबर्रक रातों और मुबारक अय्याम के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल है)

﴾2﴿ मामूलातुल अबरार ब मआ़नियुल आसार (तसव्वुफ़ के बयान में)

﴾3﴿ औलियाए रिजालुल ह़दीस (औलियाए मुह़द्दिसीन की सवानेह़)

﴾4﴿ मशाइख़े नक़्शबन्दिय्या (नक़्शबन्दी बुज़ुर्गों का सिलसिला वार तज़किरा)
﴾5﴿ रूहानी हिकायात (दो हिस्से)
﴾6﴿ ईमानी तक़रीरें ﴾7﴿ नूरानी तक़रीरें
﴾8﴿ हक़्क़ानी तक़रीरें ﴾9﴿ इरफ़ानी तक़रीरें
﴾10﴿ कुरआनी तक़रीरें ﴾11﴿ सीरतुल मुस्तफ़ा
﴾12﴿ नवादिरुल हदीस (चालीस हदीसों की उम्दा और मुफ़ीद शर्ह)
﴾13﴿ करामाते सहाबा ﴾14﴿ जन्नती ज़ेवर
﴾15﴿ क़ियामत कब आएगी।

किताब "सीरतुल मुस्तफ़ा" सीरत के मौज़ूअ़ पर क़लमबन्द फ़रमाई गई है जो तक़रीबन आठ सौ सफ़हात पर मुश्तमिल है और ख़ूब है। इस के इलावा तमाम किताबें मुतअ़द्दद बार तब्अ़ हो कर एहले ज़ौक़ के लिए तस्कीन का सामान बन चुकी हैं और ख़ास बात येह है कि इस वक़्त भी आप की तमाम किताबें ब आसानी मिल जाती हैं। कोई भी किताब नायाब और मुश्किलुल हुसूल नहीं, ख़ुद ही अपने एहतिमाम से तब्अ़ कराते और शाएअ़ फ़रमाते हैं। किताबत व तबाअ़त का मेयार भी आ़म किताबों से बेहतर है जो कि मक़्बूलिय्यत की एक ख़ास वज्ह है। आप की तक़रीर व तस्नीफ़ में मुफ़ीद लताइफ़ की ख़ासी आमेज़िश होती है जो अ़वामी दिलचस्पी का बाइस है।

हज्जो ज़ियारत

सिने 1378 हिजरी मुताबिक़ सिन 1959 ईसवी में हज्जे काबा व ज़ियारते मदीनए तय्यिबा का अ़ज़्म किया और शाद काम हुवे और पूरी सेहूहत व तवानाई के साथ तमाम अरकान की अदाएगी से सरफ़राज़ हुवे।

जिद्दा में आप के बरादरे त़रीक़त अल्हाज अ़ब्दुल ह़मीद के मकान पर मेह़फ़िले वाज़ का इनइ़क़ाद हुवा जिस में आप ने निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ तक़रीर फ़रमाई । इस मेह़फ़िल में क़ाइदे एह्ले सुन्नत मौलाना अल्हाज शाह अह़मद नूरानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (ख़लफ़ुस्सिद्क़ ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुल अ़लीम मेरठी قُدِّسَ سِرُّہٗ) ने भी शिर्कत फ़रमाई थी ।

दोनों मक़ामाते मुतबर्रका में कसीर उ़लमा व मशाइख़ से मुलाक़ात फ़रमाई और बहुतों ने आप को अपने सलासिले त़रीक़त, दलाइलुल ख़ैरात, ह़िज़्बुल बह़्र और औरादो वज़ाइफ़ नीज़ ह़दीस की सनदें व इजाज़तें मर्ह़मत फ़रमाईं । ह़ज़रते शैख़ मुफ़्ती मुह़म्मद सादुल्लाहुल मक्की ने बा वुजूद ज़ोफ़े पीरी के आप को ख़ुद लिख कर सनदें अ़त़ा कीं और दीगर तबर्रुकात व आसार से भी नवाज़ा मौलाना अश्शैख़ अस्सय्यिद अ़लवी अ़ब्बास अल मक्की मुफ़्तियुल मालिकिय्या व मुदर्रिसुल ह़दीस बिल ह़रम शरीफ़ से भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया ।

ह़ज को जाते वक़्त मौलाना मौसूफ़ ने हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से शैख़े मज़्कूर के नाम एक तआ़रुफ़ी ख़त़ लिखवा लिया था जिस से तौजिहाते आ़लिया को मुन्अ़त़िफ़ कराने में मदद मिली । शैख़ की बारगाह में पहुंच कर जब आप ने ख़त़ पेश किया और शैख़ इस जुम्ले पर पहुंचे هذا تلميذ تلميذ الشيخ مولانا احمد رضا خان الهندی तो फ़रमाया : अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आप ही हैं ? आप ने अ़र्ज़ किया : हां मैं ही हूं ! फिर तो बड़ी ही गर्म जोशी से मुआ़नक़ा फ़रमाया और दुआ़एं दीं और कुछ देर तक सरकार मुर्शिदी हुज़ूर मुफ़्तिए आज़मे हिन्द دامت برکاتہم القدسیہ का ज़िक्र करते रहे और सरकारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का तज़किरा फ़रमाया फिर अपने घर बुलाया ।

जब आप उन के घर पहुंचे तो वोह आप के साथ बहुत ही तवज्जोह और मेहरबानी से पेश आए और अपनी तमाम तसानीफ़ की एक एक जिल्द इनायत फ़रमा कर सिह़ाह़ सित्ता की सनदे ह़दीस अ़त़ा फ़रमाई ।

मौलाना अश्शैख़ मुह़म्मद बिन अल अ़रबी अल जज़ाइरी के नाम भी सरकारे मुफ़्तिए आज़मे हिन्द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ख़त़ ले कर ह़ाज़िर हुवे तो आप की मसर्रत की इन्तिहा न रही, बड़े तपाक से मिले और सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ और मुअत्ता की सनदे ह़दीस अ़त़ा फ़रमाई और ह़ज़रते इमाम अह़मद रज़ा ख़ां फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तज़किरए जमील इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाया :

"हिन्दुस्तान का जब कोई आ़लिम हम से मिलता है तो हम उस से मौलाना शैख़ अह़मद रज़ा ख़ां हिन्दी के बारे में सुवाल करते हैं अगर उस ने तारीफ़ की तो हम समझ लेते हैं कि येह सुन्नी है और अगर उस ने मज़म्मत की तो हम को यक़ीन हो जाता है कि येह शख़्स गुमराह और बिदअ़ती है हमारे नज़दीक येही **कसोटी** है।"

मौलाना अश्शैख़ ज़ियाउद्दीन मुहाजिर मदनी ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत से भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया और आप की सोह़बत से फ़ैज़याब हुवे। आप ही ने दीगर ह़ज़रात से भी मुलाक़ात कराई जिन में शैख़ुद्दलाइल ह़ज़रते सय्यिद यूसुफ़ बिन मुह़म्मद अल मदनी भी हैं।

इन मुतअ़द्दद शुयूख़ की असनाद की नक़्लें ह़ज़रते अ़ल्लामा आज़मी साह़िब ने अपनी किताब "मामूलातुल अबरार" में नक़्ल फ़रमाई हैं जो कई सफ़ह़ात पर फैली हुई हैं।[1]

मुह़म्मद अ़ब्दुल मुबीन नोमानी मिस्बाही

1.....मज़कूरा बाला मज़मून मैं ने "मामूलातुल अबरार" के ह़िस्सए सवानेह़ और ज़ाती मालूमात की बुन्याद पर क़लमबन्द किया है। 12

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نحمده ونصلی علی رسوله الکریم

तम्हीदी तजल्लियां

﴾1﴿ "**जन्नती ज़ेवर**" की तस्नीफ़ के बाद ख़ुद ब ख़ुद दिल में येह ख़याल पैदा हुवा कि जन्नत की नेमतों और जन्नत में ले जाने वाले आमाल के बारे में भी कोई किताब लिख दूं ताकि मुसलमान भाई जन्नती आमाल की त़रफ़ राग़िब हो कर अपने जन्नत में जाने का सामान करें मगर ख़ुदा की शान कि इस दरमियान में कई बार मुझ पर मुख़्तलिफ़ बीमारियों का ह़म्ला होता रहा और मैं कुछ भी न लिख सका लेकिन بحمده تعالیٰ इम्साल रमज़ान सिन 1400 हिजरी में सेह़्ह़त क़दरे अच्छी रही और मैं ने येह तै कर लिया कि इस रमज़ान शरीफ़ में छोटा या बड़ा कहीं का भी कोई सफ़र नहीं करूंगा चुनान्चे, माहे रमज़ान में मकान पर क़ियाम के दौरान ब ह़ालते रोज़ा इन औराक़ को तेह़रीर करने की तौफ़ीक़ हुई। فالحمد للّٰه علی ذلك

﴾2﴿ यूं तो हर नेक अ़मल जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है मगर बाज़ ऐसे नेक आमाल भी हैं जिन पर ख़ुसूसिय्यत के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से जन्नत का वादा और बिहिश्त की ख़ुश ख़बरी दी गई है चुनान्चे, इसी क़िस्म के आमाले ह़सना में से चुन चुन कर साठ अ़मलों को ह़दीसों से मुन्तख़ब कर के जम्अ़ कर दिया है और उन साठ आमाल को उ़नवान बना कर हर उ़नवान के तह़त उन आमाल के फ़ज़ाइल में चन्द अह़ादीस नक़्ल कर दी हैं फिर हर उ़नवान के आख़िर में "तशरीह़ात व फ़वाइद" लिख कर ह़दीसों की वज़ाह़त करते हुवे ज़रूरी मसाइल की भी तौज़ीह़ कर दी है। इन मुन्तशिर औराक़ के मजमूए़ को "**बिहिश्त की कुन्जियां**" "**आमाले जन्नत**" के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूं।

www.dawateislami.net

﴾3﴿ पेहले येह ख़याल हुवा कि चूंकि येह किताब आ़म मुसलमानों के लिए लिखी गई है। इस लिए हर उ़नवान के तह़त में चन्द ह़दीसों के उर्दू तर्जमों को नक़्ल कर दूं मगर फिर नागहां येह ख़याल पैदा हो गया कि ह़दीसों के अस्ल अ़रबी अल्फ़ाज़ किताबों के ह़वालों के साथ नक़्ल कर के फिर इन का मत़लब खे़ज़ तर्जमा कर दिया जाए तो ज़्यादा बेहतर होगा। क्यूंकि ह़दीस पढ़ने वाले त़लबा को कुछ ह़दीसों के तर्जमों में आसानी भी हो जाएगी और हमारे अ़वाम भाई, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकले हुवे मुक़द्दस अल्फ़ाज़े ह़दीस की तिलावत का शरफ़ और अज्रो सवाब ह़ासिल कर लें, इस लिए बाज़ उ़नवानों में ह़दीस के अस्ल अल्फ़ाज़ मअ़ सफ़ह़ाते कुतुब नक़्ल कर के इन का बा मुह़ावरा और मत़लब खे़ज़ तर्जमा तेह़रीर कर दिया है और बाज़ उ़नवानों में ब ग़रज़े इख़्तिसार सिर्फ़ ह़दीसों का तर्जमा लिख दिया है मगर किताबों के सफ़ह़ात का ह़वाला और "तशरीह़ात व फ़वाइद" हर उ़नवान के तह़त लिखा गया है ताकि ह़दीसों को किताबों में तलाश कर लेना आसान हो और ह़दीसों के समझने में कोई दुश्वारी न लाह़िक़ हो। ज़बान क़स्दन बहुत आ़म फ़ेह़्म और आसान तेह़रीर की है ताकि मज़ामीन के समझने में औ़रतों और बच्चों को भी कोई दिक़्क़त न पेश आए।

दुआ़ है कि अरह़मुर्राह़िमीन अपने फ़ज़्लो करम से इस मजमूए़ को दोनों जहान में शरफ़े क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ फ़रमाए और मुझ फ़क़ीर और मेरे वालिदैन व असातेज़ा, नीज़ मेरे सब अह़बाब व मुरीदीन व तलामिज़ा के लिए सामाने आख़िरत व ज़रीअ़ए मग़फ़िरत बनाए और इस किताब के ज़रीए़ तमाम मुसलमान मर्दों और औ़रतों को आमाले जन्नत की रग़बत और अ़मल करने की तौफ़ीक़ ह़ासिल हो।

آمین بحرمة النبی الامین علیه وعلی آله وصحبه افضل الصلوة

والتسلیم والحمد لله رب العالمین

28 रमज़ानुल मुबारक सिन 1400 हिजरी (आज़मी मन्ज़िल, घोसी)

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

जन्नत क्या है ?

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को उन के अच्छे अच्छे आमाल का अपने फ़ज़्लो करम से बदला और इन्आ़म देने के लिए आख़िरत में जो शानदार मक़ाम तय्यार कर रखा है उस का नाम जन्नत है और उसी को बिहिश्त भी केहते हैं।

जन्नत में हर क़िस्म की राह़त व शादमानी व फ़रह़त का सामान मौजूद है। सोने चांदी और मोती व जवाहिरात के लम्बे चौड़े और ऊंचे ऊंचे मह़ल बने हुवे हैं और जगह जगह रेशमी कपड़ों के ख़ूब सूरत व नफ़ीस ख़ैमे लगे हुवे हैं। हर त़रफ़ त़रह़ त़रह़ के लज़ीज़ और दिल पसन्द मेवों के घने, शादाब और सायादार दरख़्तों के बाग़ात हैं। और इन बाग़ों में शीरीं पानी, नफ़ीस दूध, उ़म्दा शहद और शराबे त़हूर की नह्रें जारी हैं। क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन खाने और त़रह़ त़रह़ के फल फ़्रूट साफ़ सुथरे और चमकदार बरतनों में तय्यार रखे हैं। आला दरजे के रेशमी लिबास और सितारों से बढ़ कर चमकते और जगमगाते हुवे सोने चांदी और मोती व जवाहिरात के ज़ेवरात, ऊंचे ऊंचे जडाव तख़्त, उन पर ग़ालीचे और चांदनियां बिछी हुई और मस्नदें लगी हुई हैं। ऐशो निशात़ के लिए दुन्या की औ़रतें और जन्नत की हूरें हैं जो बे इन्तिहा ह़सीन व ख़ूब सूरत हैं। ख़िदमत के लिए ख़ूब सूरत लड़के चारों त़रफ़ दस्त बस्ता हर वक़्त ह़ाज़िर हैं अल ग़रज़ जन्नत में हर क़िस्म की बे शुमार राह़तें और नेमतें तय्यार हैं। और जन्नत की हर नेमत इतनी बे नज़ीर और इस क़दर बे मिसाल है कि न कभी किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी के

दिल में इस का ख़याल गुज़रा। जन्नती लोग बिला रोक टोक उन तमाम नेमतों और लज़्ज़तों से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे और उन तमाम नेमतों से बढ़ कर जन्नत में सब से बड़ी येह नेमत मिलेगी कि जन्नत में जन्नतियों को ख़ुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ का दीदार नसीब होगा। जन्नत में न नींद आएगी न कोई मरज़ होगा न बुढ़ापा आएगा न मौत होगी। जन्नती हमेशा हमेशा जन्नत में रहेंगे और हमेशा तनदुरुस्त और जवान ही रहेंगे।

एह्ले जन्नत ख़ूब खाएं पिएंगे मगर न उन को पेशाब पाख़ाने की ह़ाजत होगी न वोह थूकेंगे न उन की नाक बहेगी। बस एक डकार आएगी और मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार पसीना बहेगा और खाना पीना हज़्म हो जाएगा। जन्नती हर क़िस्म की फ़िक्रों से आज़ाद और रन्जो ग़म की ज़ह़मतों से मेह़फ़ूज़ रहेंगे। हमेशा हर दम और हर क़दम पर शादमानी और मसर्रत की फ़ज़ाओं में शादो आबाद रहेंगे और क़िस्म क़िस्म की नेमतों और त़रह़ त़रह़ की लज़्ज़तों से लुत्फ़ अन्दोज़ व मह़ज़ूज़ होते रहेंगे। (ख़ुलासए कुरआनो ह़दीस)

जन्नत कहां है?

ज़्यादा सह़ीह़ क़ौल येह है कि जन्नत सातवें आस्मान के ऊपर है क्यूंकि कुरआने मजीद में है कि

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝[1] यानी सिद्रतुल मुन्तहा के पास ही जन्नतुल मावा है।

और एक ह़दीस में येह आया है कि जन्नत की छत अ़र्श पर है।[2]

(ह़ाशिया शर्हे अ़क़ाइदे नसफ़िया, स. 80)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सिद्रतुल मुन्तहा के पास, उस के पास जन्नतुल मावा है।

(پ۲۷،النجم:۱۴،۱۵)

2 .....شرح المقاصد،المبحث الخامس،الجنة والنار...الخ،ج۳،ص۳۶۱

www.dawateislami.net

जन्नतें कितनी हैं ?

जन्नतों की तादाद आठ है जिन के नाम येह हैं।

﴾1﴿ दारुल जलाल ﴾2﴿ दारुल क़रार ﴾3﴿ दारुस्सलाम

﴾4﴿ जन्नते अ़दन ﴾5﴿ जन्नतुल मावा ﴾6﴿ जन्नतुल ख़ुल्द

﴾7﴿ जन्नतुल फ़िरदौस ﴾8﴿ जन्नतुन्नईम[1]

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 1 स. 82)

जन्नत की मन्ज़िलें

ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नत के सौ दरजे हैं और हर दो दरजों के दरमियान एक सौ बरस की राह है।[2]

(मिश्कात, जि. 2 स. 497)

और एक ह़दीस में येह भी आया है कि जन्नती लोग जन्नत के बालाख़ानों को इस त़रह़ देखेंगे जिस त़रह़ तुम लोग ज़मीन से मशरिक़ या मग़रिब में चमकने वाले तारों को देखा करते हो।[3]

(मिश्कात, जि. 2 स. 496)

जन्नत के फाटक

ह़दीस शरीफ़ में है कि जन्नत के फाटक इतने बड़े बड़े हैं कि इस के दोनों बाज़ूओं के दरमियान चालीस बरस का रास्ता है मगर

---

1 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة:۲۵،ج۱،ص۸۲

2 .....مشکاة المصابیح،کتاب احوال القیامة...الخ،باب صفة الجنة واهلها،الحدیث:۵۶۳۲، ج۲،ص۳۳۲

3 .....مشکاة المصابیح،کتاب احوال القیامة...الخ،باب صفةالجنة واهلها،الحدیث:۵۶۲۴، ج۲،ص۳۳۱

जब जन्नती जन्नत में दाख़िल होने लगेंगे तो इन फाटकों पर हुजूम की कसरत से तंगी मेह़सूस होने लगेगी ।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 497)

जन्नत के बाग़ात

जन्नत के बाग़ों के बारे में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि मोमिन जब जन्नत में दाख़िल होगा तो वोह सत्तर हज़ार ऐसे बाग़ात देखेगा कि हर बाग़ में सत्तर हज़ार दरख़्त होंगे और हर दरख़्त पर सत्तर हज़ार पत्ते होंगे और हर पत्ते पर येह लिखा होगा : لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اُمَّةٌ مُّذْنِبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ और हर पत्ते की चौड़ाई मशरिक़ से मग़रिब तक के बराबर होगी ।[2] (रूहुल बयान, जि. 1 स. 82)

और एक रिवायत में है कि जन्नत के तमाम दरख़्तों के तने सोने के हैं ।[3] (मिश्कात, जि. 2 स. 497)

जन्नत की इमारतें

जन्नत की इमारतों में एक ईंट सोने की और एक ईंट चांदी की है और इस का गारा निहायत ही ख़ुश्बूदार मुश्क है और इस की कंकरियां मोती और याक़ूत हैं और इस की धूल ज़ाफ़रान है ।[4]

(मिश्कात, जि. 2 स. 497)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ...الخ،باب صفۃالجنۃ واھلھا، الحدیث:٥٦٢٩، ج٢،ص٣٣٢

2 ..... تفسیرروح البیان،البقرۃ،تحت الآیۃ:٢٥،ج١،ص٨٢

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب احوال القیامۃ...الخ،باب صفۃ الجنۃ واھلھا، الحدیث:٥٦٣١، ج٢،ص٣٣٢

4 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ...الخ،باب صفۃالجنۃ واھلھا، الحدیث:٥٦٣٠، ج٢،ص٣٣٢

और येह भी मरवी है कि बाज़ इमारतें नूर की और बाज़ याक़ूत सुर्ख़ की और बाज़ ज़ुमुर्रुद की हैं।[1](रूहुल बयान, जि. 1 स. 82)

जन्नत की नहरें और हौज़े कौसर

जन्नत में शीरीं पानी, शहद, दूध और शराब की नहरें बेहती हैं।[2](मिश्कात, जि. 2 स. 500)

जब जन्नती पानी की नहर में से पिएंगे तो उन्हें ऐसी हयात मिलेगी कि फिर उन्हें मौत न आएगी और जब दूध की नहर में से नोश करेंगे तो उन के बदन में ऐसी फ़रबही पैदा होगी कि फिर कभी लाग़र न होंगे और जब शहद की नहर में से पी लेंगे तो उन्हें ऐसी सेहूहत व तनदुरुस्ती मिल जाएगी कि फिर कभी वोह बीमार न होंगे और जब शराब की नहर में से पिलाए जाएंगे तो उन्हें ऐसा निशात और खुशी का सुरूर हासिल होगा कि फिर कभी वोह ग़मगीन न होंगे।[3](रूहुल बयान, जि. 1 स. 82)

येह चारों नहरें एक हौज़ में गिर रही हैं जिस का नाम "हौज़े कौसर" है येही हौज़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह हौज़े कौसर है जो अभी जन्नत के अन्दर है लेकिन क़ियामत के दिन मैदाने मेहशर में लाया जाएगा, जहां हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस हौज़ से अपनी उम्मत को सेराब फ़रमाएंगे।[4](रूहुल बयान, जि. 1 स. 83)

---

1 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة:۲۵،ج۱،ص۸۲

2 .....مشکاۃ المصابیح،کتاب احوال القیامۃ...الخ، باب صفۃالجنۃ واھلھا، الحدیث:۵۶۵۰، ج۲،ص۳۳۶

3 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة:۲۵،ج۱،ص۸۲

4 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة:۲۵،ج۱،ص۸۳

जन्नत के चश्मे

इन चारों नहरों के इलावा जन्नत में दूसरे चश्मे भी हैं जिन के नाम येह हैं : ﴾1﴿ काफ़ूर ﴾2﴿ ज़न्जबील ﴾3﴿ सलसबील ﴾4﴿ रहीक़ ﴾5﴿ तस्नीम ।[1](रूहुल बयान, जि. 1 स. 83)

एह्ले जन्नत की उम्रें

हर जन्नती ख़्वाह बचपन में मरा हो या बूढ़ा हो कर वफ़ात पाई हो, हमेशा जन्नत में उस की उम्र तीस ही बरस की रहेगी इस से ज़्यादा कभी उस की उम्र नहीं बढ़ेगी । और वोह हमेशा हमेशा इसी त़रह़ जवान रेहते हुवे आराम व राह़त की ज़िन्दगी बसर करता रहेगा ।[2]

(तिरमिज़ी, जि. 2 स. 80)

जन्नतियों की बीवियां और ख़ुद्दाम

अदना दर्जे के जन्नती को अस्सी 80 हज़ार ख़ादिम और बहत्तर 72 बीवियां मिलेंगी और उस के लिए मोती और ज़बर जद व याक़ूत का इतना लम्बा चौड़ा ख़ैमा गाड़ा जाएगा जितना कि जाबिया और सन्आ़ के दो शह्रों के दरमियान फ़ासिला है ।[3](तिरमिज़ी, जि. 2 स. 80)

हूरों का जल्सा और गाना

जन्नत में हूरों का जल्सा होगा जिस में हूरें इस मज़मून का गाना सुनाएंगी कि "हम हमेशा रेहने वालियां हैं तो हम कभी फ़ना न होंगी । हम चैन में रेहने वालियां हैं तो हम कभी ग़मगीन नहीं होंगी । हम ख़ुश होने

---

1 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة:۲۵،ج۱،ص۸۳

2 .....سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء ما لادنٰی ...الخ،الحدیث:۲۵۷۱،ج٤،ص۲۵۳

3 .....سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء ما لادنٰی...الخ،الحدیث:۲۵۷۱،ج٤،ص۲۵۳

वालियां हैं तो हम कभी नाराज़ न हुवा करेंगी। मुबारक बाद है उन के लिए जो हमारे लिए हों और हम उन के लिए हों।"[1] (तिरमिज़ी, जि. 2 स. 80)

जन्नत के बाज़ार

हर जुम्आ के दिन जन्नत में एक बाज़ार लगेगा कि उस में शुमाली हवा चलेगी जो जन्नतियों के चेहरों और कपड़ों पर लगेगी तो उन के हुस्नो जमाल में निखार पैदा हो कर वोह बहुत ज़्यादा ख़ूब सूरत हो जाएंगे और जब वोह बाज़ार से पलट कर अपने घर जाएंगे तो उन के घरवाले कहेंगे कि तुम तो ख़ुदा की क़सम ! हुस्नो जमाल में बहुत बढ़ गए हो। तो येह लोग कहेंगे कि हमारे पीछे तुम लोगों का हुस्नो जमाल भी बहुत बढ़ गया है।[2] (मिश्कात, जि. 2 स. 496)

जन्नत में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का दीदार

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का एक मुनादी येह एलान करेगा कि ऐ एह्ले जन्नत ! अभी तुम्हारे लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक और वादा भी है। तो एह्ले जन्नत कहेंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे चेहरों को रौशन नहीं कर दिया है ! क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम को जहन्नम से नजात दे कर जन्नत में नहीं दाख़िल कर दिया है ? तो मुनादी जवाब देगा कि क्यूं नहीं ! फिर एक दम ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ अपने हिजाबे अक़्दस को दूर फ़रमा देगा (और जन्नती लोग ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का दीदार कर लेंगे) तो जन्नतियों को इस से ज़्यादा जन्नत की

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی کلام الحور العین، الحدیث ۲۵۷۳، ج٤، ص٢٥٤

2 .....صحیح مسلم، کتاب صفة الجنة...الخ، باب فی سوق الجنة...الخ، الحدیث: ۲۸۳۳، ص١٥١٩

कोई नेमत प्यारी न होगी ।[1] (तिरमिज़ी, जि. 2 स. 78)

इसी त़रह़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है । ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ केहते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बैठे हुवे थे तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदहवीं रात को चांद की त़रफ़ देख कर इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग अ़न क़रीब (क़ियामत के दिन) अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखोगे जिस त़रह़ तुम लोग चांद को देख रहे हो । (यानी जिस त़रह़ चांद को देखने में कोई किसी के लिए ह़िजाब और आड़ नहीं बनता इसी त़रह़ तुम लोग अपने रब عَزَّوَجَلَّ को देखोगे) तो अगर तुम लोगों से हो सके तो नमाज़े फ़ज्र व नमाज़े अ़स्र कभी न छोड़ो ।[2] (मिश्कात, जि. 2 स. 500)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि ऐ एह्ले जन्नत ! क्या तुम चाहते हो कि कुछ और ज़्यादा नेमतें मैं तुम लोगों को अ़त़ा करूं ? तो एह्ले जन्नत कहेंगे कि ख़ुदावन्दा عَزَّوَجَلَّ ! क्या तू ने हमारा मुंह उजाला नहीं कर दिया ? क्या तू ने हमें जन्नत में नहीं दाख़िल कर दिया ? और जहन्नम से नजात दे दिया । इतने में ह़िजाब उठ जाएगा और लोग दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ कर लेंगे तो इस से ज़्यादा बढ़ कर उन्हें जन्नत की कोई नेमत मेह़बूब न होगी । उस वक़्त हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई कि [3] لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰی وَزِیَادَةٌ (मिश्कात शरीफ़, जि. 2 स. 500)

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی رؤیة الرب تبارك وتعالٰی، الحدیث: ٢٥٦١، ج٤، ص٢٤٨

2 .....صحیح مسلم، کتاب المساجد...الخ، باب فضل صلا تی...الخ، الحدیث ٦٣٣، ص٣١٧

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** भलाई वालों के लिए भलाई है और उस से भी ज़ाइद । (پ١١، یونس:٢٦)

www.dawateislami.net

जन्नत में ले जाने वाले आमाल

﴾1﴿ कलिमए इस्लाम

ह़दीस : 1

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जो शख़्स इस बात की गवाही दे कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई माबूद नहीं और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उस के ऊपर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देगा।[1] (मुस्लिम) (मिश्कात, जि. 1 स. 15)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का यक़ीन रखते हुवे मरा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[2]

(मुस्लिम, जि. 1 स. 41)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، الفصل الثالث، الحدیث:٣٦، ج١، ص٢٨

2 .....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من مات...الخ، الحدیث:٢٦، ص٣٤

ह़दीस : 3

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

(मिश्कात, जि. 1 स. 141)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जन्नत की कुन्जियां لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की गवाही है।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 15)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत की है कि आप ने इरशाद फ़रमाया है कि जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा और उस के दिल में जव के बराबर भी नेकी होगी तो वोह जहन्नम से निकाल लिया जाएगा और जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा और उस के दिल में गेहूं के बराबर भी नेकी होगी तो वोह जहन्नम से निकाल लिया जाएगा और जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा और उस के दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी नेकी होगी तो वोह भी जहन्नम से निकाल लिया जाएगा।[3]

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1 स. 11)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उन से किसी ने कहा कि क्या لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ जन्नत की कुन्जी नहीं है ? तो आप ने

---

1 .....سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب فی التلقین، الحدیث:٣١١٦، ج٣، ص٢٥٥

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الایمان، الفصل الثالث، الحدیث:٤٠، ج١، ص٢٩

3 .....صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادۃ الایمان و نقصانہ، الحدیث٤٤، ج١، ص٢٨

फ़रमाया : क्यूं नहीं लेकिन कोई कुन्जी ऐसी नहीं होती जिस में दन्दाने न होते हों लेहाज़ा अगर तुम ऐसी कुन्जी लाओगे जिस में दन्दाने हों जब तो ताला खुलेगा वरना नहीं खुलेगा।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 16)

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ कलिमए इस्लाम यानी कलिमए तय्यिबा व कलिमए शहादत के फ़ज़ाइल में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं जिन में से छे हदीसें ऊपर ज़िक्र की गई हैं। येह इस्लाम का वोह बुन्यादी कलिमा है जिस पर इस्लाम की पूरी इमारत क़ाइम है। येह कलिमा बिलाशुबा जन्नत में ले जाने वाला अमल बल्कि जन्नत में ले जाने वाले तमाम आमाले सालेहा की अस्ल व बुन्याद है।

﴾2﴿ मज़्कूरा बाला हदीसों में जहां जहां सिर्फ़ "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" ज़िक्र किया गया है उस से मुराद पूरा कलिमा यानी "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" है मगर इख़्तिसार के तौर पर सिर्फ़ "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" का ज़िक्र कर दिया गया है जैसे कि आम तौर पर येह बोला करते हैं कि नमाज़ में "الحمد" पढ़ना वाजिब है तो इस का येह मतलब नहीं होता कि बस फ़क़त "الحمد" का एक लफ़्ज़ पढ़ना वाजिब है बल्कि "الحمد" से पूरी सूरत का पढ़ना मुराद लिया जाता है इसी तरह हदीसों में जहां जहां सिर्फ़ "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" का ज़िक्र है उस से मुराद पूरा कलिमा है क्यूंकि ज़ाहिर है कि सिर्फ़ "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" पढ़ने वाला न मुसलमान ही हो सकता है न जन्नत में जा सकता है। मुसलमान और जन्नती तो वोही होगा जो पूरे कलिमे "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" को दिल से सच्चा मान कर ज़बान से पढ़े। चुनान्चे, इस उनवान की पेहली हदीस में पूरे कलिमे "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" का ज़िक्र मौजूद है वोही इन सब हदीसों में भी मुराद है।

---

1 .....مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، الفصل الثالث، الحديث:٤٣، ج١، ص٢٩

www.dawateislami.net

﴾3﴿ अगर कोई शख़्स ज़बान से कलिमा पढ़ ले मगर दिल में इस कलिमे के माना और मज़मून पर एतिक़ाद व यक़ीन न रखे तो वोह भी हरगिज़ हरगिज़ मुसलमान और जन्नती नहीं हो सकता क्यूंकि ह़दीस नम्बर 2 में "وھو یعلم" का लफ़्ज़ आया है। जिस का वाज़ेह़ तौर पर येही मत़लब है कि इस कलिमे पर क़ल्बी एतिक़ाद और दिल से यक़ीन रखते हुवे जो इस कलिमे को पढ़ेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

﴾4﴿ ऊपर ज़िक्र की हुई ह़दीसों से साबित होता है कि कलिमए इस्लाम को दिल से सच्चा मान कर पढ़ने वाला यक़ीनन ज़रूर जन्नत में जाएगा, अब इस की चन्द सूरतें हैं :

(1) ना बालिग़ मगर होशमन्द लड़के ने कलिमा पढ़ लिया और बालिग़ होने से पेहले ही मर गया या बालिग़ ने येह कलिमा पढ़ा और फ़ौरन ही पागल हो गया और इसी ह़ालत में मर गया या कलिमा पढ़ते ही फ़ौरन इस का इन्तिक़ाल हो गया और न कोई नेक काम कर सका न कोई गुनाह कर सका तो येह सब फ़क़त़ एक कलिमए इस्लाम पर ईमान लाने के सबब से हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल होंगे।

(2) येह कि किसी ने कलिमए इस्लाम पढ़ कर उ़म्र भर नेकी ही के आमाल किए और कोई गुनाह का काम इस ने किया ही नहीं। तो येह शख़्स भी हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में जाएगा।

(3) येह कि किसी शख़्स ने कलिमा पढ़ कर कुछ नेक आमाल भी किए और कुछ गुनाह के काम भी कर डाले मगर मरते दम तक इस कलिमे पर क़ाइम रहा। तो अगर इस शख़्स को तौबा नसीब हो गई तो येह भी हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में जाएगा और अगर येह शख़्स तौबा न कर सका तो फिर इस का मुआ़मला ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी पर है, अगर ख़ुदावन्दे तआ़ला चाहेगा तो अपने फ़ज़्लो करम से इस के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा और इस को हमेशा हमेशा के लिए जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। और अगर चाहेगा तो इस के गुनाहों के लिए इस को जहन्नम में अ़ज़ाब दे कर फिर इस को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर देगा।

बहर ह़ाल कलिमए इस्लाम पर ईमान रखने वाला हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम में नहीं रेह सकता बल्कि वोह कभी न कभी ज़रूर जन्नत में जाएगा इस लिए कि कलिमए इस्लाम जन्नत की कुन्जियों में सब से आला दरजे की कुन्जी बल्कि जन्नत की तमाम कुन्जियों का दारो मदार है और जन्नत में पहुंचाने वाली सड़कों में येह सब से बड़ी सड़क बल्कि शाहराह है।

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 6 में आमाले सालेह़ा की अहम्मिय्यत ज़ाहिर की गई है कि لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ तो जन्नत की कुन्जी है और आमाले सालेह़ा इस कुन्जी के दन्दाने हैं मत़लब येह है कि इस कलिमे का पढ़ने वाला अगर नेक आमाल भी करता है जब तो वोह इब्तिदा ही से जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और हमेशा हमेशा जन्नत ही में रहेगा और अगर कोई आ़क़िलो बालिग़ कलिमा पढ़ लेने के बाद फ़िस्क़ो फ़ुजूर और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का मुर्तकिब रहा (और पकड़ हो गई) तो वोह इब्तिदा ही से जन्नत में नहीं दाख़िल होगा बल्कि अपने गुनाहों के बराबर जहन्नम में अ़ज़ाब पा कर जन्नत में जाएगा इस लिए जो शख़्स अ़ज़ाबे जहन्नम से बिल्कुल बच कर शुरूअ़ ही से जन्नत में जाने का त़लबगार है तो उस को नेक आमाल के करने की बेह़द ज़रूरत है क्यूंकि दोज़ख़ से बिल्कुल ही बच कर इब्तिदा ही से जन्नत में चला जाना येही मोमिन की ह़क़ीक़ी कामयाबी और फ़लाह़ है।

क़ुरआने मजीद का इरशाद है कि

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ (1)

यानी जो जहन्नम से अलग रखा गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वोह यक़ीनन कामयाब हो गया।

याद रखो कि ह़क़ीक़ी कामयाबी और फ़लाह़ बग़ैर आमाले सालेह़ा के ह़ासिल नहीं होती लेहाज़ा जन्नत में ले जाने वाले आमाल पर जज़्बए ईमानी और जोशे इस्लामी के साथ कारबन्द हो कर ह़क़ीक़ी फ़लाह़ के मुस्तह़िक़ बनो। मौला तआ़ला हर मुसलमान मर्द व औ़रत को आमाले सालेह़ा की तौफ़ीक़ बख़्शे। (आमीन)

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा। (پ٤، آل عمران:١٨٥)

www.dawateislami.net

कलिमए इस्लाम का सवाब

इस मुक़द्दस कलिमे की बड़ी अ़ज़मत है और इस को ब कसरत और बार बार पढ़ने का बहुत बड़ा अज्रो सवाब है। चुनान्चे, एक ह़दीस में आया है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला तमाम मख़्लूक़ के सामने खड़ा कर के उस के नामए आमाल के निनानवे दफ़्तर खोलेगा और हर दफ़्तर उस की ह़द्दे निगाह के बराबर लम्बा चौड़ा होगा। फिर बारी तआ़ला फ़रमाएगा : क्या तुझ को इन आमाल से इन्कार है ? क्या नामए आमाल लिखने वाले फ़रिश्तों ने तुझ पर कुछ ज़ुल्म किया है ? तो वोह कहेगा कि नहीं ऐ मेरे परवरदगार عَزَّوَجَلَّ फिर बारी तआ़ला फ़रमाएगा कि क्या तुझ को कुछ उ़ज़्र पेश करना है ? तो वोह कहेगा कि नहीं ऐ मेरे परवरदगार عَزَّوَجَلَّ तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि क्यूं नहीं ! तेरी एक नेकी हमारे पास मौजूद है और तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा। फिर एक पर्चा निकाला जाएगा जिस में اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ लिखा होगा इस के बाद **अल्लाह** तआ़ला हुक्म देगा ऐ शख़्स ! तू अपने नामए आमाल तोलने की जगह ह़ाज़िर हो जा तो वोह शख़्स अ़र्ज़ करेगा कि ऐ मेरे परवरदगार عَزَّوَجَلَّ भला इन दफ़्तरों के सामने इस छोटे से पर्चे की क्या ह़क़ीक़त है ? तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तू मीज़ाने अ़मल के पास जा कर वज़्न करा ले और याद रख ले तेरे ऊपर कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि उस वक़्त उन तमाम नामए आमाल के दफ़्तरों को मीज़ाने अ़मल के एक पलड़े में रखा जाएगा और वोह पर्चा दूसरे पलड़े में रखा जाएगा और जब वज़्न किया जाएगा तो तमाम दफ़्तरों के अम्बार हल्के पड़ जाएंगे और वोह पर्चा भारी होगा और ज़ाहिर है कि भला ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नाम के मुक़ाबले में कौन सी चीज़ भारी हो सकती है ?[1] (तिरमिज़ी शरीफ़, जि. 2 स. 88)

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فیمن...الخ، الحدیث:٢٦٤٨، ج٤، ص٢٩٠

﴾2﴿ अच्छी निय्यत

ह़दीस :

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तमाम आमाल के सवाब का दारो मदार निय्यत पर है हर आदमी को वोही ह़ासिल होगा जो उस की निय्यत होगी तो जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए हिजरत की तो उस की हिजरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए होगी और जिस ने दुन्या ह़ासिल करने की ग़रज़ से हिजरत की या किसी औ़रत के लिए हिजरत की, कि उस से निकाह़ करे तो उस की हिजरत उसी काम के लिए होगी जिस ग़रज़ के लिए उस ने हिजरत की।[1] (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1 स. 2)

तशरीह़ात व फ़वाइद

अ़मल की दो क़िस्में हैं : **अच्छा अ़मल** और **बुरा अ़मल**।

बुरे अ़मल को ख़्वाह कितनी ही अच्छी निय्यत से करें उस पर सवाब मिलने का कोई सुवाल ही नहीं पैदा होता क्यूंकि बुरा अ़मल तो बहर ह़ाल बुरा ही है, लेहाज़ा बुरे अ़मल को ख़्वाह कितनी ही अच्छी निय्यत से करें या बुरी निय्यत से हर ह़ाल में उस पर अ़ज़ाब ही मिलेगा। हां अलबत्ता अच्छे अ़मल की दो सूरतें हैं। अगर अच्छे अ़मल को अच्छी निय्यत से करें तो सवाब ही सवाब है और अगर अच्छे अ़मल को बुरी निय्यत से करें तो बजाए सवाब के अ़ज़ाब ही अ़ज़ाब मिलेगा। मसलन नमाज़ एक बेहतरीन और अच्छे से अच्छा अ़मल है अब अगर कोई इस निय्यत से नमाज़ पढ़े कि ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाए तो उस को बे इन्तिहा सवाब मिलेगा और अगर कोई बद नसीब इस निय्यत से पढ़ेगा कि लोग मुझे नमाज़ी कहें और मेरी इ़ज़्ज़त करें तो हरगिज़

1 .....صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء ...الخ، الحدیث ۱، ج ۱، ص ۵

हरगिज़ उस को कोई सवाब नहीं मिलेगा । बल्कि वोह अ़ज़ाब का ह़क़दार होगा क्यूंकि उस ने रियाकारी की निय्यत से नमाज़ पढ़ी है जो शिर्क की एक शाख़ है और बुरी निय्यत है ।

बहर ह़ाल ख़ुलासा येह है कि अच्छा अ़मल अगर अच्छी निय्यत से किया जाए तो येह अ़मल कारे सवाब और जन्नत में ले जाने वाला अ़मल होगा और अच्छा अ़मल अगर बुरी निय्यत से किया जाए तो उस पर हरगिज़ हरगिज़ कोई सवाब नहीं मिलेगा और वोह जन्नत में ले जाने वाला अ़मल न होगा । येही ह़दीसे मज़्कूर का ख़ुलासए मत़लब है और इस मज़्मून की मज़ीद वज़ाह़त के लिए मुन्दरिजए ज़ैल ह़दीसों को पढ़िए और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिए ।

एक शहीद, एक आ़लिम, एक सख़ी का अन्जाम

ह़दीस : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ केहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सब से पेहले एक शहीद, एक आ़लिम, एक सख़ी का फ़ैसला होगा । सब से पेहले एक शहीद को ख़ुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ के दरबार में लाया जाएगा तो ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ उस से अपनी नेमतों का इक़रार कराएगा फिर फ़रमाएगा कि तू ने मेरी इन नेमतों के शुक्रिय्ये में कौन सा अ़मल किया है ? तो वोह कहेगा कि मैं ने तेरी राह में जेहाद किया यहां तक कि मैं शहीद हो गया । तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तू झूट बोल रहा है कि तू ने मेरी राह में मेरी रिज़ा के लिए जेहाद किया था तू ने तो इस निय्यत से जेहाद किया था ताकि दुन्या वाले लोग तुझ को "बहादुर" कहें, तो दुन्या में लोगों ने तुझ को बहादुर केह दिया तू ने जिस निय्यत से जेहाद किया था दुन्या में तुझ को उस का सिला मिल गया कि सब लोगों से मैं ने तुझ को बहादुर केहलवा दिया अब आख़िरत में मेरे दरबार से तुझ को कोई अज्र नहीं मिलेगा फिर वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा ।

दूसरा शख़्स एक आ़लिम होगा जिस ने इ़ल्म पढ़ा और पढ़ाया होगा और कुरआने मजीद की क़िराअत भी करता रहा होगा। येह जब दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में लाया जाएगा तो ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ पेहले इस शख़्स से अपनी नेमतों का इक़रार कराएगा फिर दरयाफ़्त फ़रमाएगा कि तू ने मेरी इन नेमतों के शुक्रिय्ये में कौन सा अ़मल किया है? तो वोह कहेगा कि मैं ने इ़ल्म पढ़ा और पढ़ाया और तेरी रिज़ा के लिए कुरआने मजीद की क़िराअत की। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तू झूटा है तू ने तो इस निय्यत से इ़ल्म पढ़ा पढ़ाया था ताकि लोग तुझे "आ़लिम" कहें और तू ने कुरआन की क़िराअत इस निय्यत से की थी कि लोग तुझ को "क़ारी" कहें तो दुन्या में तुझ को लोगों ने आ़लिम और क़ारी केह दिया और तुझ को तेरी निय्यत का सिला मिल गया अब आख़िरत में तेरे लिए मेरे यहां से कोई अज्र नहीं मिलेगा। फिर वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

तीसरा शख़्स एक मालदार सख़ी होगा। जब येह दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में पेश किया जाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला इस से अपनी नेमतों का इक़रार कराएगा फिर येह पूछेगा कि तू ने मेरी नेमतों का शुक्रिय्या अदा करने के लिए कौन सा अ़मल किया है? तो वोह कहेगा कि मैं ने तेरी राह में जहां जहां तुझे पसन्द था अपना माल ख़र्च किया है। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तू झूटा है तू ने तो इस निय्यत से अपना माल ख़र्च किया था कि लोग तुझे सख़ी कहें तो लोगों ने तुझे "सख़ी" कहा और तेरी मुराद पूरी हो गई अब तेरे लिए मेरे यहां कोई अज्र नहीं फिर वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा।[1]

(मिश्कात, जि. 1 स. 33)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قاتل للریاء...الخ، الحدیث:۱۹۰۵، ص۱۰۵۵

ग़ौर कीजिए कि शहीद, आ़लिम, सख़ी । तीनों ने अच्छे अच्छे अ़मल किए थे लेकिन चूंकि इन तीनों की निय्यतें अच्छी नहीं थीं इस लिए इन लोगों के अच्छे आमाल पर इन लोगों को कोई सवाब नहीं मिला बल्कि उलटे अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार हो गए ।

रात में सदक़ा देने वाला

ह़दीस :

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने सदक़ा देने का इरादा किया और अपना सदक़ा ले कर ख़ुफ़्या त़रीक़े से निकला लेकिन रात की तारीकी में बजाए किसी फ़क़ीर को देने के एक चोर के हाथ में दे दिया जो चोरी के इरादे से घूम रहा था । सुब्ह़ को लोगों में चर्चा हुवा कि किसी ने रात में एक चोर को सदक़ा दे दिया उस आदमी ने चर्चा सुन कर कहा कि इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है आज मैं फिर सदक़ा दूंगा चुनान्चे, वोह अपना सदक़ा ले कर रात में निकला तो एक ज़िनाकार औ़रत अपने गाहक की तलाश में चक्कर लगा रही थी उस ने उस को कोई मिस्कीन औ़रत समझ कर सदक़ा दे दिया फिर सुब्ह़ को लोगों में चर्चा हुवा कि रात में कोई शख़्स एक ज़ानिया को सदक़ा दे गया तो उस शख़्स ने चर्चा सुन कर कहा कि ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिए सब तारीफ़ है आज मैं फिर सदक़ा दूंगा । चुनान्चे, फिर येह शख़्स रात में छुप कर सदक़े का माल ले कर चला तो एक मालदार शख़्स रात में कहीं जा रहा था तो उस ने उस मालदार को मिस्कीन समझ कर सदक़ा दे दिया । सुब्ह़ को फिर इस का चर्चा होने लगा कि कोई शख़्स रात में बहुत बड़े मालदार को सदक़ा दे कर चला गया । जब उस ने येह सुना तो निहायत ही अफ़्सोस के साथ येह कहा कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ही लिए ह़म्द है, अफ़्सोस कि मेरा सदक़ा एक चोर,

एक ज़ानिया, एक मालदार के हाथ में पड़ गया। हालांकि हर रात मैं अपना सदक़ा उन सभों को मिस्कीन समझ कर देता रहा इसी अफ़्सोस में रन्जीदा हो कर येह शख़्स सो गया। तो ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ते ने आ कर येह कहा कि तू ने चोर के हाथ में सदक़ा दे दिया तो शायद वोह चोरी से बच जाए और तौबा कर ले और तेरा सदक़ा ज़ानिया को मिल गया तो शायद वोह ज़िनाकारी से बच जाए और तौबा कर ले और तू ने मालदार के हाथ में सदक़ा दे दिया तो शायद वोह इब्रत हासिल करे और ख़ुद भी अपना माल ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने लगे।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 165)

मत़लब येह है कि चोर और ज़ानिया और मालदार को सदक़ा दिया गया येह अच्छा नहीं हुवा मगर चूंकि ला इल्मी में हुवा और सदक़ा देने वाले की निय्यत अच्छी थी इस लिए तीनों रातों का सदक़ा मक़्बूल हो गया। क्यूंकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि "اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ" यानी अ़मल के सवाब का दारो मदार निय्यतों पर है।

लेहाज़ा येह बड़ी अहम बात है कि मोमिन को चाहिए कि अ़मल करने से पेहले अपनी निय्यत को दुरुस्त कर ले कि हर नेक अ़मल करने में येही निय्यत रखे कि **अल्लाह** तआ़ला मुझ से ख़ुश हो जाए हरगिज़ हरगिज़ नामो नमूद और इ़ज़्ज़तो शोहरत वग़ैरा की निय्यत दिल में न लाए वरना अ़मले सालेह़ करने के बा वुजूद कोई अज्रो सवाब नहीं मिलेगा।

बग़ैर अ़मल के फ़क़त़ निय्यत पर सवाब

शरीअ़त में मोमिन की अच्छी निय्यत की इस क़दर अहम्मिय्यत है कि अच्छी निय्यत पर बिला अ़मल के भी सवाब मिल जाता है, चुनान्चे, एक ह़दीस पढ़िए जो बड़ी ही नसीह़त आमोज़ व इब्रत आमेज़ है।

1 .....صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب اذا تصدق...الخ، الحدیث:۱۴۲۱، ج۱، ص۴۷۹

ह़दीस :

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ग़ज़्वए तबूक से आते हुवे मदीनए मुनव्वरा के क़रीब पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मदीने में कुछ ऐसे लोग रेह गए हैं कि अगर्चे वोह लोग इस जंग में नहीं आए। मगर तुम लोग जहां जहां गए और जिस जिस मैदान को तुम लोगों ने तै़ किया वोह लोग तमाम मक़ामात में तुम्हारे साथ थे क्यूंकि इस जेहाद में उन लोगों ने शरीक होने की निय्यत की थी मगर अपनी मजबूरी व माज़ूरी की वज्ह से वोह लोग इस जेहाद में शामिल न हो सके।[1]

(मिश्कात, जि. 2 स. 331)

﴾3﴿ इत्तेबाए सुन्नत

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका की इत्तेबाअ़ व पैरवी भी जन्नत में ले जाने वाले आमाल में से एक बड़ा उम्मीद अफ़्ज़ा अ़मल है चुनान्चे, इस सिलसिले में चन्द ह़दीसें पढ़ कर जन्नत की इस शाहराह पर चलने की कोशिश कीजिए।

ह़दीस : 1

عَنْ بِلَالِ بْنِ الْحَارِثِ الْمُزَنِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اَحْيٰى سُنَّةً مِّنْ سُنَّتِيْ قَدْ اُمِيْتَتْ بَعْدِيْ فَاِنَّ لَهٗ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلَ اُجُوْرِ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْئًا وَّمَنِ ابْتَدَعَ بِدْعَةَ ضَلَالَةٍ لَا يَرْضَاهَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْاِثْمِ مِثْلُ اٰثَامِ مَنْ عَمِلَ بِهَا لَايَنْقُصُ ذٰلِكَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَيْئًا رواه الترمذی۔ [2](مشکوٰۃ، ج۱، ص۳۰)

1 .....صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب۸۳، الحدیث:۴۴۲۳، ج۳، ص۱۵۰

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام...الخ، الحدیث:۱۶۸، ج۱، ص۵۴

हज़रते बिलाल बिन हारिस मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने मेरी किसी ऐसी सुन्नत को ज़िन्दा किया जो मेरे बाद मुर्दा कर दी गई हो तो उस को उन तमाम लोगों के सवाबों के बराबर सवाब मिलेगा जो लोग उस सुन्नत पर अ़मल करेंगे और उन लोगों के सवाबों में कुछ कमी नहीं होगी और जो शख़्स कोई गुमराही की बिदअ़त निकाले जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी नहीं है तो उस शख़्स पर उन तमाम लोगों के गुनाहों के बराबर गुनाह होगा जो लोग इस बिदअ़त पर अ़मल करेंगे और उन लोगों के गुनाह में कुछ भी कमी नहीं होगी। इस ह़दीस को इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

इस ह़दीस में येह फ़रमाया गया है कि "مَنِ ابْتَدَعَ بِدْعَةَ ضَلَالَةٍ لَا يَرْضَاهَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ" इस ह़दीस से मालूम हुवा कि हर नई बात जो दीन में निकाली जाए वोह मज़मूम और बाइसे गुनाह नहीं होती, बल्कि वोह नई बात मज़मूम और गुनाह है जो बिदअ़ते ज़लालत हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से नाराज़ हों, इसी लिए शारेह़ीने ह़दीस ने फ़रमाया कि बिदअ़त की दो क़िस्में हैं : एक **बिदअ़ते सय्यिआ** (बुरी बिदअ़त) दूसरी **बिदअ़ते ह़सना** (अच्छी बिदअ़त) **बिदअ़ते सय्यिआ** गुनाह का काम है और **बिदअ़ते ह़सना** गुनाह नहीं बल्कि कारे सवाब है, चुनान्चे, साह़िबे मिरक़ात ने इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाया कि[1] "قُيِّدَ الْبِدْعَةُ بِالضَّلَالَةِ لِاِخْرَاجِ الْبِدْعَةِ الْحَسَنَةِ"

यानी बिदअ़ते ज़लालत की क़ैद इस ह़दीस में इस लिए लगाई गई है ताकि बिदअ़ते ह़सना को इस से निकाल दें क्यूंकि बिदअ़ते ह़सना मज़मूम और गुनाह नहीं है।

---

1 .....مرقاۃ المفاتیح، کتاب الایمان، تحت الحدیث:۱۶۸، ج۱، ص۴۱۴

अक़्सामे बिदअ़त

चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा इ़ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी "किताब अल क़वाइ़द" के आख़िर में तेह़रीर फ़रमाया कि बिदअ़त की पांच क़िस्में हैं :

﴾1﴿ **बिदअ़ते वाजिबा :** जिस पर अ़मल करना ज़रूरी है जैसे क़ुरआने मजीद को समझने और समझाने के लिए इ़ल्मे नह़्व सीखना और उसूले फ़िक़्ह और जर्ह़ व तादील के क़वाइ़द को मुदव्वन करना ताकि फ़िक़्ह व ह़दीस के समझने में आसानी हो जाए।

﴾2﴿ **बिदअ़ते मुह़र्रमा :** जिस पर अ़मल करना ह़राम व गुनाह है, जैसे जबरिय्या, क़दरिया, मरजिया वग़ैरा तमाम बद मज़हबों और बद दीनों के मज़ाहिब ।

﴾3﴿ **बिदअ़ते मुस्तह़ब्बा :** जिन पर अ़मल करना सवाब है और छोड़ देना गुनाह नहीं, जैसे दीनी मदारिस और मुसाफ़िर ख़ानों की तामीरात।

﴾4﴿ **बिदअ़ते मकरूहा :** जैसे मस्जिदों और क़ुरआने मजीद की जिल्दों को नक़्शो निगार से मुज़य्यन करना।[1]

1...शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अशिअ़तुल लम्आ़त में बिदअ़त की अक़्साम बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि "وبعض مكروه مانند نقش ونگار كردن مساجد ومصاحف بقول بعض" यानी बाज़ बिदआ़त मकरूह हैं जैसे बाज़ उ़लमा के नज़दीक मस्जिदों और क़ुरआने मजीद की जिल्दों की ज़ैबाइशो आराइश और इन का नक़्शो निगार। (اشعة اللمعات، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ج١، ص١٣٥)

अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی मिरक़ातुल मफ़ातीह़ में नक़्ल फ़रमाते हैं "وإما مكروهة كزخرفة المساجد وتزويق المصاحف يعنى عند الشافعية وأما عند الحنفية فمباح" यानी बिदअ़त कभी मकरूह होती है जैसे मस्जिदों की ज़ैबाइश व आराइश और क़ुरआने मजीद की जिल्दों का नक़्शो निगार और येह कराहत शवाफ़ेअ़ के नज़दीक है जब कि अह़नाफ़ के नज़दीक ऐसा करना मुबाह़ है। (مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، تحت الحديث ١٤١، ج١، ص٣٦٨)

दुर्रे मुख़्तार में है "جاز تحلية المصحف لما فيه من تعظيمه كما فى نقش المسجد" यानी क़ुरआने मजीद को मुज़य्यन करना जाइज़ है क्यूंकि इस में क़ुरआने मजीद की ताज़ीम है जैसा कि मस्जिद को मुनक़्क़श करना जाइज़ है। والله تعالٰی اعلم (الدرالمختار مع ردالمحتار، كتاب الحظر والاباحة، فصل فى البيع، ج٩، ص٦٣٦)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ **बिदअ़ते मुबाह़ा :** जैसे अनवाओ़ अक़्साम के खाने, पेहनने, पीने का सामान करना और फ़ज्र व अ़स्र की नमाज़ों के बाद मुसाफ़ह़ा करना, मकानात बनवाना ।[1]

(ह़ाशिया मिश्कात, जि. 1 स. 27 ब ह़वाला मिरक़ातुल मफ़ातीह़)

इसी त़रह़ "बिदअ़ते ज़लालत" का बयान करते हुवे ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तेह़रीर फ़रमाया कि वोह नई चीज़ जो क़ुरआनो ह़दीस या अक़्वाल व आमाले सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم या इजमाए उम्मत के मुख़ालिफ़ हो वोह ज़लालत और गुमराही है और जो अच्छी अच्छी नई नई चीज़ें उन में से किसी के मुख़ालिफ़ न हों वोह मज़मूम और गुमराही नहीं । चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने जमाअ़त के साथ तरावीह़ को "نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ" फ़रमाया यानी येह अच्छी बिदअ़त है और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि "مَا رَاٰهُ الْمُسْلِمُوْنَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ حَسَنٌ" यानी तमाम मुसलमान जिस चीज़ को अच्छी मान लें वोह चीज़ **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक भी अच्छी है । क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि "لَا يَجْتَمِعُ اُمَّتِیْ عَلَى الضَّلَالَةِ" यानी मेरी उम्मत गुमराही पर जम्अ़ नहीं होगी ।[2]

(ह़ाशिया मिश्कात, जि. 1 स. 27)

---

1 .....حاشية مشكاة، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ص٢٧ ومرقاة المفاتيح، كتاب الايمان، تحت الحديث: ١٤١، ج١، ص٣٦٨

2 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، تحت الحديث: ١٤١، ج١، ص٣٦٨

और ह़ज़रते अ़ल्लामा इ़ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम व ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِما के बयान की ताईद मज़ीद उस ह़दीसे मरफ़ूअ़ से भी होती है जो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि "مَنْ اَحْدَثَ فِیْ اَمْرِنَا هٰذَا مَا لَیْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ"[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 27)

यानी जो शख़्स हमारे इस दीन में कोई ऐसी नई बात निकाले जो दीन में से न हो वोह मर्दूद है। इस ह़दीस से साफ़ साफ़ ज़ाहिर है कि दीन में वोह नई बात जो दीन के मुख़ालिफ़ न हो वोह हरगिज़ हरगिज़ मर्दूद नहीं है।

इस तक़रीर से मालूम हुवा कि मिश्कात जि. 1 स. 30 पर जो ह़दीस है कि[2] اِیَّاکُمْ وَ مُحْدَثَاتِ الْاُمُوْرِ فَاِنَّ کُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ وَ کُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ (मिश्कात, जि. 1 स. 30)

यानी तुम लोग अपने को दीन में नए नए कामों से बचाए रखो क्यूंकि हर नई निकाली हुई बात बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है।

इस से मुराद वोही बिदअ़त है जो क़ुरआनो ह़दीस या अक़्वाल व आमाले सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के ख़िलाफ़ हो वरना ज़ाहिर है कि हर नई निकाली हुई चीज़ गुमराही क्यूं कर हो सकती है ? जब कि ऊपर ज़िक्र की हुई ह़दीसों में साफ़ साफ़ तसरीह़ मौजूद है कि गुमराही वोही नई निकाली हुई चीज़ होगी जो दीन के ख़िलाफ़ हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से नाराज़ हों और जो नई नई बातें दीन के ख़िलाफ़ नहीं हैं वोह हरगिज़ हरगिज़ कभी भी मज़मूम और गुमराही नहीं हो सकती हैं। चुनान्चे, मुस्लिम शरीफ़ की एक ह़दीस में इस की सराह़त भी मौजूद है जो मिश्कात जि. 1 स. 33 पर मज़्कूर है कि

1 .....صحیح مسلم، کتاب الاقضیة، باب نقض الاحکام الباطلة...الخ، الحدیث:۱۷۱۸، ص۹٤٥

2 .....مشکاة المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام...الخ، الحدیث:۱٦٥، ج۱، ص٥۳

www.dawateislami.net

مَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْءٌ وَمَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَیْءٌ [1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۳۳)

जो इस्लाम में कोई अच्छा त़रीक़ा निकाले तो उस के लिए इस का सवाब है और जो लोग इस के बाद उस अच्छे त़रीक़े पर अ़मल करेंगे उन के सवाबों का अज्र भी उस को मिलेगा बग़ैर इस के कि उन लोगों के सवाबों में कुछ कमी हो और जो शख़्स इस्लाम में कोई बुरा त़रीक़ा निकाले तो उस पर उस का गुनाह है और तमाम उन लोगों के गुनाहों का वबाल भी उस पर होगा जो उस के बाद उस बुरे त़रीक़े पर अ़मल करेंगे बग़ैर इस के कि उन लोगों के गुनाहों में से कुछ कमी हो।

बहर ह़ाल येह बात सूरज की त़रह़ रौशन हो गई कि दीन में हर नई बात जो निकाली जाए वोह गुमराही नहीं है बल्कि वोही नई चीज़ गुमराही होगी जो दीन के मुख़ालिफ़ हो वरना ज़ाहिर है कि हर नई चीज़ गुमराही किस त़रह़ हो सकती है? ह़ालांकि ज़मानए नबुव्वत के बाद सेंकड़ों चीज़ें औलियाए उम्मत व उ़लमाए मिल्लत ने नई नई ईजाद की हैं जो हरगिज़ हरगिज़ मज़मूम नहीं बल्कि बाइ़से अज्रो सवाब हैं। मसलन क़ुरआने मजीद पर एराब लगाना, क़ुरआने मजीद को तीस पारों में तक़्सीम करना, क़ुरआन में औक़ाफ़ की अ़लामतों को लिखना, रुकूअ़ की निशानी तेह़रीर करना, इसी त़रह़ क़ुरआने मजीद के समझने और समझाने के लिए नह़्व व सर्फ़ और मआ़नी व बयान नीज़ उसूले फ़िक़्ह व उसूले ह़दीस के क़वाइ़द व ज़वाबित़ को मुदव्वन करना, इन फ़ुनून में किताबें तस्नीफ़ करना, इन की तालीम के लिए मदारिस क़ाइम करना, निसाब मुक़र्रर करना, इसी त़रह़ जुम्आ़ व ईदैन के ख़ुत़बों में ख़ुलफ़ाए राशिदीन और ह़ज़रते फ़ातिमा व

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الاول، الحدیث: ۲۱۰، ج۱، ص۶۱

ह़ज़राते ह़सनैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों चचाओं ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का नाम पढ़ना, मस्जिदों की इ़मारतों को पुख़्ता और आ़लीशान बनाना, मस्जिदों पर मनारों और मुअज़्ज़ने की तामीरात वग़ैरा इस क़िस्म की बहुत सी नई नई चीज़ें उ़लमाए मिल्लत ने दीन में निकाली हैं मगर चूंकि इन में कोई चीज़ भी दीन के मुख़ालिफ़ नहीं इस लिए इन चीज़ों को हरगिज़ हरगिज़ मज़मूम और गुमराही नहीं कहा जा सकता बल्कि येह सब बिदअ़ते ह़सना और सवाब के काम हैं। इसी त़रह़ सूफ़ियाए किराम के मामूलात मसलन मुराक़बात और ज़िक्र की हैआत और जल्सात, तस्बीह़ात का इस्तिमाल, ज़िक्रों की मिक़्दार, ह़ल्क़े और ख़त्मे ख़्वाजगान, मीलाद शरीफ़, मजालिसे वाज़, फ़ातिह़ा व आरासे औलिया, मक़ाबिर पर गुल पोशी व चादर पोशी, बिलाशुबा येह सब दीन में नई नई बातें निकाली गई हैं, मगर चूंकि इन में कोई भी क़ुरआने मजीद व ह़दीस या अक़्वाल व आमाले सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुख़ालिफ़ नहीं। लेहाज़ा हरगिज़ हरगिज़ इन चीज़ों को मज़मूम और गुमराही नहीं कहा जा सकता बल्कि येह सब बिदअ़ते ह़सना और सब सवाब के काम हैं। लेहाज़ा अज़ रूए ह़दीस जिन लोगों ने इन अच्छी अच्छी बातों को ईजाद किया, इन को ईजाद करने का सवाब भी मिलेगा और क़ियामत तक जितने लोग इन बातों पर अ़मल कर के सवाब ह़ासिल करते रहेंगे उन सब लोगों के सवाबों के बराबर भी उन को सवाब मिलता रहेगा और किसी के सवाबों में कुछ कमी न होगी।

येह है उन ह़दीसों की तशरीह़ात जो एह्ले ह़क़ का त़रीक़ा है। ख़ुदावन्दे करीम عَزَّوَجَلَّ सब को एह्ले ह़क़ के मामूलात पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उन लोगों को जो सिर्फ़ एक ह़दीस "كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ" (1) पढ़ पढ़ कर मीलाद शरीफ़ और नियाज़ व फ़ातिह़ा को

1 .....صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب تخفیف الصلاة والخطبة، الحدیث:٨٦٧، ص٤٣٠

www.dawateislami.net

ह़राम व गुमराही बताते हैं उन्हें इस ह़दीस का सह़ीह़ मत़लब समझने और ह़क़ केहने और ह़क़ पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि येह उम्मत मौजूदा दौर के इफ़्तिराक़ और जिदाल व शक्क़ाक़ की बलाओं से मेह़फ़ूज़ रहे। (आमीन)

इन तशरीह़ात के बाद इस उ़नवान की चन्द ह़दीसें भी पढ़ लीजिए जो दर्जे ज़ैल हैं।

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे बेटे ! अगर तू येह कर सकता है कि तू इस ह़ाल में सुब्ह़ो शाम करे कि तेरे दिल में किसी की बद ख़्वाही न हो तो ऐसा ही कर। फिर फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे बेटे ! येह मेरी सुन्नत है और जो मेरी सुन्नत से मह़ब्बत करेगा वोह जन्नत में मेरे साथ रहेगा।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 30)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो ह़लाल ग़िज़ा खाए और सुन्नत पर अ़मल करे और तमाम लोग उस की शरारतों से बे ख़ौफ़ हो जाएं तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। येह सुन कर एक आदमी ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इतनी बात तो आज बहुत से लोगों में पाई जाती है। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अ़न क़रीब मेरे बाद भी बहुत ज़मानों तक ऐसा करने वाले लोग पाए जाते रहेंगे।[2]

(मिश्कात, जि. 1)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام...الخ، الحدیث:۱۷۵، ج۱، ص۵۵

2 .....سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۶۰، الحدیث:۲۵۲۸، ج۴، ص۲۳۳

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी तमाम उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी सिवा उन लोगों के जो मुन्किर हो गए। तो किसी ने कहा कि मुन्किर कौन लोग हैं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने मेरी फ़रमां बरदारी की वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जिस ने मेरी ना फ़रमानी की वोह मुन्किर हो गया।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 27)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरी उम्मत में फ़साद फैल जाने के वक़्त मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उस को एक सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।[2]

मत़लब येह है कि ऐसे ज़माने में जब कि लोग हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से बे परवाई करते हों या सुन्नत पर अ़मल करने वालों का मज़ाक़ उड़ाते हों अगर ऐसे फ़ितना व फ़साद के ज़माने में कोई मुसलमान हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर मज़बूती के साथ क़ाइम रेह कर इस पर अ़मल करता रहेगा तो ऐसे शख़्स को एक सौ शहीदों का अज्रो सवाब मिलेगा।

ह़दीस : 6

ह़ज़रते मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मुर्सल रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने तुम

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الاعتصام...الخ،باب الاقتداء بسنن...الخ،الحدیث ۷۲۸۰، ج٤،ص٤٩٩

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان،باب الاعتصام...الخ،الحدیث:١٧٦،ج١، ص٥٥

लोगों में दो ऐसी चीज़ें छोड़ी हैं कि जब तक तुम लोग उन दोनों पर मज़बूती के साथ अ़मल करते रहोगे हरगिज़ हरगिज़ तुम गुमराह नहीं होगे । एक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की किताब (कुरआन) दूसरी रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत (ह़दीसें)[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 30)

﴾4﴿ इल्मे दीन

इल्मे दीन पढ़ना और पढ़ाना भी जन्नत में ले जाने वाले आमाल में से एक बहुत ही अहम और शानदार अ़मल है । इस सिलसिले में मुन्दरिजए ज़ैल ह़दीसों का ईमानी निगाहों से मुत़ालआ़ कीजिए और इस्लामी जज़्बों से इन पर अ़मल कीजिए । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से नूरे हिदायत की रौशनी मिलेगी ।

ह़दीस : 1

कसीर बिन क़ैस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास दिमश्क़ की मस्जिद में बैठा हुवा था तो एक आदमी आया और कहा कि ऐ अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ! मैं मदीनए मुनव्वरा से एक ह़दीस सुनने के लिए आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास आया हूं । मुझे ख़बर मिली है कि आप इस ह़दीस को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं, मैं किसी और ज़रूरत से यहां नहीं आया हूं। येह सुन कर ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि जो शख़्स इल्म की त़लब में कोई रास्ता चलेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाएगा और बेशक फ़रिश्ते त़ालिबे इल्म की ख़ुशी के लिए अपने बाज़ूओं को बिछा देते हैं और

1 .....المؤطاء للامام مالك، كتاب القدر، باب النهى...الخ، الحديث:١٧٠٨، ج٢، ص٤٠٠

बेशक आ़लिम के लिए आस्मानों और ज़मीनों की तमाम चीज़ें और मछलियां पानी के अन्दर मग़फ़िरत की दुआ़ करती हैं और यक़ीनन आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद के ऊपर ऐसी ही है जैसे कि चौदहवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत तमाम सितारों पर है और यक़ीन रखो कि उ़लमा अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वारिस हैं और अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मीरास दीनारो दिरहम नहीं हैं, अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मीरास तो इ़ल्म ही है तो जिस ने इस को लिया उस ने बहुत बड़ा हि़स्सा पा लिया।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 34)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो इ़ल्म की त़लब में घर से निकला वोह अपने लौटने के वक़्त तक जेहाद में है।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 34)

मत़लब येह है कि त़ालिबे इ़ल्म जितने दिनों तक इ़ल्म की त़लब में अपने घर से बाहर रहेगा उतने दिनों तक उस को उतना ही सवाब मिलता रहेगा जितना कि एक मुजाहिद को जेहाद करने का सवाब मिलता है।

ह़दीस : 3

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुर्सल रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस को इस ह़ालत में मौत आ गई कि वोह इस्लाम को ज़िन्दा करने की

1 .....سنن ابی داود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، الحدیث: ٣٦٤١، ج٣، ص٤٤٤

2 .....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، الحدیث: ٢٦٥٦، ج٤، ص٢٩٤

निय्यत से इल्म हासिल कर रहा था तो जन्नत के अन्दर उस के और नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरमियान बस एक ही दरजे का फ़ासिला होगा ।[1](मिश्कात, जि. 1 स. 36)

मत़लब येह है कि जन्नत में उस का दरजा इतना बुलन्द होगा कि उस से ऊंचा सिर्फ़ नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का दरजा होगा अगर्चे उस के ऊपर नबियों का एक ही दरजा इतना बुलन्दो बाला और अ़ज़मत वाला होगा कि उस की बुलन्दी तक किसी की अ़क़्ल की रसाई नहीं हो सकती । اَللّٰهُ اَكْبَر ! ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के एक एक दरजे की बुलन्दी और अ़ज़मत का क्या केहना ! سُبْحَانَ الله ! سُبْحَانَ الله

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि उस इल्म की क्या ह़द है कि अगर आदमी उस को पहुंच जाए तो "फ़क़ीह" हो जाए ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो दीन के मुतअ़ल्लिक़ चालीस ह़दीसें याद कर के मेरी उम्मत को पहुंचा दे उस को **अल्लाह** तआ़ला क़ब्र से "फ़क़ीह" बना कर उठाएगा और मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस का गवाह बनूंगा ।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 36)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि जब तुम लोग जन्नत के बाग़ात में गुज़रो तो मेवा चुना करो । इस पर किसी ने

---

1 .....سنن الدارمی،باب فی فضل العلم والعالم،الحدیث:٣٥٤،ج١،ص١١٢

2 .....مشکاۃ المصابیح،کتاب العلم،الفصل الثالث،الحدیث:٢٥٨،ج١،ص٦٨

कहा कि जन्नत के बाग़ात कौन हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि इल्म की मजलिसें ।[1] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 10 स. 79)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि क़ियामत के दिन उ़लमा की रौशनाई और शहीदों के ख़ून तोले जाएंगे तो उ़लमा की रौशनाई का पलड़ा भारी रहेगा ।[2] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 10 स. 80)

ह़दीस : 7

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जो अपने दीन की तालीम में सुब्ह़ को चला या शाम को चला वोह "जन्नती" है ।[3]

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 10 स. 80)

तशरीह़ात व फ़वाइद

﴾1﴿ ह़दीस नम्बर 1 से जहां इल्मे दीन की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी और उ़लमाए दीन के बुलन्द दरजात व अ़ज़ीम मरातिब का ह़ाल मालूम होता है वहां इस ह़दीस से येह भी इन्किशाफ़ होता है कि हमारे अस्लाफ़ और पुराने बुज़ुर्गों में इल्मे दीन की त़लब का कितना बे पनाह जज़्बा था कि मेह़्ज़ एक ह़दीस को सुनने के लिए लोग मदीनए मुनव्वरा से दिमश्क़ का सफ़र उस ज़माने में किया करते थे जब कि सफ़र के वसाइल बहुत ही कम और सफ़र की मुश्किलात बे इन्तिहा थीं । अफ़्सोस कि आज कल के मुसलमानों में येह दीनी जज़्बा बहुत कम रेह गया बल्कि बिल्कुल फ़ना हो चुका है दुन्यवी ज़रूरियात के

1 .....المعجم الكبير،الحديث:١١١٥٨،ج١١،ص٧٨

2 .....الجامع الصغير،الحديث:١٠٠٢٦،ج٢،ص٥٩٠

3 .....كنزالعمال،كتاب العلم،الباب الاول،الحديث:٢٨٧٠٢،ج٥،الجزء١٠، ص٦١

लिए तो आज कल के मुसलमान बड़े लम्बे लम्बे सफ़र किया करते हैं मगर इ़ल्मे दीन के लिए चन्द क़दम भी चलना उन लोगों के लिए सर पर पहाड़ उठाने के बराबर मुश्किल है।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 2 से मालूम हुवा कि एक मुसलमान जब तक कि इ़ल्मे दीन की त़लब में अपने घर से बाहर रेहता है उस को हर दम और हर क़दम पर जेहाद का सवाब मिलता रेहता है। इस ह़दीस से उन त़ालिबे इ़ल्मों का रुत्बा मालूम हुवा जो अपना वत़न छोड़ कर इ़ल्मे दीन पढ़ने के लिए परदेस में पड़े हुवे हैं और त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ उठा कर अपने वत़न से दूर इस्लामी मदारिस में तह़सीले इ़ल्म कर रहे हैं। काश ! मुसलमान उन त़ालिबे इ़ल्मों के मरातिब व दरजात को समझ कर उन की ख़िदमत व दिलजूई करते और मुजाहिदीने फ़ी सबीलिल्लाह के मुआ़विनीन की फ़ेहरिस्त में अपना नाम लिखा कर जेहाद का सवाब ह़ासिल करते। मगर अफ़्सोस कि आज कल के मुसलमान उन बेचारे त़ालिबे इ़ल्मों से नफ़रत करते हैं बल्कि उन को ह़क़ारत की नज़र से देखा करते हैं। और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के उन नेक बन्दों से बद सुलूकी कर के अपनी आख़िरत को ख़राब करते रेहते हैं।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 3 में "इस्लाम को ज़िन्दा करने की निय्यत से इ़ल्म ह़ासिल कर रहा था" से मालूम हुवा कि इ़ल्म त़लब करना जन्नत में ले जाने वाला अ़मल उसी वक़्त होगा जब कि ख़िदमते इस्लाम की निय्यत से इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया जाए वरना ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर कोई शख़्स आ़लिम केहलाने या मेह़्ज़ रोज़ी रोटी और दुन्या कमाने की निय्यत से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करे तो न वोह जन्नती होगा न फ़रिश्ते उस के लिए अपने बाज़ू के पर बिछाएंगे न उस को जेहाद का सवाब मिलेगा। इस लिए हर त़ालिबे इ़ल्म को लाज़िम है कि वोह सिर्फ़ ख़िदमते दीन और एह़याए इस्लाम की निय्यत से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करे वरना वोह इस के अज्रो सवाब से मेह़रूम हो जाएगा।

﴾4﴿ इल्मे दीन की मजलिसों को ह़दीस नम्बर 5 में जन्नत का बाग़ फ़रमाया गया। इस का मत़लब येह है कि इन मजलिसों में बैठना और इल्मे दीन ह़ासिल करना, येह जन्नत के बाग़ में पहुंचने का सबब है तो गोया येह जन्नत का बाग़ ही है।

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 6 में येह बयान फ़रमाया गया कि उ़लमाए दीन की रौशनाई जिस से वोह कुरआनो ह़दीस और दीनी मसाइल लिखते हैं वोह रौशनाई **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक मीज़ाने अ़मल में शहीदों के ख़ून से ज़्यादा अज्रो सवाब के लेह़ाज़ से वज़्न दार और भारी होगी क्यूंकि येह रौशनाई हज़ारों लाखों के लिए हिदायत का सामान फ़राहम करती है क्यूंकि उ़लमाए किराम की दीनी तेह़रीरों से हज़ारहा उम्मतियों को हिदायत की रौशनी मिलती है और शहीदों का ख़ून अगर्चे **अल्लाह** तआ़ला के नज़दीक बहुत मेह़बूब, निहायत क़ीमती बल्कि अनमोल है मगर इस ख़ून बेहने का फ़ाएदा और अज्रो सवाब शहीद की ज़ात ही तक मह़दूद रेहता है। इस लेह़ाज़ से उ़लमाए दीन की रौशनाई शहीदों के ख़ून से ज़्यादा उम्मते रसूल के लिए नफ़्अ़ बख़्श हुई लेहाज़ा मीज़ाने अ़मल में अज्रो सवाब के लेह़ाज़ से इस का पल्ला भारी रहेगा।

﴾6﴿ ज़रूरियाते दीन यानी फ़राइज़ो वाजिबात का इल्म ह़ासिल करना तो हर आ़क़िलो बालिग़ मुसलमान मर्द व औ़रत पर "फ़र्ज़े ऐन" है बाक़ी इतना ज़्यादा इल्मे दीन ह़ासिल करना कि कुरआनो ह़दीस और मसाइले फ़िक़्ह को अच्छी त़रह़ जान कर फ़तवा देने के क़ाबिल हो जाए येह "फ़र्ज़े किफ़ाया" है यानी शह्र के कुछ लोग अगर इतना इल्म ह़ासिल कर लें तो सब मुसलमानों के सर से फ़र्ज़ अदा हो गया और अगर पूरे शह्र में किसी ने भी इतना इल्म ह़ासिल नहीं किया तो शह्र के तमाम मुसलमान इस फ़र्ज़ को छोड़ने के मुआख़ज़े में गिरिफ़्तार होंगे।

﴾5﴿ वुज़ू

वुज़ू भी आमाले जन्नत में से एक अ़मल और जन्नत की सड़कों में से एक शाहराह है। वुज़ू के फ़ज़ाइल और अज्रो सवाब के बारे में मुन्दरिजए ज़ैल चन्द ह़दीसें बहुत ज़्यादा ईमान अफ़रोज़ और रग़बत अंगेज़ हैं।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें ऐसे कामों का रास्ता न बताऊं ? जिस से **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे गुनाहों को भी मिटा दे और तुम्हारे दरजात को भी बुलन्द फ़रमा दे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया कि क्यूं नहीं ऐसे अ़मल की तो बहुत ज़रूरत है। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तक्लीफ़ों के बा वुजूद "कामिल वुज़ू" करना और मस्जिदों की त़रफ़ ब कसरत क़दम रखना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना। येह चीज़ें जेहाद के हुक्म में हैं।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 38)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो बेहतरीन त़रीक़े से वुज़ू करे तो उस के बदन से उस के तमाम गुनाह निकल जाते हैं यहां तक कि उस के नाख़ुनों के नीचे के गुनाह भी निकल जाते हैं।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 38)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل اسباغ الوضوء...الخ، الحدیث:۲۵۱، ص۱۵۱

2 .....صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب خروج الخطایا...الخ، الحدیث:۲۴۵، ص۱۴۹

ह़दीस : 3

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो मुसलमान अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर खड़े हो कर दो रक्अ़त नमाज़ इस त़रह़ पढ़े कि अपने दिल और चेहरे के साथ इन दोनों रक्अ़तों पर तवज्जोह रखे तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।[1](मिश्कात, जि. 1 स. 39)

ह़दीस : 4

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में से जो कोई भी ख़ूब कामिल वुज़ू करे फिर इन कलिमात को पढ़ ले : اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ तो उस के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं कि वोह जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 39)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत क़ियामत के दिन इस ह़ालत में बुलाई जाएगी कि उन की पेशानी रौशन और हाथ पाउं वुज़ू के असरात से चमकते होंगे तो जो अपनी रौशनी को बढ़ा सकता हो उस को चाहिए कि वोह अपनी रौशनी को बढ़ाए।[3](मिश्कात, जि. 1 स. 39)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ،باب الذکر المستحب...الخ،الحدیث:۲۳٤، ص۱٤٤

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الطھارۃ،الفصل الاول،الحدیث:۲۸۹،ج۱،ص۷۳

3 .....صحیح البخاری، کتاب الوضوء،باب فضل الوضوء...الخ،الحدیث:۱۳٦، ج۱،ص۷۱

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ वुज़ू ब ज़ाते खुद ब ज़ाहिर कोई इबादत का काम नहीं मालूम होता इस लिए कि पानी बहाना और चन्द आज़ा को धो लेना ब ज़ाहिर कोई इबादत का अ़मल नहीं लेकिन चूंकि वुज़ू नमाज़ अदा करने का वसीला है और इबादत का वसीला भी इबादत होता है इस लिए वुज़ू भी इस लेहाज़ से इबादत बन गया और ऐसी शानदार इबादत बन गया कि जन्नत दिलाने वाला अ़मल और बिहिश्त की सड़कों में से एक सड़क बल्कि शाहराह बन गया।

﴾2﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 1 में तक्लीफ़ों के बा वुजूद वुज़ू करने का येह मत़लब है कि सर्दी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर तक्लीफ़ के बा वुजूद आज़ा को पूरा पूरा कामिल त़रीक़े से सुन्नत के मुत़ाबिक़ धोए इस में हरगिज़ हरगिज़ कोई सुस्ती या कोताही न करे।

इस ह़दीस में कामिल वुज़ू करने और कसरत से मस्जिदों में आने जाने और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करने। इन तीनों बातों को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "فَذَالِكُمُ الرِّبَاطُ" फ़रमाया। रिबात़ के माना इस्लामी सरह़द पर घोड़ा बांध कर कुफ़्फ़ार से जेहाद करना और दारुल इस्लाम को कुफ़्फ़ार के ह़म्लों से बचाना है। ह़दीस का मत़लब येह है कि गोया इन तीनों कामों को बजा लाने का सवाब जेहाद के मिस्ल है।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 2 में तमाम गुनाहों के बदन से निकल जाने का येह मत़लब है कि वुज़ू करने से गुनाहे सग़ीरा (छोटे गुनाह) कुल के कुल मुआ़फ़ हो जाते हैं। गुनाहे कबीरा (बड़े बड़े गुनाह) अगर हुक़ूक़ुल्लाह से इन का तअ़ल्लुक़ है मसलन नमाज़ रोज़ा छोड़ दिया तो बग़ैर सच्ची तौबा के येह गुनाह मुआ़फ़ नहीं हो सकता और अगर हुक़ूक़ुल इबाद से तअ़ल्लुक़ रखने वाले गुनाह कबीरा हों जैसे किसी का माल चुरा लिया है

तो इस को मुआ़फ़ कराने के लिए तौबा के साथ साथ बन्दों से मुआ़फ़ करा लेना भी ज़रूरी है।

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 5 का येह मत़लब है कि जहां जहां वुज़ू का पानी पहुंचता है क़ियामत में बदन का वोह ह़िस्सा रौशन और चमकता होगा तो जो शख़्स इस नूरानी चमक को बढ़ाना चाहे उस को चाहिए कि वोह ब कसरत वुज़ू करे और आज़ाए वुज़ू को सुन्नत के मुत़ाबिक़ अच्छी त़रह़ धोए।

वुज़ू के दुन्यावी फ़ाएदे

वुज़ू से आख़िरत के फ़ाएदे के इलावा बहुत से दुन्यावी फ़वाइद भी हैं मसलन :

﴾1﴿ बा वुज़ू रेहने वाला मुसलमान शैत़ान के वस्वसों और शैत़ानी ह़म्लों से मेह़फ़ूज़ रेहता है।

﴾2﴿ वुज़ू बहुत सी बीमारियों का इलाज और तनदुरुस्ती का मुह़ाफ़िज़ है।

﴾3﴿ वुज़ू कर के जिस काम के लिए घर से निकलें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह काम पूरा हो जाएगा। इसी लिए औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم का येह त़रीक़ा रहा है कि वोह हमेशा या अक्सर अवक़ात बा वुज़ू रहा करते थे।

﴾6﴿ अज़ान

अज़ान भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मल और बिहिश्त की कुन्जियों में से एक कुन्जी है अज़ान के फ़ज़ाइल में बहुत ज़्यादा ह़दीसें हैं जिन में से चन्द येह हैं :

ह़दीस : 1

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सात बरस सवाब त़लब करने की निय्यत से अज़ान पुकारे उस के लिए जहन्नम से नजात का परवाना लिख दिया जाता है।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 65)

---

1 .....سنن الترمذی،ابواب الصلوٰۃ،باب ماجاء فی فضل الاذان،الحدیث:٢٠٦،ج١،ص٢٤٨

www.dawateislami.net

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ में थे कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो कर अज़ान पढ़ने लगे फिर जब वोह ख़ामोश हो गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स यक़ीन रखते हुवे इस अज़ान के मिस्ल कहेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 66)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि मुअज़्ज़िनों की गर्दनें क़ियामत के दिन तमाम लोगों से ज़्यादा लम्बी होंगी।[2]

(मिश्कात, जि. 1 स. 64)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन आदमी क़ियामत के दिन मुश्क के टीलों पर होंगे :

﴾1﴿ वोह ग़ुलाम जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने मौला के ह़क़ को अदा किया।

﴾2﴿ वोह शख़्स जो किसी क़ौम की इमामत करता रहा हो और वोह क़ौम उस से राज़ी रही हो।

﴾3﴿ वोह शख़्स जो हर दिन हर रात में पांचों नमाज़ों की अज़ान पुकारता रहा हो।[3] (मिश्कात, जि. 1 स. 65)

---

1 .....سنن النسائی، کتاب الأذان، ثواب ذالك، ج ١، الجزء ٢، ص ٢٤

2 .....صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضل الاذان...الخ، الحدیث: ٣٨٧، ص ٢٠٤

3 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی فضل المملوك الصالح، الحدیث ١٩٩٣، ج ٣ ص ٣٩٧

ह़दीस : 5

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : तेरा रब عَزَّوَجَلَّ उस बकरी के चरवाहे से बहुत ख़ुश होता है जो पहाड़ के किसी टेकरे की चोटी पर अज़ान पुकारता है और नमाज़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (फ़रिश्तों से) येह फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे को देखो येह नमाज़ क़ाइम करता है और मुझ से डरता है बेशक मैं ने अपने इस बन्दे को बख़्श दिया और इस को जन्नत में दाख़िल कर दिया।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 65)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : मुअज़्ज़िन की आवाज़ की दराज़ी जिन्नो इन्सान और जो चीज़ भी सुनती है सब क़ियामत के दिन उस के लिए गवाही देंगे।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 64)

ह़दीस : 7

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : जो शख़्स अज़ान सुन कर येह दुआ़ पढ़े :

"اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّامَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَائِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ"

तो उस के लिए क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल हो गई।[3]

(मिश्कात, जि. 1 स. 65)

---

1 .....سنن ابی داود، کتاب صلاۃ المسافر، باب الأذان فی السفر، الحدیث:١٢٠٣، ج٢، ص٧

2 .....صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب رفع الصوت بالنداء، الحدیث:٦٠٩، ج١، ص٢٢٢

3 .....صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب الدعاء عند النداء، الحدیث:٦١٤، ج١، ص٢٢٤

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 1 में इरशाद फ़रमाया गया कि "जो सात बरस सवाब त़लब करने की निय्यत से अज़ान दे।" इस से मालूम हुवा कि जो तनख़्वाह लेने की निय्यत से अज़ान पुकारे अगर्चे उस का तनख़्वाह लेना जाइज़ है मगर उस को येह फ़ज़ीलत नहीं ह़ासिल होगी कि उस को जहन्नम से नजात का परवाना मिल जाए येह फ़ज़ीलत तो बस उसी मुअज़्ज़िन को ह़ासिल होगी जो सिर्फ़ सवाब की निय्यत से सात बरस अज़ान पढ़े।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 3 में जो आया है कि क़ियामत के दिन तमाम लोगों से ज़्यादा मुअज़्ज़िनों की गर्दन लम्बी होगी इस से मुराद उन के दरजात व मरातिब का बुलन्द होना है क्यूंकि जिस का दरजा बुलन्द होता है वोह गर्दन ऊंची कर के चलता है।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 7 "حَلَّتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ" कि मेरी शफ़ाअ़त उस के लिए ह़लाल हो गई इस का मत़लब येह है कि उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त उसी के लिए ह़लाल होगी जिस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा होगा। काफ़िर की शफ़ाअ़त तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए जाइज़ और ह़लाल ही नहीं।

अज़ान के दुन्यावी फ़्वाइद

जन्नत में दाख़िल होने के सिवा अज़ान के दुन्यावी फ़्वाइद भी बहुत हैं मसलन :

﴾1﴿ अज़ान की आवाज़ से शैत़ान इतनी दूर भाग जाता है कि जहां अज़ान की आवाज़ न पहुंचे।

﴾2﴿ आग लग जाए तो अज़ान पढ़ने से आग का ज़ोर कम हो जाता है और आग बुझने लगती है।

﴾3﴿ सख़्त आंधी का तूफ़ान अज़ान पढ़ने से बहुत जल्द ख़त्म हो जाता है।

﴾4﴿ बारिश अगर नुक़्सान देह होने लगे या सैलाबों से हलाकत का अन्देशा पैदा हो जाए तो अज़ान पढ़ने से नुक़्सान और हलाकत का ख़त़रा टल जाता है।

﴾5﴿ जिस घर या बस्ती में पथ्थर गिरने लगे तो अज़ान पुकारने से पथ्थर का गिरना बन्द हो जाता है।

﴾6﴿ जिस घर में जिन्न या शयात़ीन या आसेब वग़ैरा का अ़मल दख़्ल हो तो बादे मग़रिब उस घर में चन्द दिन अज़ान पढ़ने से शयात़ीन और आसेब दफ़्अ़ हो जाते हैं।

﴾7﴿ वबाई बीमारियां फेल गई हों तो बस्ती में गलियों के अन्दर बहुत से लोग अज़ान पढ़ें, ख़ुसूसन रात में अज़ान पुकारें तो वबाओं का ज़ोर कम हो जाता है।

﴾8﴿ दफ़्न के बाद क़ब्र के पास अज़ान देने से मुर्दे को मुन्करो नकीर के सुवालों का जवाब देने में आसानी होती है और मुर्दे की वह़शत और घबराहट दूर हो जाती है।

﴾9﴿ मजनून के कान में अज़ान पढ़ देने से जुनून में कमी हो जाती है।

﴾10﴿ जंगल या मैदान में रास्ता भूल जाए तो अज़ान पढ़ देने से ग़ैबी इमदाद का ज़ुहूर नागहां हो जाता है।

﴾11﴿ कुफ़्फ़ार से जंग के वक़्त अज़ान पढ़ने से कुफ़्फ़ार ख़ाइफ़ और मुसलमानों में इस्लामी जोश पैदा हो जाता है। (शामी, जिल्द अव्वल. स. 258 व ईज़ानुल अज्र)

﴾7﴿ तामीरे मसाजिद

ह़दीस :

عَنْ عُثْمَانَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنْ بَنٰی لِلّٰهِ مَسْجِدًا بَنَی اللّٰهُ لَهٗ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ [1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۶۸)

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ، باب المساجد...الخ، الحدیث:۶۹۷، ج۱، ص۱۴۷

हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए एक मस्जिद बनाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिए जन्नत में एक घर बना देगा।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस ह़दीस में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदों की तामीर पर जन्नत का वादा फ़रमाया है कि जो मुसलमान कोई मस्जिद बना देगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए जन्नत में एक घर बना देगा।

﴾2﴿ वाज़ेह़ रहे कि इस ह़दीस में مَسْجِدًا और بَیْتًا दोनों लफ़्ज़े नुकरा लाए गए हैं। मगर مَسْجِدًا में तन्कीर तह़क़ीर के लिए और بَیْتًا में तन्कीर ताज़ीम के लिए है जिस का ह़ासिले मत़लब येह हुवा कि जो मुसलमान छोटी से छोटी मस्जिद भी तामीर करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए बहुत बड़ा आ़लीशान मकान जन्नत में बना देगा।

﴾3﴿ ह़दीस में लिल्लाह का लफ़्ज़ इस बात की वज़ाह़त के लिए है कि जो शख़्स ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला ही की रिज़ा और ख़ुशनूदी के लिए मस्जिद बनाएगा उसी के लिए येह अज्रे अ़ज़ीम है कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए जन्नत में एक घर बना देगा और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई अपनी किसी दुन्यावी ग़रज़ या नामो नमूद या रियाकारी और अपनी शोहरत के लिए मस्जिद बनाए तो हरगिज़ हरगिज़ उस को येह अज्रो सवाब नहीं मिलेगा क्यूंकि इन सूरतों में मस्जिद की तामीर ख़ालिसन लि वजहिल्लाह नहीं हुई बल्कि ग़रज़े दुन्यावी व ख़्वाहिशे नफ़्सानी का इस में अ़मल दख़्ल हो गया जो अज्रो सवाब को ग़ारत कर देने वाली चीज़ है इस लिए इस बुरी निय्यत से मस्जिद बनाने में कोई सवाब नहीं मिलेगा। बल्कि गुनाह होगा क्यूंकि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि "اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ" यानी अ़मल का

दारो मदार निय्यत पर है। यानी हर नेक अ़मल पर सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब कि नेक अ़मल को अच्छी निय्यत से किया जाए अगर निय्यत अच्छी न हुई तो कितना ही नेक अ़मल क्यूं न हो उस पर कोई सवाब नहीं मिलेगा।

﴾4﴿ जिस त़रह़ नई मस्जिद तामीर करने का बहुत बड़ा अज्रो सवाब है, इसी त़रह़ पुरानी टूटी फूटी मस्जिदों की मरम्मत और उन की सफ़ाई सुथराई और आबादकारी का भी बहुत बड़ा अज्रो सवाब है। चुनान्चे, एक ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जिस को तुम लोग देखो कि वोह मस्जिदों की ख़िदमत व ख़बरगीरी करता रेहता है तो तुम लोग उस के साहिबे ईमान होने की शहादत दो और यक़ीन रखो कि बिलाशुबा उस के दिल में ईमान की रौशनी है। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में येह इरशाद फ़रमाया है कि

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (1)

यानी सिर्फ़ वोही शख़्स मस्जिदों की तामीर व आबादकारी करेगा जो **अल्लाह** और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है। (मिश्कात, जि. 1 स. 69)

﴾8﴿ नमाज़

ह़दीस : 1

ह़ज़रते मादान बिन त़ल्ह़ा यामिरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात कर के येह कहा कि आप मुझे किसी ऐसे अ़मल की ख़बर दीजिए कि इस के सबब से **अल्लाह** तआ़ला मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे तो वोह ख़ामोश

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते। (پ۱۰التوبة:۱۸)

وسنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمة الصلاة، الحدیث۲۶۲۶، ج۴، ص۲۸۰

www.dawateislami.net

रहे। फिर मैं ने उन से येही सुवाल किया तो वोह चुप रहे फिर जब तीसरी बार मैं ने उन से येही पूछा तो उन्हों ने कहा कि मैं ने इस बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया था तो आप ने फ़रमाया था कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए ब कसरत सजदों को लाज़िम पकड़ लो। क्यूंकि जब भी तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए कोई सजदा करोगे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के सबब से तुम्हारा एक दरजा बुलन्द फ़रमा देगा और तुम्हारे एक गुनाह को मिटा देगा। ह़ज़रते मादान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि इस के बाद मैं ने ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात कर के येही सुवाल किया तो उन्हों ने मुझ से ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़ौल के मुत़ाबिक़ ही कहा।[1]

(मुस्लिम, जिल्द अव्वल, स. 193)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी वुज़ू है।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 39)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत किया है कि आप ने इरशाद फ़रमाया कि जो सुब्ह़ या शाम को मस्जिद में जाए तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए जन्नत में मेहमान नवाज़ी का सामान तय्यार फ़रमा देता है। जब जब भी वोह सुब्ह़ या शाम को मस्जिद जाए।[3](बुख़ारी, जि. 1 स. 191)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضل السجود...الخ، الحدیث:٤٨٨، ص٢٥٢

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث:١٤٦٦٨، ج٥، ص١٠٣

3 .....صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب فضل من غدا...الخ، الحدیث:٦٦٢، ج١، ص٢٣٧

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो दो ठन्डी नमाज़ों (जाड़ों में फ़ज्र व इशा) को पढ़ेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

(मिश्कात, जि. 1 स. 2)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि तुम्हारा रब तआ़ला क्या फ़रमाता है ? **अल्लाह** तआ़ला येह फ़रमाता है कि मेरी इ़ज़्ज़त और मेरी बुज़ुर्गी की क़सम है कि जो बन्दा नमाज़ को उस के वक़्त के अन्दर पढ़ेगा मैं उस को जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो नमाज़ को उस के वक़्त के ग़ैर में पढ़ेगा। अगर मैं चाहूंगा तो उस पर रेह़्म करूंगा और अगर चाहूंगा तो उस को अ़ज़ाब दूंगा।[2](कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 7 स. 223)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे के लिए मुझ पर येह अ़ह्द है कि अगर वोह नमाज़ को उस के वक़्त के अन्दर पढ़ेगा तो मैं उस को अ़ज़ाब नहीं दूंगा और उस को बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करूंगा।[3] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 7 स. 223)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب فضل صلوتی...الخ، الحدیث:٦٣٥، ص٣١٨

2 .....کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الحدیث:١٩٠٢٨، ج٤، الجزء٧، ص١٢٦

3 .....کنزالعمال، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الحدیث:١٩٠٣٢، ج٤، الجزء٧، ص١٢٧

ह़दीस : 7

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन नमाज़ का ज़िक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि जो नमाज़ पर मुह़ाफ़ज़त करेगा येह नमाज़ उस के लिए क़ियामत के दिन नूर और दलील और नजात होगी और जो इस पर मुह़ाफ़ज़त नहीं करेगा न उस के लिए नूर होगा न दलील न नजात और वोह क़ियामत के दिन क़ारून व फ़िरऔ़न व उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 59)

तशरीह़ात व फ़वाइद

《1》 नमाज़ पर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने जन्नत देने का वादा फ़रमाया है और नमाज़ जन्नत में दाख़िल होने का बहुत ही आला ज़रीआ़ और बेहतरीन सबब है। इस मज़मून की सेंकड़ों आयतें और ह़दीसें क़ुरआने मजीद और किताबों के सफ़ह़ात में चमक रही हैं, जिन में से येह चन्द ह़दीसें आप के पेशे नज़र हैं। इन को पढ़ कर इ़ब्रत ह़ासिल कीजिए और जज़्बए अ़क़ीदत के साथ इन पर अ़मल कर के नमाज़ के पाबन्द हो जाइए और जन्नत में जाने का सामान कीजिए। याद रखिए कि जन्नत में ले जाने वाले आमाल में सब से बेहतर सब से आला नमाज़ ही है और क़ुरआने मजीद व ह़दीस शरीफ़ में जितनी ताकीद नमाज़ के लिए आई है दूसरे किसी अ़मल के लिए नहीं आई है, चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में कहीं येह हुक्म आया कि اَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ[2] यानी नमाज़ क़ाइम करो। कहीं येह फ़रमाया गया कि اَلَّذِیْنَ هُمْ عَلٰی صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝[3] यानी नमाज़ पर मुदावमत करो। कहीं येह

1 .....شعب الایمان،باب فی الصلوات،فصل فی الصلوات...الخ،الحدیث۲۸۲۳،ج۳، ص٤٦

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नमाज़ क़ाइम रखो। (پ ١،البقرة: ٤٣)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो अपनी नमाज़ के पाबन्द हैं। (پ٢٩،المعارج:٢٣)

www.dawateislami.net

इरशाद हुवा : اِنَّ الصَّلٰوۃَ کَانَتْ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ کِتٰبًا مَّوْقُوْتًا۝[1] यानी नमाज़ को उस के वक़्त में अदा करो। कहीं येह हुक्म आया कि وَارْکَعُوْا مَعَ الرّٰکِعِیْنَ۝[2] यानी नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ो। कहीं येह फ़रमान सादिर हुवा कि اَلَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ۝[3] यानी निहायत ही ख़ुशूअ़ और आ़जिज़ी का इज़हार करते हुवे नमाज़ पढ़ो। ख़ुलासा येह कि त़रह़ त़रह़ से मुख़्तलिफ़ लफ़्ज़ों के साथ ख़ुदावन्दे तआ़ला ने नमाज़ की ताकीद फ़रमाई है।

﴾2﴿ اَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ का मत़लब

वाज़ेह़ रहे कि क़ुरआने मजीद में जहां जहां इरशादे रब्बानी हुवा कि "नमाज़ क़ाइम करो" इस का मत़लब येह है कि नमाज़ को इस के तमाम हुक़ूक़ और आदाब की रिआ़यत के साथ अदा करो, यानी नमाज़ की तमाम शर्त़ों, इस के सब अरकान, इस के वाजिबात, इस की सुन्नतों, इस के मुस्तह़ब्बात की पूरी पूरी अदाएगी का ध्यान रखो और निहायत ही इख़्लास व हुज़ूरे क़ल्ब, इत़मीनान व दिल जमई के साथ तमाम आमाले नमाज़ को अदा करो, और ख़ौफ़े इलाही के जज़्बात से नमाज़ में ख़ूब ख़ूब अपनी आ़जिज़ी और इन्किसारी का इज़हार करो। चुनान्चे, इस सिलसिले में एक आ़लिमे रब्बानी और बा करामत मुह़द्दिस ह़ज़रते "ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ" की नमाज़ का ह़ाल सुन कर इब्रत ह़ासिल कीजिए और अपनी नमाज़ों की इस्लाह़ कर लीजिए।

﴾3﴿ ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नमाज़

ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक मरतबा ह़ज़रते आ़सिम बिन यूसुफ़ मुह़द्दिस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ ले गए तो

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बान्धा हुवा फ़र्ज़ है। (پ٥،النسآء:١٠٣)

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो। (پ١، البقرة:٤٣)

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं। (پ١٨،المؤمنون:٢)

हज़रते आ़सिम बिन यूसुफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि ऐ हातिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! क्या तुम अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ते हो ? तो आप ने फ़रमाया कि "जी हां" तो ह़ज़रते आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : आप बताइए कि आप किस त़रह़ नमाज़ पढ़ते हैं ? तो ह़ज़रते ह़ातिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि जब नमाज़ का वक़्त क़रीब हो जाता है तो मैं निहायत ही कामिल व मुकम्मल त़रीक़े से वुज़ू करता हूं। फिर नमाज़ का वक़्त आ जाने पर जब मुसल्ले पर क़दम रखता हूं तो इस त़रह़ खड़ा होता हूं कि मेरे बदन का हर जोड़ अपनी जगह पर बर क़रार हो जाता है फिर मैं अपने दिल में येह तसव्वुर जमाता हूं कि ख़ानए काबा मेरे दोनों भवों के दरमियान और मक़ामे इब्राहीम मेरे सीने के सामने है फिर मैं अपने दिल में येह यक़ीन रखते हुवे कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी ज़ाहिरी ह़ालत और मेरे दिल में छुपे हुवे तमाम ख़यालात को जानता है इस त़रह़ खड़ा होता हूं कि गोया पुल सिरात़ पर मेरे क़दम हैं और जन्नत मेरे दाहने और जहन्नम मेरे बाएं और मलकुल मौत मेरे पीछे हैं और गोया येही नमाज़ मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है, इस के बाद तक्बीरे तह़रीमा निहायत ही इख़्लास के साथ केहता हूं फिर इन्तिहाई तदब्बुर और ग़ौरो फ़िक्र के साथ क़िराअत करता हूं। फिर निहायत ही तवाज़ोअ़ के साथ रुकूअ़ और गिड़ गिड़ाते हुवे इन्किसारी के साथ सजदा करता हूं। फिर इसी त़रह़ पूरी नमाज़ निहायत ही ख़ुज़ूओ ख़ुशूअ़ के साथ ख़ौफ़ो रजा के दरमियान अदा करता हूं येह सुन कर ह़ज़रते आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ैरत के साथ पूछा कि ऐ ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ! क्या वाक़ेई आप हमेशा और हर वक़्त इसी त़रीक़े से नमाज़ पढ़ते हैं ? तो आप ने जवाब दिया कि जी हां ! तीस बरस से मैं हमेशा और हर वक़्त इसी त़रह़ हर नमाज़ अदा

करता हूं। येह जवाब सुनने के बाद ह़ज़रते आ़सिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह येह केहने लगे कि अफ़्सोस ! ऐसी नमाज़ तो मैं ने ज़िन्दगी भर में कभी भी अदा नहीं की।[1] (रूहुल बयान, जि. 1 स. 33)

﴾4﴿ फ़ाक़ा का ख़त़रा

बहर ह़ाल नमाज़ को निहायत ही इख़्लास व इत़्मीनान और हुज़ूरे क़ल्ब के साथ अदा करना चाहिए, नमाज़ में जल्द बाज़ी, ग़फ़्लत और बे तवज्जोही से दुन्याओ आख़िरत दोनों का अ़ज़ीम नुक़्सान है। चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दादा उस्ताद ह़ज़रते इब्राहीम नख़्ई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इरशाद है कि जिस शख़्स को तुम देखो कि रुकूअ़ व सुजूद में तख़्फ़ीफ़ करता है तो उस के एह्लो इ़याल पर रेह़्म करो क्यूंकि उन की रोज़ी तंग हो जाने और फ़ाक़ा कशी का ख़त़रा है।[2] (रूहुल बयान, जि. 1 स. 33)

एक ह़दीस में है कि ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक शख़्स को देखा कि वोह रुकूअ़ व सुजूद को पूरे त़ौर पर अदा नहीं करता तो आप ने फ़रमाया कि तू ने नमाज़ नहीं पढ़ी और अगर तू इसी ह़ालत में मर जाता तो ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत पर तेरी मौत न होती।[3] (बुख़ारी, जि. 1 स. 56)

﴾5﴿ जमाअ़त की अहम्मिय्यत

कुरआने मजीद में وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝[4] का येह मत़लब है कि नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ो। जमाअ़त वाजिब है और बिला किसी शरई उ़ज़्र के जमाअ़त छोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है और जमाअ़त छोड़ देने

---

1 .....تفسیرروح البیان،البقرة،تحت الآیة۳،ج۱،ص۳۳

2 .....تفسیرروح البیان،سورةالبقرة،تحت الآیة۳،ج۱،ص۳۳

3 .....صحیح البخاری، کتاب الصلوة،باب اذالم یتم السجود،الحدیث:۳۸۹،ج۱، ص۱۵٤

4 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो। (پ۱،البقرة:٤۳)

वाला फ़ासिक़ व मर्दूदुश्शहादत है। जमाअ़त तर्क करने वालों के बारे में रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ग़ैज़ो ग़ज़ब का इज़हार करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि मैं उस ज़ात की क़सम खाता हूं जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि बिलाशुबा मैं ने येह इरादा कर लिया है कि लकड़ियां जम्अ़ करने का हुक्म दूं फिर मैं नमाज़ का हुक्म दूं और अज़ान पुकारी जाए फिर मैं एक मर्द को इमामत का हुक्म दूं और वोह इमामत करे, फिर मैं (जमाअ़त से अलग रेहने वाले) लोगों के पास जा कर उन के घरों को उन के ऊपर जला दूं।[1] (बुख़ारी, जि. 1 स. 89)

एक दूसरी ह़दीस में आया है कि

تَارِكُ الْجَمَاعَةِ لَيْسَ مِنِّيْ وَلَا اَنَا مِنْهُ وَلَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّلَاعَدْلًا [2] (रूहुल बयान, जि. 1 स. 35)

यानी जमाअ़त का छोड़ने वाला उस को मुझ से और मुझ को उस से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं **अल्लाह** तआ़ला न उस के फ़र्ज़ को क़बूल फ़रमाएगा न उस की नफ़्ली इ़बादतों को।

﴾6﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 7 में जो येह आया है कि नमाज़ छोड़ने वाला क़ियामत के दिन क़ारून व फ़िरऔ़न व हामान व उबय बिन ख़लफ़ काफ़िरों के साथ होगा। इस का मत़लब येह है कि इन काफ़िरों की त़रह़ बे नमाज़ी भी जहन्नम में जाएगा, लेकिन येह बात ज़रूर है कि येह कुफ़्फ़ार तो हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेंगे और उन लोगों को बहुत ही सख़्त और दर्दनाक अ़ज़ाब होगा मगर बे नमाज़ी मुसलमान अपने गुनाहों के बराबर जहन्नम में जल कर फिर जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और इन मुसलमानों को ब निस्बत कुफ़्फ़ार के कुछ हल्का अ़ज़ाब दिया जाएगा। والله تعالٰى اعلم

---

1 .....صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب وجوب صلاة الجماعة، الحديث: ٦٤٤، ج١، ص٢٣٢

2 .....تفسير روح البيان، البقرة، تحت الآية: ٣، ج١، ص٣٥

﴾9﴿ सुन्नते मुअक्कदा

ह़दीस

عَنْ اُمِّ حَبِيْبَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى فِىْ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ ثِنْتَىْ عَشْرَةَ رَكْعَةً بُنِىَ لَهٗ بَيْتٌ فِى الْجَنَّةِ اَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَهَا وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَرَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلٰوةِ الْفَجْرِ[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۰۳)

ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स दिन रात में बारह रक्अ़तें पढ़ेगा उस के लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाएगा, चार रक्अ़त नमाज़े ज़ोहर से पेहले और दो रक्अ़त ज़ोहर के बाद और दो रक्अ़त मग़रिब के बाद और दो रक्अ़त इशा के बाद और दो रक्अ़त नमाज़े फ़ज्र से पेहले। (कुल बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

दिन रात की येह बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं यानी इन को पढ़ने की बहुत ताकीद आई है। क़सदन बिला उ़ज़्र इन को छोड़ना गुनाह है और इन बारह रक्अ़तों की मुदावमत पर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत का वादा फ़रमाया है तो येह जन्नत के आमाल में से एक अ़मल और जन्नत की कुन्जियों में से एक कुन्जी है।

बाज़ लोग जुम्आ़ की नमाज़ के बाद जल्दी जल्दी मस्जिद से भाग निकलते हैं और जुम्आ़ के बाद वाली छे रक्अ़तों को जो सुन्नते

1 .....سنن الترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فیمن صلی...الخ، الحدیث:٤١٥، ج١، ص٤٢٤

मुअक्कदा हैं, नहीं पढ़ते, वोह लोग गुनाहगार हैं, और इन लोगों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से मेहरूम होने का ख़त़रा है लेहाज़ा मस्जिद में या घर आ कर इस को ज़रूर पढ़ना चाहिए।[1]

(बहारे शरीअ़त, जि. 4 स. 11)

﴾10﴿ नमाज़े तहज्जुद

ह़दीस

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ لَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِيْنَةَ جِئْتُ فَلَمَّا تَبَيَّنْتُ وَجْهَهٗ عَرَفْتُ اَنَّ وَجْهَهٗ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ فَكَانَ اَوَّلُ مَا قَالَ يَا اَيُّهَا النَّاسُ اَفْشُوا السَّلَامَ وَاَطْعِمُوا الطَّعَامَ وَصِلُوا الْاَرْحَامَ وَصَلُّوْا بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِسَلَامٍ[1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۶۸)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है इन्हों ने कहा कि जब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया फिर जब मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे को ग़ौर से देखा तो मैं ने पेहचान लिया कि आप का चेहरा किसी झूटे आदमी का चेहरा नहीं है। फिर सब से पेहला क़ौल जो आप ने फ़रमाया वोह येह था कि ऐ लोगो ! तुम सलाम का चर्चा करो और खाना खिलाओ और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करो और रातों को जब सब लोग सो रहे हों तो तुम नमाज़ें पढ़ो। तुम ऐसा करोगे तो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने इस ह़दीस को रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

इस ह़दीस में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार अ़मलों पर जन्नत का वादा फ़रमाया है जो येह हैं : ﴾1﴿ मुसलमानों को ब कसरत

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، الحدیث:۱۹۰۷، ج۱، ص۳۶۲

सलाम करना ﴾2﴿ भूकों को खाना खिलाना ﴾3﴿ अपने रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करना ﴾4﴿ नमाज़े तहज्जुद पढ़ना । मौला तआ़ला इन चारों आमाले जन्नत पर हर मुसलमान को अ़मल की तौफ़ीक़ बख़्शे । (आमीन)

﴾11﴿ नमाज़े तहिय्यतुल वुज़ू

ह़दीस

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِبِلَالٍ عِنْدَ صَلٰوةِ الْفَجْرِ یَابِلَالُ حَدِّثْنِیْ بِاَرْجٰی عَمَلٍ عَمِلْتَهٗ فِی الْاِسْلَامِ فَاِنِّیْ سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَیْكَ بَیْنَ یَدَیَّ فِی الْجَنَّةِ قَالَ مَاعَمِلْتُ عَمَلًا اَرْجٰی عِنْدِیْ اَنِّیْ لَمْ اَتَطَهَّرْ طُهُوْرًا فِیْ سَاعَةِ لَیْلٍ اَوْ نَهَارٍ اِلَّا صَلَّیْتُ بِذٰلِكَ الطُّهُوْرِ مَا كُتِبَ لِیْ اَنْ اُصَلِّیَ (1)

(بخاری، ج۱،ص۱۵۴)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र के वक़्त ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया कि ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ! तुम ने इस्लाम में सब से ज़्यादा उम्मीद वाला जो अ़मल किया है उस को मुझ से बयान करो इस लिए कि मैं ने जन्नत में तुम्हारे जूतों की आहट अपने आगे सुनी है, तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि सब से ज़्यादा उम्मीद वाला अ़मल येही मेरा है कि मैं दिन या रात की किसी घड़ी में जब भी वुज़ू करता हूं तो उस वुज़ू से मेरे मुक़द्दर में जो नमाज़ लिखी हुई है उस को पढ़ लेता हूं ।

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب التهجد،باب فضل الطهور...الخ،الحدیث:۱۱٤۹،ج۱، ص۳۹۰

तशरीहात व फ़वाइद

जन्नत में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जूतों की आहट हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आगे सुनी, इस का मत़लब येह है कि शबे मेराज में जब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की सैर फ़रमा कर जन्नत में अपने उम्मतियों के दरजात का ह़ाल देखा तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने आगे आगे जन्नत में चलते हुवे देखा । ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जन्नत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे चलना येह कोई बे अदबी की बात नहीं । बादशाह के कुछ ख़ादिम बादशाह के पीछे पीछे और कुछ ख़ादिम मसलन नक़ीब और चोबदार आगे आगे चला करते हैं और येह दोनों बादशाह के बा अदब ख़ादिम ही हुवा करते हैं । इस ह़दीस से ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बुलन्द दरजे का पता चलता है कि वोह जन्नत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़ीब बन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद आमद का एलान करते हुवे चलेंगे और ह़दीस से ज़ाहिर होता है कि येह रुत्बए बुलन्द इन को नमाज़े तह़िय्यतुल वुज़ू की बदौलत मिला है ।

﴾12﴿ नफ़्ल नमाज़ों की कसरत

ह़दीस : 1

عَنْ رَبِیْعَۃَ بْنِ کَعْبٍ قَالَ کُنْتُ اَبِیْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَاَتَیْتُہٗ بِوَضُوْءِہٖ وَحَاجَتِہٖ فَقَالَ لِیْ سَلْ فَقُلْتُ اَسْئَلُکَ مُرَافَقَتَکَ فِی الْجَنَّۃِ قَالَ اَوَغَیْرَ ذٰلِکَ قُلْتُ ھُوَ ذَاکَ قَالَ فَاَعِنِّیْ عَلٰی نَفْسِکَ بِکَثْرَۃِ السُّجُوْدِ۔[1]

رواہ مسلم (مشکوٰۃ،ج۱،ص۸۴)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ،باب فضل السجود...الخ،الحدیث:٤٨٩، ص٢٥٢

www.dawateislami.net

हज़रते रबीआ़ बिन काब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रात गुज़ारता था तो मैं वुज़ू का पानी और आप की ज़रूरत की चीज़ें (मिस्वाक वग़ैरा) लाया तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो चाहो मुझ से मांग लो, तो मैं ने कहा कि मैं जन्नत में आप की ख़िदमत गुज़ारी मांगता हूं, तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या इस के इलावा और कोई चीज़ नहीं, तो मैं ने कहा कि बस येही, इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम अपनी दिली मुराद के लिए कसरते सुजूद से मेरी मदद करते रहो। इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 2

عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ كَانَ شَابٌّ يَخْدِمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُخِفُّ فِي حَوَائِجِهٖ فَقَالَ تَسْئَلُنِي حَاجَةً فَقَالَ اُدْعُ اللّٰهَ لِي بِالْجَنَّةِ فَرَفَعَ رَأْسَهٗ وَتَنَفَّسَ وَقَالَ نَعَمْ وَلٰكِنْ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ [1] (کنز العمال، ج۸، ص۴)

हज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक जवान नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करता था और आप की ज़रूरियात में हाथ बटाया करता था। तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि तुम मुझ से अपनी किसी ह़ाजत का सुवाल करो, तो उस ने कहा कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिए जन्नत की दुआ़ मांगें। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सर उठाया और एक सांस खींच कर इरशाद फ़रमाया कि हां मगर इस शर्त़ के साथ कि तुम ब कसरत सजदे करते रहो।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की दोनों ह़दीसों में "कसरते सुजूद" से मुराद नमाज़ों को ब कसरत पढ़ना है। सजदे से मुराद नमाज़ है इस को इस्त़िलाह़ में

1 .....کنز العمال، کتاب الصلاۃ، الحدیث: ۲۱۶۲۳، ج۴، الجزء۸، ص۵

www.dawateislami.net

"تَسْمِيَةُ الْكُلِّ بِاسْمِ الْجُزْءِ" कहा जाता है। यानी कभी कभी जुज़्व बोल कर कुल मुराद लिया जाता है और ऐसा हर ज़बान में हुवा करता है, मसलन उर्दू में ख़मीरा गाउ ज़बान एक दवा का नाम है, इस में बहुत सी दवाएं पड़ती हैं। मगर एक जुज़्व गाउ ज़बान चूंकि सब से ज़्यादा मिक़्दार में होता है इस लिए पूरी मुरक्कब दवा का नाम ख़मीरा गाउ ज़बान पड़ गया। इसी त़रह़ ख़मीरा मरवारीद भी एक मुरक्कब दवा है जिस में बहुत सी दवाएं पड़ती हैं अगर्चे मिक़्दार में कम मगर क़ीमत में सब से ज़्यादा मरवारीद होता है, इस लिए पूरी मुरक्कब दवा को ख़मीरए मरवारीद केहने लगे। इसी त़रह़ नमाज़ में क़ियाम, कुऊ़द, क़ौमा, जल्सा, सजदा सभी कुछ है और इन सब अज्ज़ा से नमाज़ मुरक्कब हुई है। मगर चूंकि एक जुज़्व यानी सजदा बहुत अहम है क्यूंकि इस में ख़ुदा के हुज़ूर बहुत ज़्यादा आ़जिज़ी का इज़्हार है इस लिए पूरी नमाज़ को सजदा केह दिया गया।

﴾2﴿ इस उ़नवान की दोनों ह़दीसों में येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों सह़ाबियों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से फ़रमाया कि तुम लोग अपनी ह़ाजत का सुवाल करो, चुनान्चे, दोनों सह़ाबियों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अपनी अपनी ह़ाजतों और मुरादों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों की मुरादें भी पूरी फ़रमा दीं। इस से सरीह़ त़ौर पर येह साबित होता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी ह़ाजतों को त़लब करना और अपनी मुरादों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगना बिलाशुबा जाइज़ व दुरुस्त बल्कि सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और त़रीक़ए सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان है।

वहाबियों, नजदियों को इस ह़दीस से इब्रत ह़ासिल करनी चाहिए और अम्बिया व औलिया को मजबूर मेह्ज़ मानने और ग़ैरुल्लाह से कुछ मांगने को शिर्क क़रार देने के अ़क़ीदे से तौबा कर लेना चाहिए।

﴾3﴿ पेहली ह़दीस से येह भी साबित हुवा कि अपने किसी उम्मती को जन्नत अ़ता फ़रमा देना येह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ब्ज़े व इख़्तियार में है । वरना हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमा देते कि जन्नत देना मेरे इख़्तियार में नहीं है मगर आप ने येह नहीं फ़रमाया बल्कि इन की मुराद पूरी फ़रमा दी और न सिर्फ़ जन्नत बल्कि जन्नत में वोह मह़ल जो रब्बुल आ़लमीन ने ख़ास रेह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए तय्यार फ़रमाया है ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अ़ता फ़रमाया, क्यूंकि ख़िदमत गुज़ारी तो जभी हो सकती है कि ख़ादिम व मख़्दूम दोनों एक ही मह़ल में रहें ख़ादिम मशरिक़ में रहे और मख़्दूम मग़रिब में रहे तो फिर ख़िदमत गुज़ारी की क्या सूरत हो सकती है ? बहर ह़ाल एह़ले सुन्नत का येही अ़क़ीदा है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दुन्याओ आख़िरत की तमाम नेमतों का मालिक और क़ासिम बना दिया है । वोह जिस को चाहें अ़ता फ़रमाएं । साह़िबे क़सीदए बुर्दा शरीफ़ ने क्या ख़ूब फ़रमाया कि

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ[1]

यानी दुन्याओ आख़िरत दोनों आप के दस्तर ख़्वाने सख़ावत के दो टुकड़े और लौह़ो क़लम के उ़लूम आप के समुन्दरे इ़ल्म के दो क़त़रे हैं । इस शेर में दोनों जगह "مِنْ" तबईज़िया है । आला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेलवी قُدِّسَ سِرُّہٗ ने भी इस मज़्मून को बहुत ख़ूब बयान फ़रमाया है कि

रब है मोअ़त़ी येह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

1...क़सीदए बुर्दा शरीफ़, ह़ज़रते इमाम बूसीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

﴾4﴿ जब येह मालूम हो चुका कि "कसरते सुजूद" से नमाज़ों की कसरत मुराद है तो ज़ाहिर है कि इन नमाज़ों से नफ़्ल नमाज़ें मुराद हैं क्यूंकि फ़र्ज़ नमाज़ों की तो तादाद मुक़र्रर है इन में कसरत व क़िल्लत का कोई सुवाल ही नहीं पैदा होता।

﴾13﴿ ज़कात

नमाज़ की त़रह़ ज़कात भी फ़र्ज़ है और ज़कात अदा करने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत व ख़ुश ख़बरी दी है और बिहिश्त की नेमतें अ़त़ा फ़रमाने का वादा फ़रमाया है। चुनान्चे, ज़कात के बारे में चन्द ह़दीसें मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

ह़दीस : 1

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अपना दाई और क़ाज़ी बना कर यमन की जानिब भेजा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया कि तुम एह्ले यमन को इस बात की दावत दो कि वोह "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" की गवाही दें तो अगर वोह लोग इस बात को मान लें तो फिर तुम उन को येह बताओ कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर पांच नमाज़ें दिन रात में फ़र्ज़ की हैं, तो अगर वोह लोग इस बात को मान लें तो तुम फिर उन लोगों को येह बताओ कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे मालों में तुम लोगों पर ज़कात फ़र्ज़ की है जो तुम्हारे मालदारों से वुसूल की जाएगी और तुम्हारे फ़क़ीरों में लौटा दी जाएगी।[1]

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1 स. 187)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक दीहाती हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आए और येह कहा कि आप

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،الحدیث:۱۳۹۵و۱۴۹۶،ج۱، ص۴۷۱و۵۰۴

किसी ऐसे अ़मल पर मेरी राहनुमाई करें कि मैं जब वोह अ़मल कर लूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करो और उस के साथ किसी को शरीक मत ठेहराओ और फ़र्ज़ नमाज़ को क़ाइम करो और फ़र्ज़ ज़कात को अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। तो उस दीहाती ने येह सुन कर कहा कि मुझ को उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं इस से ज़्यादा नहीं करूंगा। फिर जब वोह पीठ फेर कर चल दिया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस को किसी जन्नती आदमी की त़रफ़ देखते हुवे अच्छा लगे वोह इस आदमी को देख ले।[1]

(बुख़ारी, जि. 1 स. 187)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स ख़ुदा की राह में किसी चीज़ का एक जोड़ा ख़र्च करे तो उस को जन्नत में येह केह कर बुलाया जाएगा कि ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! येह बेहतरीन जगह है, फिर जो शख़्स नमाज़ी होगा उस को नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो मुजाहिद होगा वोह जेहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो सदक़ा देने वाला होगा वोह सदक़े के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो रोज़ादार होंगे वोह "बाबुर्रय्यान" (सेराबी के दरवाज़े) से बुलाए जाएंगे। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कोई शख़्स उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए इस की कोई ज़रूरत तो नहीं है लेकिन क्या कोई ऐसा भी है जो उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाएगा ? तो रसूलुल्लाह

1 .....صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، الحدیث:۱۳۹۷، ج۱، ص۴۷۲

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हां और मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन्हीं लोगों में से हो ।[1] (जो जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलाए जाएंगे ।) (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1 स. 230)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि दो औ़रतें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस ह़ाल में आईं कि उन दोनों के हाथों में सोने के दो कंगन थे । तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम दोनों इन कंगनों की ज़कात अदा करती हो ? तो उन दोनों औ़रतों ने कहा : "नहीं" तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों से फ़रमाया : क्या तुम इस को पसन्द करती हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम दोनों को आग के दो कंगन पेहनाए ? तो उन दोनों औ़रतों ने कहा कि "जी नहीं" तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फिर तुम दोनों इन की ज़कात अदा करो ।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 160)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है इन्हों ने कहा कि जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात पा गए और आप के बाद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़लीफ़ा बनाए गए और अ़रबों में से कुछ लोग काफ़िर हो गए । (तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जेहाद करने का हुक्म दे दिया) तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि आप इन लोगों से किस त़रह़ जेहाद करेंगे ? ह़ालांकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया है कि

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب الریان للصائمین، الحدیث:۱۸۹۷، ج۱، ص۶۲۵

2 .....سنن الترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی زکوٰۃ الحلی، الحدیث:۶۳۷، ج۲، ص۱۳۲

मुझे येह हुक्म दिया गया है कि "मैं लोगों से उस वक़्त तक जेहाद करूं यहां तक कि लोग لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه केह दें तो जिस ने لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه पढ़ लिया उस ने अपने माल और जान को मुझ से बचा लिया मगर इस्लाम के ह़क़ में और इस का ह़िसाब **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मे है।" येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! मैं इन लोगों से ज़रूर ज़रूर जंग करूंगा जो नमाज़ व ज़कात में तफ़रीक़ करेंगे इस लिए कि ज़कात माल का ह़क़ है, ख़ुदा की क़सम ! अगर येह लोग एक बकरी का बच्चा जो ज़कात में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में दिया करते थे अगर मुझे न देंगे तो मैं इन लोगों से जेहाद करूंगा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ब ख़ुदा ! मैं ने येही देखा कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सीने को जेहाद के लिए खोल दिया है तो मैं ने पेहचान लिया कि यक़ीनन येही ह़क़ है।[1]

(बुख़ारी, जि. 1 स. 188 व मिश्कात, जि. 1 स. 157)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 1 से मालूम हुवा कि नमाज़ की त़रह़ ज़कात भी फ़र्ज़ है। चुनान्चे, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना दाई बना कर इस की तब्लीग़ के लिए यमन भेजा था। जिस त़रह़ नमाज़ का इन्कार करने वाला काफ़िर हो जाएगा। इसी त़रह़ ज़कात का मुन्किर भी काफ़िर है। वाज़ेह़ रहे कि किसी भी फ़र्ज़ का इन्कार कुफ़्र है।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 2 से मालूम हुवा कि दीहाती सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नती होने की बिशारत दे दी ऐसे बहुत से

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،الفصل الثالث،الحدیث:۱۷۹۰،ج۱،ص۳۴۰

www.dawateislami.net

खुश नसीब सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हैं जिन को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या ही में जन्नती होने की बिशारत दे दी, इस से मालूम होता है कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने उम्मतियों के ख़ातिमे की ख़बर थी क्यूंकि ज़ाहिर है कि बग़ैर ख़ातिमा बिल ख़ैर के कोई जन्नती हो सकता ही नहीं। तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस शख़्स के जन्नती होने की खुश ख़बरी सुनाई। ज़रूर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस के ख़ातिमा बिल ख़ैर की भी ख़बर होगी।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 3 में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत बयान है कि जन्नत के हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उन को जन्नत में दाख़िल होने की दावत देंगे।

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 5 की तशरीह़ येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बाद जो बद नसीब इस्लाम से मुर्तद हो गए थे उन मुर्तद्दीन के चन्द गिरोह थे।

अव्वल : वोह लोग थे जिन्हों ने इस्लाम से बिल्कुल ही मुर्तद हो कर "मुसैलमतुल कज़्ज़ाब" की नबुव्वत को मान लिया और उस की पैरवी करने लगे और उन में बेशतर क़बीलए बनू ह़नीफ़ा के लोग थे।

दुवुम : वोह लोग थे जो इस्लाम से मुर्तद हो कर मुद्दइए नबुव्वत "अस्वद अ़नसी" की नबुव्वत को मान कर उस के मुत्तबेअ़ बन गए और उस के मुत्तबेईन में ज़्यादा तर एह्ले यमन थे।

सिवुम : वोह लोग थे जो इस्लाम से मुर्तद हो कर अपने ज़मानए जाहिलिय्यत के पुराने दीन में दाख़िल हो गए। चुनान्चे, मुर्तद्दीन के इन तीनों गिरोह का इतना ग़लबा हो गया था कि सिर्फ़ तीन ही मस्जिदों में नमाज़ पढ़ी जाती थी बाक़ी तमाम मसाजिद में नमाज़ नहीं होती थी। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की मस्जिदुल ह़राम, मदीनए त़य्यिबा की मस्जिदे नबवी, बह़्रैन की मस्जिदे

अ़ब्दुल क़ैस बस इन्हीं तीनों मस्जिदों में नमाज़ होती थी। मुर्तद्दीन के इन तीनों गिरोह से अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जेहाद का हुक्म दिया। चुनान्चे, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से उन मुर्तद्दीन के साथ जेहाद किया और मुसैलमतुल कज़्ज़ाब जंगे यमामा में और अस्वद अ़नसी सन्आ़ में क़त्ल कर दिया गया और इन दोनों के मुत्तबेईन भी ब कसरत क़त्ल हो गए और कुछ ताइब हो कर इस्लाम में आ गए। और वोह तमाम मुर्तद्दीन जो ज़मानए जाहिलिय्यत के दीन में लौट गए थे। उन में से भी ब कसरत मक़्तूल हुवे मगर अक्सर तौबा कर के फिर इस्लाम में दाख़िल हो गए। मज़्कूरा बाला तीनों क़िस्म के मुर्तद्दीन से जेहाद के बारे में तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इत्तिफ़ाक़ रहा।

चहारुम : मुर्तद्दीन में एक गिरोह ऐसा भी था जो नमाज़, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा तमाम शराइए़ इस्लाम पर ईमान रखते थे और इस पर आ़मिल भी थे। इन लोगों ने सिर्फ़ ज़कात की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार किया था बल्कि इन में कुछ लोग ऐसे भी थे जो ज़कात के मुन्किर नहीं थे बल्कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरबार में ज़कात ले जाने से इन्कार करते थे। जैसे कि बनी यरबूअ़ के क़बीले वालों ने अपनी ज़कातों को वुसूल कर के जम्अ़ कर लिया था कि इस को दरबारे ख़िलाफ़त में भेजेंगे, मगर मालिक बिन नवैरा इन के सरदार ने पूरे क़बीले की ज़कात को मदीने भेजने से रोक दिया और सारी ज़कात को बनी यरबूअ़ के ग़रीबों में तक़्सीम कर दिया। मुर्तद्दीन का येह चौथा गिरोह दर ह़क़ीक़त बाग़ियों का गिरोह था मगर चूंकि येह लोग मुर्तद्दीन में मिले जुले थे इस लिए जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन लोगों के साथ जेहाद करने का हुक्म फ़रमाया तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह शुबा लगा कि येह लोग तो कलिमा पढ़ते हैं और इस्लाम के तमाम

अह़काम के पाबन्द हैं लेहाज़ा कलिमा पढ़ने की वज्ह से इन के जानो माल मेह़फ़ूज़ हो चुके इस लिए इन लोगों को क़त्ल करना दुरुस्त नहीं चुनान्चे, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुबाह़सा और मुनाज़रा किया यहां तक कि ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दलीलों को सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इत़मीनाने क़ल्ब ह़ासिल हो गया और फिर तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने मुत्तफ़िक़ हो कर उन लोगों से भी जंग की। यहां तक कि तमाम मुर्तद्दीन का क़ल्अ़ क़म्अ़ हो गया। कुछ क़त्ल हो गए और अक्सर तौबा कर के फिर इस्लाम में दाख़िल हो गए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का येह बहुत ही अ़ज़ीम कारनामा है कि तमाम मुद्दइयाने नबुव्वत और मुर्तद्दीन का ख़ातिमा हो गया और दीने बर ह़क़ इस्लाम का बोल बाला हो गया।[1]

(शर्हे मुस्लिम नवावी, स. 38)

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 4 से मालूम हुवा कि चांदी सोने के ज़ेवरात अगर्चे ख़ुद अपने इस्तिमाल में हों फिर भी इन की ज़कात फ़र्ज़ है। क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन कंगनों के बारे में साफ़ लफ़्ज़ों में इरशाद फ़रमाया कि "فَاَدِّیَا زَکٰوتَہٗ" यानी तुम दोनों इस सोने के कंगनों की ज़कात अदा करो। सोना चांदी जिस शक्ल में भी हो ख़्वाह सिक्कों की शक्ल में हो या ज़ेवरात की शक्ल में हो या बरतनों की शक्ल में हो या ईंटों की शक्ल में हो हर सूरत में बहर ह़ाल इन की ज़कात देनी फ़र्ज़ है।

﴾14﴿ सदक़ा

सदक़ा भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मल और बिहिश्त की कुन्जियों में से एक कुन्जी है। सदक़े के फ़ज़ाइल में ह़स्बे ज़ैल चन्द ह़दीसें पढ़ कर जन्नत में जाने का सामान कीजिए।

1 .....شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب الایمان،باب الامربقتال الناس...الخ،ج۱، ص۳۸

ह़दीस : 1

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتُدْفِعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ[1] (مشکوۃ،ج۱،ص۱۶۸)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सदक़ा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के आतशे ग़ज़ब को बुझा देता है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ سَعِيْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُّمَا مُسْلِمٍ كَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا عَلٰى عُرْيٍ كَسَاهُ اللّٰهُ مِنْ خُضْرِ الْجَنَّةِ وَاَيُّمَا مُسْلِمٍ اَطْعَمَ مُسْلِمًا عَلٰى جُوْعٍ اَطْعَمَهُ اللّٰهُ مِنْ ثِمَارِ الْجَنَّةِ وَاَيُّمَا مُسْلِمٍ سَقَا مُسْلِمًا عَلٰى ظَمَأٍ سَقَاهُ اللّٰهُ مِنَ الرَّحِيْقِ الْمَخْتُوْمِ[2]

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान किसी नंगे मुसलमान को कपड़ा पेहना दे तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत का सब्ज़ लिबास पेहनाएगा और जो मुसलमान किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाए तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को शराबे ख़ालिस से सेराब फ़रमाएगा जिस पर मोह़र लगी होगी।

ह़दीस : 3

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفْضَلُ الصَّدَقَةِ اَنْ تُشْبِعَ كَبِدًا جَائِعًا[3]

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی فضل الصدقۃ،الحدیث:٦٦٤،ج٢،١٤٦

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الحدیث:١٩١٣،ج١، ص٣٦٣

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب أفضل الصدقۃ،الحدیث:١٩٤٦،ج١، ص٣٦٩

www.dawateislami.net

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अफ़्ज़ल सदक़ा येह है कि तुम किसी भूके जिगर को आसूदा करो।

हदीस : 4

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ غُفِرَ لِامْرَاَةٍ مُوْمِسَةٍ مَرَّتْ بِکَلْبٍ عَلٰی رَاْسِ رَکِیٍّ یَلْهَثُ کَادَ یَقْتُلُهُ الْعَطَشُ فَنَزَعَتْ خُفَّهَا فَاَوْثَقَتْهُ بِخِمَارِهَا فَنَزَعَتْ لَهٗ مِنَ الْمَاءِ فَغُفِرَ لَهَا بِذٰلِكَ قِیْلَ اِنَّ لَنَا فِی الْبَهَائِمِ اَجْرًا قَالَ فِیْ کُلِّ ذَاتِ کَبِدٍ رَطْبَةٍ اَجْرٌ۔[1] متفق علیه (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۶۸)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि एक ज़िनाकार औ़रत एक कुत्ते के पास से गुज़री जो एक कुंवें के मुंह पर ज़बान निकाले हुवे था और क़रीब था कि प्यास उस को मार डाले तो उस औ़रत ने अपना चर्मी मोज़ा उतारा और उस को अपनी ओढ़नी में बांध कर उस से पानी निकाल कर कुत्ते को पिला दिया बस इसी सबब से उस की मग़फ़िरत हो गई। किसी ने अ़र्ज़ किया कि क्या चौपायों के साथ भलाई करने में हमारे लिए अज्र है ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हर गीले जिगर वाले के साथ भलाई करने में अज्र है।

हदीस : 5

عَنْ جَابِرٍ مَنْ حَفَرَ مَاءً لَمْ یَشْرَبْ مِنْهُ کَبِدٌ حَرّٰی مِنْ اِنْسٍ وَّجِنٍّ وَلَا سَبُعٍ وَلَا طَائِرٍ اِلَّا اٰجَرَهُ اللّٰهُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ[2] (کنز العمال، ج۲۰، ص۲۶۲)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، الحدیث: ۱۹۰۲، ج۱، ص۳۶۱

2 .....کنز العمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث: ۴۳۱۸۲، ج۸، الجزء ۱۵، ص۳۳۹

www.dawateislami.net

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो शख़्स कुंवां खोदे तो कोई भी गर्म जिगर वाला ख़्वाह वोह इन्सान हो या जिन्न, दरिन्दा हो या परिन्दा जो भी उस का पानी पिएगा क़ियामत तक कुंवां खोदने वाले को सवाब मिलता रहेगा।

हदीस : 6

عَنْ جَابِرٍ ثَلٰثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ اَظَلَّهُ اللّٰهُ تَحْتَ عَرْشِهٖ يَوْمَ لَاظِلَّ اِلَّا ظِلُّهُ الْوُضُوْءُ عَلَى الْمَكَارِهِ وَالْمَشْيُ اِلَى الْمَسَاجِدِ فِي الظُّلَمِ وَاِطْعَامُ الْجَائِعِ (1)

(کنزالعمال، ج۲۰،ص۳۶۸)

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि तीन चीज़ें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** तआ़ला उस को अपने अ़र्श के नीचे उस दिन साया देगा जिस दिन उस के साए के सिवा कोई साया न होगा। तक्लीफ़ों के बा वुजूद वुज़ू करना और अन्धेरियों में पैदल मस्जिद तक जाना और भूके को खाना खिलाना।

हदीस : 7

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسًا اَوْ يَزْرَعُ زَرْعًا فَيَاْكُلُ مِنْهُ اِنْسَانٌ اَوْطَيْرٌ اَوْبَهِيْمَةٌ اِلَّا كَانَتْ لَهٗ صَدَقَةً۔ (2)

متفق علیه (مشکوٰۃ، ج۱،ص۱۶۸)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि हर वोह मुसलमान जो कोई दरख़्त लगाए या कोई खेत बोए फिर उस दरख़्त या खेत में से

1 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ،الباب الاول،الحدیث:۴۳۲۱۲،ج۸، الجزء۱۵،ص۳۴۲

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الحدیث:۱۹۰۰،ج۱، ص۳۶۱

कोई इन्सान या परिन्दा या चौपाया कुछ खा ले तो वोह उस मुसलमान के लिए सदक़ा होगा।

ह़दीस : 8

عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلُّ مَعْرُوْفٍ صَدَقَةٌ وَاِنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ اَنْ تَلْقٰى اَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلْقٍ وَاَنْ تُفْرِغَ مِنْ دَلْوِكَ فِىْ اِنَاءِ اَخِيْكَ۔رواه احمد والترمذى[1](مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۶۸)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि हर एह़सान यानी अच्छा काम सदक़ा है और अच्छे काम में से येह भी है कि तुम अपने भाई से हंस मुख चेहरे के साथ मुलाक़ात करो और येह भी है कि अपने डोल में से अपने भाई के बरतन में पानी डाल दो। इस ह़दीस को इमाम अह़मद और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 9

عَنْ اَبِىْ ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَبَسُّمُكَ فِىْ وَجْهِ اَخِيْكَ صَدَقَةٌ وَاَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ صَدَقَةٌ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ وَاِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِىْ اَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ وَنَصْرُكَ الرَّجُلَ الرَّدِىْءَ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ وَاِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ وَاِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِىْ دَلْوِ اَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ۔رواه الترمذى[2]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۶۹)

---

1 .....مشكاةالمصابيح، كتاب الزكاة،باب فضل الصدقة،الحديث:١٩١٠،ج١، ص٣٦٢

2 .....مشكاةالمصابيح، كتاب الزكاة،باب فضل الصدقة،الحديث:١٩١١،ج١، ص٣٦٢

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम्हारे भाई के रूबरू तुम्हारा मुस्कुरा देना सदक़ा है और तुम्हारा अच्छी बात के लिए हुक्म देना सदक़ा है और तुम्हारा बुरी बात से मन्अ़ करना सदक़ा है और भूल वाली ज़मीन में तुम्हारा किसी को रास्ता बता देना येह भी तुम्हारे लिए सदक़ा है और किसी कमज़ोर नज़र वाले शख़्स की मदद कर देना येह भी तुम्हारे लिए सदक़ा है और तुम्हारा किसी पथ्थर या कांटे या हड्डी को रास्ते से हटा देना येह भी तुम्हारे लिए सदक़ा है और तुम्हारा अपने डोल में से अपने भाई के डोल में पानी उंडेल देना येह भी सदक़ा है। इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 10

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ یَقُوْلُ مَا مِنْ مُسْلِمٍ کَسَا مُسْلِمًا ثَوْبًا اِلَّا کَانَ فِیْ حِفْظٍ مِّنَ اللّٰہِ مَادَامَ عَلَیْہِ مِنْہُ خِرْقَۃٌ۔ رواہ احمد والترمذی[1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۶۹)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि जो शख़्स किसी मुसलमान को कोई कपड़ा पेहना देगा तो जब तक एक टुकड़ा भी उस कपड़े का उस के बदन पर रहेगा उस वक़्त तक वोह शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की ह़िफ़ाज़त में रहेगा।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ ह़दीस नम्बर 1 से साबित होता है कि सदक़ा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के आतशे ग़ज़ब को बुझा देता है इसी लिए जब मुसलमानों पर वबाओं या बलाओं

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، الحدیث: ۱۹۲۰، ج۱، ص۳٦٤

या ख़त़रनाक बीमारियों या मुसीबतों का ह़म्ला हो तो मुसलमानों को चाहिए कि ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा करें ताकि ग़ज़बे इलाही के क़ेह्र से मेह़फ़ूज़ रहें और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 3 का ह़ासिले मत़लब येह है कि किसी भूके इन्सान या किसी भूके प्यासे जानवर को खिला पिला कर सेराब कर देना येह बेहतरीन क़िस्म का सदक़ा है और ह़दीस नम्बर 4 में भी इसी मज़मून का बयान है कि एक ज़िनाकार बदकार औ़रत की मग़फ़िरत मेह़ज़ इतनी सी बात पर हो गई कि उस ने एक कुत्ते की प्यास पर रेह़म खाया और अपने चमड़े के मोज़े को अपने दूपट्टे में बांध कर उस में कुंवें से पानी भर कर प्यासे कुत्ते को पिला कर सेराब कर दिया इन दोनों ह़दीसों का ह़ासिल येही है कि इन्सान और जानवर दोनों को खिला कर सेराब कर देना बड़े सवाब का काम है। इसी त़रह़ ह़दीस नम्बर 5 में कुंवां खोदने के सवाब का बयान है कि चरिन्दो परिन्द इन्सान व चौपाए जो भी इस कुंवें में से पानी पिएंगे उन सब का सवाब कुंवां वाले को मिलेगा।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 6 का ह़ासिल येह है कि तक्लीफ़ों यानी सख़्त सर्दी वग़ैरा में वुज़ू करना और अन्धेरी रातों में मस्जिद जा कर नमाज़ पढ़ना और किसी भूके को पेट भर कर खाना खिला देना येह तीनों अ़मल **अल्लाह** तआ़ला को इस क़दर मेह़बूब हैं कि इन आमाल के करने वाले को मैदाने क़ियामत की सख़्त धूप में **अल्लाह** तआ़ला अपने अ़र्श के नीचे साए में रखेगा जिस दिन कि कहीं उस के सिवा कोई साया नहीं होगा।

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 7 में दरख़्त लगाने और खेत बोने के सवाब का बयान है कि खेत का दाना और दरख़्त का फल जो चरिन्दो परिन्द या इन्सान खा लेगा वोह सब सदक़ा होगा और खेत बोने वाले और दरख़्त लगाने वाले

को इस का सवाब मिलेगा अगर्चे खेत और दरख़्त वाले की मर्ज़ी नहीं थी कि कोई खाए मगर फिर भी उस को सवाब मिलेगा।

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 8 व नम्बर 9 में सदक़े की चन्द आसान सूरतें बताई गई हैं कि जिन में न कोई ख़र्च है न मेह़नत मगर फिर भी इन मामूली कामों से एक मुसलमान मुफ़्त में सदक़े का सवाब ह़ासिल कर सकता है।

﴾6﴿ ह़दीस नम्बर 10 में किसी मुसलमान को कपड़ा पेहना देने के सवाब का बयान है कि जब तक उस कपड़े का एक टुकड़ा भी उस मुसलमान के बदन पर बाक़ी रहेगा **अल्लाह** तआ़ला की ह़िफ़ाज़त कपड़ा पेहनाने वाले के साथ रहेगी।

सदक़े की त़ाक़त

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो ज़मीन हिलने लगी तो **अल्लाह** तआ़ला ने पहाड़ों को पैदा फ़रमाया और उन पहाड़ों से ज़मीन का हिलना बन्द हो गया। तो पहाड़ों की मज़बूती और त़ाक़त से तअ़ज्जुब करते हुवे फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! क्या तेरी मख़्लूक़ में पहाड़ों से भी बढ़ कर कोई त़ाक़तवर चीज़ है ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि हां "लोहा" पहाड़ों से भी बढ़ कर त़ाक़तवर है। तो फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! क्या लोहे से भी बढ़ कर त़ाक़तवर कोई चीज़ है ? तो फ़रमाया कि हां "आग" लोहे से भी ज़्यादा त़ाक़तवर है। तो फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ हमारे परवरदगार عَزَّوَجَلَّ ! क्या आग से भी ज़्यादा कोई त़ाक़तवर चीज़ है ? तो फ़रमाया कि हां "पानी" आग से भी ज़्यादा त़ाक़तवर है। तो फिर फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तेरी मख़्लूक़ में पानी से भी ज़्यादा त़ाक़तवर कोई चीज़ है ? तो फ़रमाया कि हां "हवा" पानी से भी ज़्यादा त़ाक़तवर है। तो फिर फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ

रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तेरी मख़्लूक़ में हवा से भी ज़्यादा ताक़तवर कोई चीज़ है ? तो इरशाद फ़रमाया कि हां इब्ने आदम अपने दाहने हाथ से इस त़रह़ पोशीदा कर के सदक़ा दे कि बाएं हाथ से भी छुपाए येह हवा से भी ज़्यादा ताक़तवर है ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 170)

मत़लब येह है कि सदक़ा बहुत बड़ी ताक़त वाली चीज़ है कि इस से बड़ी बड़ी ख़त़रनाक बलाएं टल जाती हैं और बड़ी बड़ी मुश्किल मुरादें सदक़े की बदौलत ह़ासिल हो जाती हैं और बड़े बड़े अहम काम सदक़े की बरकत से पूरे हो जाते हैं ।

आफ़तें दूर होने का आसान विर्द

मौलाए काएनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सुलत़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम मुसीबत के वक़्त पढ़ लो ।" अ़र्ज़ किया, "ज़रूर इरशाद फ़रमाइए ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी जान क़ुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से सीखी हैं ।" इरशाद फ़रमाया : "जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस त़रह़ पढ़ो :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

"पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा ।" (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 80)

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، بابت: ۹۵، الحدیث: ۳۳۸۰، ج۵، ص۲۴۲

﴾15﴿ रोज़ा

रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा सिन 2 हिजरी में फ़र्ज़ हुवा। रोज़ा रखने पर भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत दी है। रोज़े के फ़ज़ाइल में चन्द ह़दीसें ह़स्बे ज़ैल हैं :

ह़दीस : 1

عَنْ سَهْلٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ فِى الْجَنَّةِ بَابًا يُقَالُ لَهُ الرَّيَّانُ يَدْخُلُ مِنْهُ الصَّائِمُوْنَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يَدْخُلُ مِنْهُ اَحَدٌ غَيْرُهُمْ يُقَالُ اَيْنَ الصَّائِمُوْنَ فَيَقُوْمُوْنَ لَا يَدْخُلُ مِنْهُ اَحَدٌ غَيْرُهُمْ فَاِذَا دَخَلُوْا اُغْلِقَ فَلَمْ يَدْخُلْ مِنْهُ اَحَدٌ[1]

(بخاری، ج۱، ص۲۵۴)

ह़ज़रते सह़ल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत की है कि आप ने फ़रमाया कि जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को "बाबुर्रय्यान" (सेराबी का दरवाज़ा) कहा जाता है इसी दरवाज़े से क़ियामत के दिन रोज़ादार जन्नत में दाख़िल होंगे रोज़ादारों के सिवा कोई भी इस दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल नहीं होगा। जब येह लोग दाख़िल हो चुकेंगे तो येह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा फिर इस के बाद कोई भी इस दरवाज़े से दाख़िल नहीं होगा।

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب الرّیان للصائمین، الحدیث ۱۸۹۶، ج۱، ص ۶۲۵

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلصِّیَامُ جُنَّةٌ فَلَا یَرْفُثْ وَلَا یَجْهَلْ فَاِنِ امْرَؤٌ قَاتَلَهٗ اَوْ شَاتَمَهٗ فَلْیَقُلْ اِنِّیْ صَائِمٌ مَرَّتَیْنِ وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَخُلُوْفُ فَمِ الصَّائِمِ اَطْیَبُ عِنْدَ اللّٰهِ مِنْ رِیْحِ الْمِسْكِ یَتْرُكُ طَعَامَهٗ وَشَرَابَهٗ وَشَهْوَتَهٗ مِنْ اَجْلِیْ اَلصِّیَامُ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ اَمْثَالِهَا[1]

(بخاری، ج۱، ص۲۵۴)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि रोज़ा ढाल है लेहाज़ा कोई रोज़ादार न फ़ोह़्श कलामी करे न जहालत की बात करे और अगर कोई इस से लड़े या गाली गलोच करे तो रोज़ादार को चाहिए कि उस से येह केह दे कि "मैं रोज़ादार हूं।" और उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि यक़ीनन रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुश्क की ख़ुश्बू से ज़्यादा अच्छी है, रोज़ादार अपने खाने पीने और अपनी ख़्वाहिश को मेरी वज्ह से छोड़ देता है रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उस का बदला दूंगा और हर नेकी का दस गुना सवाब है।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ قَالَ مَنْ صَامَ رَمَضَانَ اِیْمَانًا وَّاِحْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ[2] (بخاری، ج۱، ص۲۵۵)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि जो रमज़ान का रोज़ा ईमान रखते हुवे और सवाब त़लब करने की निय्यत से रखे उस के पेहले गुनाह (सग़ाइर) बख़्श दिए जाते हैं।

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحدیث:۱۸۹٤، ج۱، ص٦٢٤

2 .....صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب من صام رمضان...الخ، الحدیث:۱۹۰۱، ج۱، ص٦٢٦

www.dawateislami.net

ह़दीस : 4

عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ مَنْ صَامَ يَوْمًا تَطَوُّعًا لَمْ يُطَّلِعْ اَحَدٌ لَمْ يَرْضِ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى لَهٗ بِثَوَابٍ دُوْنَ الْجَنَّةِ [1] (کنزالعمال،ج۸،ص۲۸۹)

ह़ज़रते सह्ल बिन सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो एक दिन नफ़्ली रोज़ा इस त़रह़ रखे कि कोई इस पर मुत्त़लअ़ न हो तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत से कम कोई सवाब देने पर राज़ी ही नहीं होगा।

ह़दीस : 5

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ فَرَضَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهٗ تُفْتَحُ فِيْهِ اَبْوَابُ السَّمَاءِ وَتُغْلَقُ فِيْهِ اَبْوَابُ الْجَحِيْمِ وَتُغَلُّ فِيْهِ مَرَدَةُ الشَّيَاطِيْنِ لِلّٰهِ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ مَنْ حُرِمَ خَيْرَهَا فَقَدْ حُرِمَ۔ رواہ احمد والنسائی [2]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۷۳)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आ गया तुम्हारे पास रमज़ान जो बरकत वाला महीना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम लोगों पर इस का रोज़ा फ़र्ज़ किया है इस में आस्मान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और इस में सरकश शैत़ानों को जकड़ दिया जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए इस महीने में एक रात ऐसी है जो एक हज़ार महीनों से बेहतर है जो इस रात की भलाइयों

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الصوم،الباب الاول،الحدیث:۲۳۵۹۶،ج٤،الجزء۸، ص ۲۱۰

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الصوم،الفصل الثالث،الحدیث۱۹۶۲،ج۱،ص۳۷۲

से मेह़रूम रहा वोह यक़ीनन मेह़रूम ही रहा । इस ह़दीस को इमाम अह़मद और नसाई ने रिवायत किया है ।

रमज़ान के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुत़बए नबवी

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि शाबान के आख़िरी दिन में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम सह़ाबा के सामने एक ख़ुत़बा दिया वोह येह है :

يَـا اَيُّهَـا النَّاسُ قَدْ اَظَلَّكُمْ شَهْرٌ عَظِيْمٌ شَهْرٌ مُبَارَكٌ شَهْرٌ فِيْهِ لَيْلَةٌ خَيْرٌ مِّـنْ اَلْفِ شَهْرٍ جَعَلَ اللّٰهُ صِيَامَهٗ فَرِيْضَةً وَقِيَامَ لَيْلِهٖ تَطَوُّعًا مَنْ تَقَرَّبَ فِيْهِ بِخَصْلَةٍ مِّنَ الْخَيْرِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰى فَرِيْضَةً فِيْمَا سِوَاهُ وَمَنْ اَدّٰى فَرِيْضَةً فِيْهِ كَانَ كَمَنْ اَدّٰى سَبْـعِيْنَ فَرِيْضَةً فِيْمَا سِوَاهُ وَهُوَ شَهْرُ الصَّبْرِ وَالصَّبْرُ ثَوَابُهُ الْجَنَّةُ وَشَهْرُ الْمُوَاسَاةِ وَشَهْرٌ يُزَادُ فِيْهِ رِزْقُ الْمُؤْمِنِ مَنْ فَطَّرَ فِيْهِ صَائِمًا كَانَ لَهٗ مَغْفِرَةً لِذُنُوْبِهٖ وَعُتِقَ رَقَبَتُهٗ مِـنَ الـنَّارِ وَكَانَ لَهٗ مِثْلُ اَجْرِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يَنْتَقِصَ مِنْ اَجْرِهٖ شَيْءٌ قُلْنَا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ لَيْـسَ كُـلُّـنَـا نَجِدُ مَا نُفَطِّرُ بِهِ الصَّائِمَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْطِى اللّٰهُ هٰذَا الثَّوَابَ مَنْ فَطَّرَ صَائِمًا عَلٰى مَذْقَةِ لَـبَنٍ اَوْ تَمْرَةٍ اَوْشَرْبَةٍ مِّنْ مَاءٍ وَمَـنْ اَشْبَعَ صَائِمًا سَقَاهُ اللّٰهُ مِنْ حَوْضِىْ شَرْبَةً لَا يَظْمَأُ حَتّٰى يَدْخُلَ الْجَنَّةَ وَهُوَ شَهْرٌ اَوَّلُهٗ رَحْمَةٌ وَاَوْسَطُهٗ مَغْفِرَةٌ وَّاٰخِرُهٗ عِتْقٌ مِّنَ النَّارِ وَمَنْ خَفَّفَ عَنْ مَمْلُوْكِهٖ فِيْهِ غَفَرَ اللّٰهُ لَهٗ وَاَعْتَقَهٗ مِنَ النَّارِ[1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۷۴)

ऐ लोगो ! यक़ीनन तुम पर एक अ़ज़मत वाले बरकत वाले महीने ने साया डाला है, येह ऐसा महीना है कि इस में एक रात एक हज़ार महीनों से बेहतर है। **अल्लाह** तआ़ला ने इस के रोज़े को फ़र्ज़ और इस में रात के

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الصوم، الفصل الثالث، الحدیث ۱۹۶۵، ج۱، ص۳۷۲

क़ियाम को नफ़्ल बना दिया है। जो इस महीने में नफ़्ल की किसी ख़स्लत के साथ इबादत करे तो वोह उस शख़्स के मिस्ल होगा जो इस के सिवा किसी महीने में फ़र्ज़ अदा करे और जो इस महीने में कोई फ़र्ज़ अदा करेगा तो वोह उस शख़्स के मिस्ल होगा जो इस महीने के इलावा में सत्तर फ़र्ज़ अदा करे और येह सब्र का महीना है और सब्र का सवाब जन्नत है और येह ग़मख़्वारी करने का महीना है। इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है। जो इस महीने में किसी रोज़ादार को इफ़्तार करा दे तो उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और उस की गर्दन को जहन्नम से आज़ादी मिल जाएगी और उस को उस रोज़ादार के बराबर सवाब मिलेगा और रोज़ादार के सवाब में कोई कमी भी नहीं होगी। येह सुन कर हम सहाबियों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम में से हर शख़्स तो इतना खाना नहीं पाता कि हम उस से रोज़ादार को इफ़्तार करा सकें तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला येही सवाब उस शख़्स को भी देगा जो किसी रोज़ादार को एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से इफ़्तार करा देगा और जो किसी रोज़ादार को भर पेट खिला देगा तो **अल्लाह** तआला उस को मेरे हौज़ से ऐसा शरबत पिलाएगा कि वोह जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा होगा ही नहीं और येह ऐसा महीना है कि इस का इब्तिदाई हिस्सा रेहमत है और इस का दरमियानी हिस्सा मग़फ़िरत और इस का आख़िरी हिस्सा जहन्नम से आज़ादी है जो इस महीने में अपने ग़ुलाम से काम हल्का ले तो **अल्लाह** तआला उस को बख़्श देगा और उस को जहन्नम से आज़ाद कर देगा।

शबे क़द्र व ईदुल फ़ित्र

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जब शबे क़द्र आती है तो हज़रते

जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फ़रिश्तों की जमाअ़त में आते हैं और हर उस बन्दे पर जो खड़ा हो कर या बैठ कर ज़िक्रे इलाही करता हो उस पर रेह़मत नाज़िल करते हैं और जब ईदुल फ़ित्र का दिन आता है तो **अल्लाह** तआ़ला उन नेक बन्दों के ज़रीए़ अपने फ़रिश्तों पर फ़ख्र का इज़्हार फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाता है कि ऐ मेरे फ़रिश्तो ! बताओ उस मज़दूर की क्या जज़ा है जिस ने अपना काम पूरा पूरा कर लिया हो ? तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि उस की येही जज़ा है कि उस की पूरी पूरी मज़दूरी उस को दे दी जाए, तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दों और बन्दियों ने मेरे फ़र्ज़ को पूरा कर लिया फिर वोह निकल कर ब आवाज़े बुलन्द मुझ से दुआ़ मांग रहे हैं तो मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल और मेरे करम और मेरे बुलन्द मर्तबे की क़सम है कि मैं ज़रूर ज़रूर उन की दुआ़ओं को क़बूल करूंगा। फिर फ़रमाता है कि मेरे बन्दो ! अपने घरों को लौट जाओ, यक़ीन रखो कि मैं ने तुम लोगों को बख़्श दिया और तुम्हारी बुराइयों को ख़ूबियां बना दिया । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सब इस ह़ाल में घर को लौटते हैं कि उन की मग़फ़िरत हो चुकी होती है ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 182)

तशरीह़ात व फ़वाइद

शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में है। लेहाज़ा इन रातों में जाग कर और इ़बादत में मसरूफ़ रेह कर शबे क़द्र को तलाश करना चाहिए येह मुबारक रात जिस को मिल गई उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और उस को जन्नत नसीब होगी । واللہ تعالٰی اعلم

---

1 .....شعب الایمان،باب فی الصیام،الحدیث۳۷۱۷،ج۳،ص۳۴۳

﴾16﴿ ह़ज्जो उ़मरह

ह़ज्जो उ़मरह भी उन आमाल में से हैं जिन पर **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी है। चुनान्चे, ह़ज्जो उ़मरह के फ़ज़ाइल में चन्द ह़दीसें ह़स्बे ज़ैल हैं :

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنْ حَجَّ لِلّٰهِ فَلَمْ یَرْفُثْ وَلَمْ یَفْسُقْ رَجَعَ کَیَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ۔متفق علیه[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۲۱)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए ह़ज करे और जिमाअ़ के मुतअ़ल्लिक़ कोई बात न करे और कोई फ़िस्क़ न करे तो वोह लौटेगा उस दिन के मिस्ल कि उस की मां ने उस को जना था। येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلْعُمْرَةُ اِلَی الْعُمْرَةِ کَفَّارَةٌ لِمَا بَیْنَهُمَا وَالْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَیْسَ لَهٗ جَزَاءٌ اِلَّا الْجَنَّةُ[2]

(بخاری، ج۱، ص۲۳۸)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि एक उ़मरह दूसरे उ़मरह

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب المناسك،الفصل الاول،الحدیث:۲۵۰۷، ج۱، ص۴۶۷

2 .....صحیح البخاری، کتاب العمرۃ،باب العمرۃ...الخ،الحدیث:۱۷۷۳، ج۱، ص۵۸۶

तक इन दोनों के दरमियान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और ह़ज्जे मबरूर के लिए जन्नत के सिवा कोई जज़ा ही नहीं।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَنَّهٗ قَالَ اَلْحَاجُّ وَالْعُمَّارُ وَفْدُ اللّٰهِ اِنْ دَعَوْهُ اَجَابَهُمْ وَاِنِ اسْتَغْفَرُوْهُ غَفَرَ لَهُمْ [1] (مشکوۃ، ج۱، ص۲۲۳)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि ह़ज्जो उ़मरह करने वाले **अल्लाह** तआ़ला के मेहमान हैं अगर येह लोग उस से दुआ़ मांगेंगे तो वोह क़बूल करेगा और अगर उस से बख़्शिश त़लब करेंगे तो वोह बख़्श देगा।

ह़दीस : 4

عَنْ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ تَابِعُوْا بَیْنَ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ فَاِنَّهُمَا یَنْفِیَانِ الْفَقْرَ وَالذُّنُوْبَ كَمَا یَنْفِی الْكِیْرُ خَبَثَ الْحَدِیْدِ وَالذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَلَیْسَ لِلْحَجَّةِ الْمَبْرُوْرَةِ ثَوَابٌ اِلَّا الْجَنَّةَ [2]

(مشکوۃ، ج۱، ص۲۲۲)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ह़ज्जो उ़मरह यके बाद दीगर करते रहो, इस लिए कि येह दोनों मोह़ताजी और गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देते हैं जैसे कि भट्टी लोहे और सोने चांदी के मेल को दूर कर देती है और ह़ज के लिए जन्नत के सिवा कोई सवाब ही नहीं है।

1 .....مشكاةالمصابيح، كتاب المناسك،الفصل الثالث،الحديث:٢٥٣٦،ج١،ص٤٧٢

2 .....مشكاةالمصابيح، كتاب المناسك،الفصل الثانى،الحديث:٢٥٢٤،ج١، ص٤٧٠

ह़दीस : 5

عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا لَقِيْتَ الْحَاجَّ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَصَافِحْهُ وَمُرْهُ اَنْ يَّسْتَغْفِرَ لَكَ قَبْلَ اَنْ يَّدْخُلَ بَيْتَهٗ فَاِنَّهٗ مَغْفُوْرٌ لَّهٗ[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۲۳)

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जब तुम किसी ह़ज करने वाले से मुलाक़ात करो तो उस से सलाम व मुसाफ़ह़ा करो और उस से कहो कि वोह अपने घर में दाख़िल होने से पेहले तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करे क्यूंकि उस की मग़फ़िरत हो चुकी है।

ह़दीस : 6

عَنْ جَابِرٍ اِنَّ اللّٰهَ لَيُدْخِلُ بِالْحَجَّةِ الْوَاحِدَةِ ثَلٰثَةَ نَفَرٍ الْجَنَّةَ اَلْمَيِّتَ وَالْحَاجَّ وَالْمُنَفِّذَ لِذٰلِكَ[2] (کنز العمال، ج۵، ص۲)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, अल्लाह तआ़ला एक ह़ज के बदले में तीन शख़्सों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, मय्यित को और ह़ज करने वाले को और ह़ज का सामान करने वाले को।

ह़दीस : 7

عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ اَلْحَاجُّ فِىْ ضَمَانِ اللّٰهِ مُقْبِلًا وَّمُدْبِرًا فَاِنْ اَصَابَهٗ فِىْ سَفَرِهٖ تَعَبٌ اَوْنَصَبٌ غَفَرَ اللّٰهُ لَهٗ بِذٰلِكَ سَيِّئَاتِهٖ وَكَانَ لَهٗ بِكُلِّ قَدَمٍ يَرْفَعُهٗ اَلْفُ

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب المناسک، الفصل الثالث، الحدیث: ۲۵۳۸، ج۱، ص۴۷۲

2 .....کنز العمال، کتاب الحج والعمرۃ، الحدیث: ۱۱۷۸۷، ج۳، الجزء۵، ص۴

اَلْفِ دَرَجَةٍ فِی الْجَنَّةِ وَبِكُلِّ قَطْرَةٍ تُصِيْبُهٗ مِنْ مَطَرٍ اَجْرُ شَهِيْدٍ[1]

(کنزالعمال، ج۵،ص۷)

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हाजी जाते और लौटते में **अल्लाह** तआला की ज़मानत में है लेहाज़ा उस को अगर उस के सफ़र में कोई थकन या तक्लीफ़ पहुंची तो **अल्लाह** तआला उस के सबब से उस के गुनाहों को बख़्श देगा और उस के लिए हर उस क़दम के बदले जिस को वोह उठाता है दस लाख दरजे जन्नत में मिलेगा और बारिश के हर उस क़त़रे के बदले जो उस के ऊपर पड़ेगी एक शहीद का सवाब है।

ह़दीस : 8

عَنْ اَبِیْ سَعِيْدٍ مَنْ حَجَّ وَاعْتَمَرَ فَمَاتَ مِنْ سَنَتِهٖ دَخَلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ مَاتَ دَخَلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ غَزَا فَمَاتَ مِنْ سَنَتِهٖ دَخَلَ الْجَنَّةَ[2]

(کنزالعمال، ج۵،ص۷)

हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो शख़्स ह़ज्जो उ़मरह करे और उसी साल मर जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जो रोज़ा रखे रमज़ान का फिर मर जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जो जेहाद करे फिर उसी साल मर जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

ह़दीस : 9

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ مَنْ اَتٰى هٰذَا الْبَيْتَ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ۔[3] (کنزالعمال، ج۵،ص۴)

---

1 ..... کنزالعمال، کتاب الحج والعمرة، الحدیث ۱۱۸۳۶، ج۳، الجزء۵، ص۷

2 ..... کنزالعمال، کتاب الحج والعمرة، الحدیث ۱۱۸۴۲، ج۳، الجزء۵، ص۸

3 ..... کنزالعمال، کتاب الحج والعمرة، الحدیث ۱۱۸۲۵، ج۳، الجزء۵، ص۶

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो शख़्स इस बैतुल्लाह (काबा) के पास आया और कोई ज़िक्रे जिमाअ़ और गुनाह नहीं किया तो वोह हज से ऐसा हो कर लौटेगा जैसा कि उस की मां ने उस को जना था। (यानी गुनाहों से पाको साफ़ हो कर)

हदीस : 10

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَلَكَ زَادًا وَّرَاحِلَةً تُبَلِّغُهٗ اِلٰى بَيْتِ اللّٰهِ وَلَمْ يَحُجَّ فَلَا عَلَيْهِ اَنْ يَّمُوْتَ يَهُوْدِيًّا اَوْ نَصْرَانِيًّا وَذٰلِكَ اَنَّ اللّٰهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى يَقُوْلُ: وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا.[1]

(مشکوۃ، ج۱، ص۲۲۲، کنز العمال، ج۵، ص۱۱)

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स तोशा और ऐसी सुवारी का मालिक हो गया जो उसे बैतुल्लाह तक पहुंचा दे फिर भी उस ने हज नहीं किया तो कुछ फ़र्क़ नहीं है कि यहूदी होते हुवे मरे या नसरानी होते हुवे। (यानी उस की मौत और यहूदी व नसरानी की मौत में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वोह लोग भी हज नहीं करते और उस ने भी हज नहीं किया) और येह इस लिए कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि **अल्लाह** ही के लिए लोगों पर बैतुल्लाह का हज है जो बैतुल्लाह तक रास्ते की ताक़त रखे।

तशरीहात व फ़वाइद

﴾1﴿ हदीस नम्बर 2 और हदीस नम्बर 4 में "हज्जे मबरूर" की फ़ज़ीलत का ज़िक्र आया है हज्जे मबरूर किस को केहते हैं ? इस को मुलाहज़ा कीजिए :

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** के लिए लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके। (پ٤، ال عمرن:٩٧)

ومشكاة المصابيح، كتاب المناسك، الفصل الثانى، الحديث: ٢٥٢١، ج١، ص٤٧٠

ह़ज्जे मबरूर

वोह ह़ज है कि उस ह़ज के दौरान ह़ाजी कोई गुनाह का काम न करे और उस ह़ज में रियाकारी और शोहरत व नामवरी का कोई शाइबा भी न हो बल्कि ख़ालिसन लिवजहिल्लाह हो। ह़ज्जे मबरूर की बड़ी फ़ज़ीलत व अहम्मिय्यत है इसी लिए दौराने ह़ज भी बार बार येह दुआ़ पढ़ी जाती है कि

"اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ" (1)

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को ह़ज्जे मबरूर नसीब कर और गुनाह बख़्श दे और हमारी सई को मक़्बूल फ़रमा और हमें ऐसी तिजारत नसीब कर जिस में हरगिज़ घाटा न हो।

﴾2﴿ ह़ज सिन 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुवा, ह़ज का इन्कार करने वाला काफ़िर है और कुदरत होते हुवे ह़ज न करने वाला बहुत बड़ा गुनहगार क़ेह्रे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार है। ह़ज्जो उ़मरह के मुफ़स्सल मसाइल व ज़रूरियात हमारी किताब "जन्नती ज़ेवर" में पढ़िए।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 10 में ह़ज छोड़ने वाले के लिए बहुत ही शदीद वईद आई है कि कुदरत होते हुवे जिस ने ह़ज नहीं किया तो उस की मौत और यहूदी व नसरानी की मौत में कुछ फ़र्क़ नहीं है कि वोह लोग भी ह़ज नहीं करते और इस ने भी ह़ज नहीं किया। (توبہ نعوذ باللہ)

ह़ज के फ़ज़ाइल और इस के अज्रो सवाब के बारे में इस उ़नवान की मज़्कूरा दस ह़दीसें मज़्कूर हो चुकीं। इन के इलावा भी दूसरी बहुत सी ह़दीसें हैं जो ह़ज के फ़ज़ाइल और इस के अज्रो सवाब के बारे में ब कसरत कुतुबे अह़ादीस में मौजूद है। **अल्लाह** तआ़ला अपना घर और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर दिखाए। (आमीन)

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب اسرار الحج، الباب الثانی، ج ۱، ص ۳۳۶

www.dawateislami.net

﴾17﴿ अ़शरए ज़ुल हिज्जा

अ़शरए ज़ुल हिज्जा के फ़ज़ाइल में बुख़ारी शरीफ़ की मज़्कूरा ज़ैल ह़दीस बहुत मश्हूर और बड़ी मुअस्सिर है :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ اَيَّامٍ اَلْعَمَلُ الصَّالِحُ فِيْهِنَّ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ هٰذِهِ الْاَيَّامِ الْعَشَرَةِ قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَا الْجِهَادُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَالَ وَلَا الْجِهَادُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِلَّا رَجُلٌ خَرَجَ بِنَفْسِهٖ وَمَالِهٖ فَلَمْ يَرْجِعْ مِنْ ذٰلِكَ بِشَیْءٍ ۔رواه البخاری[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۲۸)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी दिनों में अ़मले सालेह़ **अल्लाह** तआ़ला को इतना ज़्यादा पसन्द नहीं जितने कि इन दस दिनों (अ़शरए ज़ुल हिज्जा) में। सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कहा कि क्या जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी इस से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं ? तो फ़रमाया कि हां ! जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी इन दिनों में अ़मले सालेह़ से ज़्यादा **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक मेह़बूब नहीं, हां लेकिन वोह मर्द जो अपनी जान और माल ले कर जेहाद में निकला और जानो माल में से कोई भी चीज़ वापस ले कर नहीं लौटा। इस ह़दीस को बुख़ारी ने रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ मत़लब येह है कि साल भर के तमाम दिनों में ज़ुल हिज्जा के दस दिनों में अ़मले सालेह़ जितना **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है साल भर के

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب فی الاضحیۃ، الحدیث: ۱۴۶۰، ج۱، ص۲۸۱

तमाम दिनों में कोई अ़मल उतना पसन्द नहीं येह सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करना भी इन दिनों में अ़मले सालेह़ से ज़्यादा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं ? तो इरशाद फ़रमाया कि हां जेहाद भी दूसरे दिनों में करना इन दस दिनों में अ़मले सालेह़ करने से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं । हां अगर कोई मुजाहिद अपनी जानो माल ले कर जेहाद के लिए निकला और फिर ख़ुद शहीद हो गया और उस का माल कुफ़्फ़ार ने लूट लिया कि वोह अपने घर जानो माल में से कुछ ले कर नहीं लौटा तो बेशक उस मुजाहिद का जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह तो अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा में अ़मले सालेह़ करने से अफ़्ज़ल है वरना किसी और मुजाहिद का जेहाद अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा में अ़मले सालेह़ करने से बेहतर और बढ़ कर नहीं हो सकता ।

﴾2﴿ उ़लमाए किराम का इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि ज़ुल ह़िज्जा के दस दिन अफ़्ज़ल हैं या रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिन ज़्यादा अफ़्ज़ल हैं, चुनान्चे आ़लिमों ने अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा को अफ़्ज़ल माना और कुछ एह्ले इ़ल्म ने रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे को अफ़्ज़ल बताया है लेकिन ह़ज़रते शैख़ मुह़क़्क़िक़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तेह़रीर फ़रमाया कि

وَالْمُخْتَارُ اَنَّ اَيَّامَ هٰذِهِ الْعَشَرَةِ اَفْضَلُ لِوُجُوْدِ يَوْمِ عَرَفَةَ فِيْهَا وَلَيَالِيْ عَشَرَةَ رَمَضَانَ اَفْضَلُ لِوُجُوْدِ لَيْلَةِ الْقَدْرِ فِيْهَا۔[1] (حاشیہ مشکوٰۃ، ص۱۲۸)

और मुख़्तार मज़हब येह है कि अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के दिन रमज़ान के आख़िरी अ़शरे के दिनों से अफ़्ज़ल हैं क्यूंकि इन्ही दिनों में यौमे अ़रफ़ा भी है और रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की रातें ज़ुल ह़िज्जा के अ़शरे से अफ़्ज़ल हैं क्यूंकि इन्ही रातों में शबे क़द्र है ।

---

1 .....حاشية مشكاة، حاشية ١، ص١٢٨

बहर ह़ाल अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा आमाले सालेह़ा करने का बेहतरीन वक़्त है इस लिए इन दिनों में अ़मले सालेह़ करना जन्नत में ले जाने वाले आमाल में से है और ख़ुदावन्दे कुद्दूस को बहुत ज़्यादा मेह़बूब है, चुनान्चे, एक ह़दीस में येह भी आया है कि

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ज़ुल ह़िज्जा के दस दिनों में इ़बादत करना जिस क़दर **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है और किसी दिनों में इ़बादत करना इस क़दर पसन्द नहीं। अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़े के बराबर है और अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा की हर रात का क़ियाम शबे क़द्र के क़ियाम के बराबर है।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 128)

﴾18﴿ क़ुरबानी

क़ुरबानी के फ़ज़ाइल में तिरमिज़ी व इब्ने माजा की येह ह़दीस बहुत ज़्यादा इ़ब्रत ख़ेज़ है इस को बग़ौर पढ़ कर इस पर अ़मल कर के जन्नत में जाने का सामान कीजिए।

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عَمِلَ ابْنُ اٰدَمَ مِنْ عَمَلٍ يَوْمَ النَّحْرِ اَحَبُّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ اِهْرَاقِ الدَّمِ وَاِنَّهٗ لَيَأْتِىْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِقُرُوْنِهَا وَاَشْعَارِهَا وَاَظْلَافِهَا وَاِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ مِنَ اللّٰهِ بِمَكَانٍ قَبْلَ اَنْ يَّقَعَ بِالْاَرْضِ فَطِيْبُوْا بِهَا نَفْسًا۔رواه الترمذى وابن ماجه[2]

ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि यौमुन्नह़्र के दिन इब्ने आदम का कोई अ़मल ख़ून बहाने (क़ुरबानी करने) से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی العمل...الخ، الحدیث ۷۵۸، ج۲، ص ۱۹۲

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب فی الاضحیۃ، الحدیث: ۱۴۷۰، ج۱، ص ۲۸۳

प्यारा नहीं है और बेशक वोह क़ियामत के दिन अपने सींगों और बालों और खुरों के साथ आएगा और बेशक कुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पेहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में मक़्बूलिय्यत की जगह में पड़ जाता है लेहाज़ा तुम लोग इस को खुशदिली के साथ करो। इस ह़दीस को तिरमिज़ी व इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

तशरीहात व फ़्वाइद

ह़दीसे मज़्कूर का मत़लब येह है कि यौमुन्नह्र यानी ज़ुल ह़िज्जा की दस तारीख़ ईदे अज़्ह़ा के दिन अल्लाह तआ़ला को मुसलमान का कोई अ़मल भी कुरबानी से ज़्यादा मेह़बूब और प्यारा नहीं है और कुरबानी के जानवर का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पेहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरबार में मक़्बूलिय्यत के मक़ाम में पहुंच जाता है। चुनान्चे, येह मस्अला है कि कुरबानी के जानवर को तोल कर अगर इस के वज़्न के बराबर चांदी या सोना बक़रह ईद के दिन ख़ैरात कर दें जब भी इतना सवाब नहीं मिलेगा जितना कि उस जानवर की कुरबानी में सवाब मिलेगा लेहाज़ा ऐ मुसलमानो ! तुम्हें चाहिए कि कुरबानी को निहायत ही ख़ुशी और ख़ुशदिली के साथ किया करो।

﴾19﴿ तिलावते कुरआने मजीद

ह़दीस : 1

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْاٰنِ اِقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِى الدُّنْيَا فَاِنَّ مَنْزِلَكَ عِنْدَ اٰخِرِ اٰيَةٍ تَقْرَأُهَا۔رواه احمد والترمذى وابوداود والنسائى[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۸۶)

1 .....مشكاةالمصابيح، كتاب فضائل القرآن، الفصل الثانى، الحديث:٢١٣٤، ج١، ص٤٠٢

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि कुरआन पढ़ने वाले से (जन्नत में) कहा जाएगा कि तू कुरआन पढ़ता जा और ऊपर चढ़ता चला जा और जिस त़रह़ तू दुन्या में ठेहर ठेहर कर पढ़ता था इसी त़रह़ ठेहर ठेहर कर पढ़ जिस जगह तू आख़िरी आयत पढ़ेगा वोही तेरी मन्ज़िल है। इस ह़दीस को इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व अबू दावूद व नसाई ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 2

عَنْ مُعَاذِنِ الْجُهَنِّيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَعَمِلَ بِمَا فِيْهِ أُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجًا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ضَوْءُهٗ اَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ فِيْ بُيُوْتِ الدُّنْيَا لَوْ كَانَتْ فِيْكُمْ فَمَا ظَنُّكُمْ بِالَّذِيْ عَمِلَ بِهٰذَا۔ رواه احمد وابوداود [1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۸۶)

ह़ज़रते मुआ़ज़ जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स कुरआन को पढ़े और कुरआन के अह़काम पर अ़मल करे तो उस के मां बाप को क़ियामत के दिन ऐसा ताज पेहनाया जाएगा जिस की रौशनी दुन्या में सूरज की रौशनी से ज़्यादा अच्छी होगी तो तुम्हारा उस शख़्स के बारे में क्या गुमान है जो कुरआन पर अ़मल करे। इस ह़दीस को इमाम अह़मद व अबू दावूद ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 3

عَنْ اَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ اَرَادَ اَنْ يَّنَامَ عَلٰى فِرَاشِهٖ فَنَامَ عَلٰى يَمِيْنِهٖ ثُمَّ قَرَءَ مِائَةَ مَرَّةٍ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ اِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثانی، الحدیث ۲۱۳۹، ج۱، ص۴۰۳

يَقُوْلُ لَهُ الرَّبُّ يَاعَبْدِىْ اُدْخُلْ عَلٰى يَمِيْنِكَ الْجَنَّةَ۔رواه الترمذى[1]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۸۸)

हज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत किया है कि जो शख़्स अपने बिछौने पर सोने का इरादा करे तो अपनी दाहनी करवट पर सोए फिर एक सौ मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े तो क़ियामत के दिन उस से **अल्लाह** तआला फ़रमाएगा कि ऐ मेरे बन्दे ! तू अपनी दाहनी त़रफ़ से जन्नत में दाख़िल हो जा । इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है ।

ह़दीस : 4

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ اَنَّ النَّبِىَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلًا يَقْرَأُ قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ فَقَالَ وَجَبَتْ قُلْتُ وَمَا وَجَبَتْ فَقَالَ الْجَنَّةُ۔رواه مالك والترمذى والنسائى[2] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۸۸)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने रिवायत किया है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मर्द को قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ते हुवे सुना तो आप ने फ़रमाया कि वाजिब हो गई । तो मैं ने कहा कि क्या चीज़ वाजिब हो गई ? तो आप ने फ़रमाया कि जन्नत वाजिब हो गई । इस ह़दीस को इमाम मालिक और तिरमिज़ी और नसाई ने रिवायत किया है ।

ह़दीस : 5

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ

---

1 .....مشكاةالمصابيح، كتاب فضائل القرآن،الفصل الثانى،الحديث:٢١٥٩،ج١، ص٤٠٦

2 .....مشكاةالمصابيح، كتاب فضائل القرآن،الفصل الثانى،الحديث:٢١٦٠،ج١، ص٤٠٦

سَلَّمَ مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ فَلَهٗ بِهٖ حَسَنَةٌ وَالْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا لَا أَقُوْلُ "الم" حَرْفٌ بَلْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ۔رواه الترمذی والدارمی[1]

(مشکوٰۃ، ج۱،ص۱۸۲)

हज़रते इब्ने मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब में से एक हर्फ़ को पढ़ा उस को एक नेकी मिलेगी और येह एक नेकी दस नेकियों के बराबर होगी। मैं नहीं केहता कि "الم" एक हर्फ़ है बल्कि الف एक हर्फ़ है और لام एक हर्फ़ है और ميم एक हर्फ़ है। इस हदीस को तिरमिज़ी व दारिमी ने रिवायत किया है।

हदीस : 6

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْكُمْ بِتَعْلِيْمِ الْقُرْآنِ وَكَثْرَةِ تِلَاوَتِهٖ تَنَالُوْنَ بِهِ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى وَكَثْرَةَ عَجَائِبِهٖ فِى الْجَنَّةِ[2]

(کنز العمال، ج۲،ص۱۸۶)

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कुरआन की तालीम और ब कसरत इस की तिलावत को अपने लिए लाज़िम कर लो इस के ज़रीए तुम बड़े बड़े दरजात और इस के अ़जाइब की कसरत को जन्नत में पा जाओगे।

तशरीहात व फ़वाइद

﴾1﴿ अहादीसे मज़्कूरए बाला से साबित होता है कि कुरआने मजीद की तिलावत करने वाला खुसूसन जब कि वोह कुरआनी अहकाम पर

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثانی، الحدیث ۲۱۳۷، ج۱، ص ۴۰۲

2 .....کنز العمال، کتاب الاذکار، الحدیث: ۲۳۶۵، ج۱، ص۲۶۶ بتقدیم وتاخیر فی بعض الفاظ

www.dawateislami.net

अ़मल भी करता हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से उस के लिए जन्नत की ख़ुश ख़बरी है।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 2 से येह मालूम हुवा कि न सिर्फ़ कुरआन पढ़ने वाले ही के लिए जन्नत की गारन्टी है बल्कि उस के मां बाप को भी **अल्लाह** तआ़ला बिहिश्ती ताज पेहना कर उन दोनों को भी जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 3 से मालूम हुवा कि कुरआन की एक सूरह قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ को बिस्तर पर सोते वक़्त पढ़ने वाले को जन्नत की बिशारत मिल गई तो ज़ाहिर है कि जो पूरा कुरआने मजीद अपनी ज़िन्दगी में सेंकड़ों बार ख़त्म करेगा उस को जन्नत के दरजात में से कितना बड़ा दरजा मिलेगा। اَللّٰهُ اَكْبَر , اَللّٰهُ اَكْبَر।

﴾4﴿ कुरआने मजीद की तिलावत के आदाब में से येह बहुत ही अहम है कि कुरआने मजीद को बा वुज़ू कुरआने मजीद में देख कर पढ़े और इस तवज्जोह और तसव्वुर के साथ तिलावत करे कि मैं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़रमानों को पढ़ रहा हूं और गोया ख़ुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ मुझ से कलाम फ़रमा रहा है। दिल में **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत और बुज़ुर्गी का तसव्वुर जमाए निहायत ही तवाज़ोअ़ व इन्किसारी और आ़जिज़ी के साथ हर आयत को पढ़े। वाज़ेह़ रहे कि कुरआने मजीद को देख कर पढ़ना ज़बानी पढ़ने से ज़्यादा अफ़्ज़ल है क्यूंकि देख कर पढ़ने में आंखों और ज़बान दोनों से नेकी कमाना है इस लिए कि जिस त़रह़ कुरआन को पढ़ना इबादत है इसी त़रह़ कुरआन के हुरूफ़ को देखना भी इबादत है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾20﴿ मदीनए तय्यिबा की सुकूनत

عَنْ رَجُلٍ مِّنْ اٰلِ الْخَطَّابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ زَارَنِيْ مُتَعَمِّدًا كَانَ فِيْ جِوَارِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَنْ سَكَنَ الْمَدِيْنَةَ وَصَبَرَ عَلٰى بَلَائِهَا كُنْتُ لَهٗ شَهِيْدًا وَّشَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمَنْ مَاتَ فِيْ اَحَدِ الْحَرَمَيْنِ بَعَثَهُ اللّٰهُ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ [1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۴۰)

आले ख़त्ताब के एक मर्द से रिवायत है, इन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत किया है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स बिल क़स्द मेरी ज़ियारत को आया वोह क़ियामत के दिन मेरी मुहाफ़ज़त में रहेगा और जो शख़्स मदीने में सुकूनत करेगा और मदीने की तकालीफ़ पर सब्र करेगा तो मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा और उस की शफ़ाअ़त करूंगा और जो शख़्स ह़रमैन (मक्का, मदीना) में से किसी एक में मरेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को इस ह़ाल में क़ब्र से उठाएगा कि वोह क़ियामत के ख़ौफ़ से अम्न में रहेगा।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ मदीनए मुनव्वरा में ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक सुकूनत रखना और वहां की तकालीफ़ पर सब्र करना यहां तक कि इस मुक़द्दस शह्र में वफ़ात हो जाए। येह भी जन्नत दिलाने वाले आमाल में से एक बहुत ही उम्मीद अफ़्ज़ा अ़मल है। चुनान्चे, एक दूसरी ह़दीस में आया है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो मदीने में मर सके उस को चाहिए कि वोह मदीने ही में मरे इस लिए कि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।[2] इस ह़दीस को इमाम अह़मद और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 240)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب المناسك، الفصل الثالث، الحدیث: ۲۷۵۵، ج۱، ص۵۱۲

2 .....سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینة، الحدیث: ۳۹۴۳، ج۵، ص۴۸۳

www.dawateislami.net

﴾2﴿ बिल क़स्द और अ़मदन ज़ियारत करने का येह मत़लब है कि ख़ास ज़ियारत ही की निय्यत से मदीनए त़य्यिबा का सफ़र किया हो। ऐसा न हो कि किसी दूसरे काम मसलन तिजारत वग़ैरा की निय्यत से मदीनए मुनव्वरा जाए और ज़िमनी त़ौर पर ज़ियारत भी कर ले या बिल क़स्द और अ़मदन का मत़लब येह है कि बिल्कुल ही इख़्लास के साथ ज़ियारत करे और बजुज़ त़लबे सवाब के और कोई दूसरी निय्यत या ग़रज़ मक़्सूद न हो।

बाज़ आ़रिफ़ीन के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि वोह ह़ज के लिए गए तो ह़ज के बाद मदीनए त़य्यिबा की ज़ियारत के लिए नहीं गए और येह कहा कि येह सफ़र तो हम ने ह़ज की निय्यत से किया है तो सफ़रे ह़ज के ताबेअ़ बना कर ज़िमनी त़ौर पर हम रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत नहीं करेंगे बल्कि घर जा कर फिर ख़ास रौज़ए अन्वर की ज़ियारत की निय्यत से दूसरा सफ़र कर के हम रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत करेंगे ताकि बिल क़स्द और अ़मदन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के लिए हमारा जाना हो।[1] (ह़ाशियए मिश्कात, स. 240 ब ह़वाला मिरक़ात)

﴾21﴿ जेहाद

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللّٰهِ اَنْ يُّدْخِلَهُ الْجَنَّةَ جَاهَدَ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْجَلَسَ فِیْ اَرْضِهِ الَّتِیْ وُلِدَ فِيْهَا قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَفَلَا نُبَشِّرُ النَّاسَ قَالَ اِنَّ فِی الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ اَعَدَّهَا اللّٰهُ لِلْمُجَاهِدِيْنَ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ[2] (بخاری، ج۱، ص۳۹۱)

---

1 .....مرقاة المفاتيح، كتاب المناسك، تحت الحديث: ۲۷۵۵، ج۵، ص ۶۳۱

2 .....صحيح البخاری، كتاب الجهاد والسير، باب درجات...الخ، الحديث: ۲۷۹۰، ج۲، ص ۲۵۰

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाया और नमाज़ क़ाइम की और रमज़ान का रोज़ा रखा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल कर दे ख़्वाह वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करे या जिस ज़मीन में वोह पैदा हुवा वहीं बैठा रहे। येह सुन कर सहाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम येह ख़ुश ख़बरी लोगों को न सुना दें ? तो आप ने फ़रमाया कि बिलाशुबा जन्नत में एक सौ दरजात ऐसे हैं जिन को अल्लाह तआला ने उन्ही लोगों के लिए तय्यार कर रखा है जो लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करने वाले हैं और इन दरजात के दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितनी कि आस्मानो ज़मीन के दरमियान दूरी है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنْتَدَبَ اللّٰهُ لِمَنْ خَرَجَ فِیْ سَبِیْلِهٖ لَا یُخْرِجُهٗ اِلَّا اِیْمَانٌ بِیْ وَتَصْدِیْقٌ بِرُسُلِیْ اَنْ اُرْجِعَهٗ بِمَا نَالَ مِنْ اَجْرٍ وَّغَنِیْمَةٍ اَوْاُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ۔متفق علیه[1](مشکوٰۃ،ج۲،ص۳۲۹)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने उस शख़्स के लिए ज़िम्मेदारी क़बूल कर ली है कि जो मुझ पर ईमान लाते हुवे और मेरे रसूलों की तस्दीक़ करते हुवे जेहाद में निकला उस को मैं या तो सवाब और माले ग़नीमत दे कर उस के घर लौटाऊंगा या उस को जन्नत में दाख़िल कर दूंगा। येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है।

1 .....مشکاۃالمصابیح،کتاب الجهاد،الفصل الاول،الحدیث:۳۷۸۹،ج۲،ص۲۳

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ مَرَّ رَجُلٌ مِّنْ اَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشِعْبٍ فِيْهِ عُيَيْنَةٌ مِّنْ مَّاءٍ عَذْبَةٌ فَاَعْجَبَتْهُ فَقَالَ لَوِ اعْتَزَلْتُ النَّاسَ فَاَقَمْتُ فِیْ هٰذَا الشِّعْبِ فَذُكِرَ ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَا تَفْعَلْ فَاِنَّ مَقَامَ اَحَدِكُمْ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَفْضَلُ مِنْ صَلٰوتِهٖ فِیْ بَيْتِهٖ سَبْعِيْنَ عَامًا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ الْجَنَّةَ اُغْزُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ قَاتَلَ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَوَاقَ نَاقَةٍ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ۔رواه الترمذی[1](مشکوٰۃ،ج۲،ص۳۳۲)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक मर्द का एक ऐसी घाटी में गुज़र हुवा कि उस में मीठे पानी का एक चश्मा था। जिस ने उस को तअ़ज्जुब में डाल दिया तो वोह केहने लगा कि काश ! मैं तमाम लोगों से अलग थलग हो कर इसी घाटी में मुक़ीम हो जाता जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस शख़्स का ज़िक्र किया गया तो आप ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तुम ऐसा मत करो इस लिए कि तुम लोगों में से किसी का जेहाद में एक पड़ाव करना अपने घर में रेह कर सत्तर बरस नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा अफ़्ज़ल है। क्या तुम लोग इस को पसन्द नहीं करते कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा कर तुम्हें अपनी जन्नत में दाख़िल कर दे। तुम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करते रहो, जो शख़्स ऊंटनी दोहने की मुद्दत भर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जंग करेगा तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाएगी। इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

---

1 .....مشکاۃالمصابیح،کتاب الجھاد،الفصل الثانی،الحدیث:۳۸۳۰،ج۲،ص۳۰

हदीस : 4

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَوْلَا اَنَّ رِجَالًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ لَا تَطِیْبُ اَنْفُسُهُمْ اَنْ یَّتَخَلَّفُوْا عَنِّیْ وَلَا اَجِدُ مَا اَحْمِلُهُمْ عَلَیْهِ مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِیَّةٍ تَغْزُوْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَوَدِدْتُ اَنْ اُقْتَلَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ اُحْیٰی ثُمَّ اُقْتَلُ ثُمَّ اُحْیٰی ثُمَّ اُقْتَلُ ثُمَّ اُحْیٰی ثُمَّ اُقْتَلُ۔متفق علیه[1](مشکوٰة،ج۲،ص۳۲۹)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि कुछ मोमिन मर्द ऐसे हैं कि मुझ से बिछड़ जाना उन के दिलों को अच्छा नहीं लगता और मैं इतनी सुवारियां नहीं पाता कि उन को सुवार करा दूं। अगर येह लोग न होते तो मैं कभी किसी ऐसे लश्कर से पीछे न रेह जाता जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करने जा रहा हो। और मुझे उस ज़ात की क़सम है कि जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि यक़ीनन मेरी येह तमन्ना है कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर क़त्ल किया जाऊं फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर क़त्ल किया जाऊं। येह बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है।

हदीस : 5

عَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِیِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ رِبَاطُ یَوْمٍ وَ لَیْلَةٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ خَیْرٌ مِّنْ صِیَامِ شَهْرٍ وَّقِیَامِهٖ وَاِنْ مَاتَ جَرٰی عَلَیْهِ عَمَلُهُ الَّذِیْ کَانَ یَعْمَلُهٗ وَاُجْرِیَ عَلَیْهِ رِزْقُهٗ وَاَمِنَ الْفَتَّانَ۔رواه مسلم[2](مشکوٰة،ج۲،ص۳۲۹)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الاول،الحدیث:۳۷۹۰،ج۲،ص۲۳

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الاول،الحدیث:۳۷۹۳،ج۲،ص۲٤

www.dawateislami.net

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि एक दिन और एक रात जेहाद में घोड़ा बांधना एक महीने के रोज़ों और रात में नमाज़ों से बेहतर है और अगर वोह जेहाद में मर गया तो उस का वोह अ़मल जो वोह करता था जारी रखा जाएगा और उस की रोज़ी जारी रखी जाएगी और वोह तमाम फ़ितनों में डालने वालों (शैत़ान व दज्जाल वग़ैरा) से बे ख़ौफ़ कर दिया जाएगा। इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 3 से मालूम हुवा कि मुसलमान अपने घर में बैठ कर चाहे जितनी इ़बादत ज़्यादा कर सके करे मगर वोह कभी हरगिज़ हरगिज़ किसी मुजाहिद के बराबर सवाब ह़ासिल नहीं कर सकता। क्यूंकि मुजाहिद जेहाद के सफ़र में कहीं आते जाते किसी मन्ज़िल पर सिर्फ़ पड़ाव कर ले और कोई इ़बादत न करे फिर भी उस को सत्तर बरस के लगातार दिन के रोज़ों और रात भर की नमाज़ों से बढ़ कर सवाब मिलेगा और ऊंटनी दोहने की मुद्दत भर यानी दस या पन्दरह मिनट तक जो जेहाद में जंग करेगा उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है سُبْحَانَ اللّٰہ , سُبْحَانَ اللّٰہ बड़ा रुतबा है मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह का। ख़ुदावन्दे करीम हर मुसलमान को **अल्लाह** की राह में जेहाद की करामत और तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

﴾2﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 4 से ज़ाहिर होता है कि ख़ुदा के मेह़बूब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जेहाद में शहीद होने की किस क़दर ज़्यादा तमन्ना थी कि आप अ़लल एलान फ़रमाते हैं कि मेरी दिली तमन्ना येही है कि मैं तीन मरतबा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाऊं और तीन मरतबा ज़िन्दा किया जाऊं और फिर चौथी मरतबा क़त्ल किया जाऊं तो

ज़िन्दा न किया जाऊं क्यूंकि चौथी मरतबा क़त्ल होने के बाद ज़िन्दा होने की हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमन्ना ज़ाहिर नहीं फ़रमाई।

﴾3﴿ हदीस नम्बर 5 में मुजाहिद के अ़मल जारी रेहने का येह मत़लब है कि मुजाहिद अपनी ज़िन्दगी में नमाज़ व रोज़ा और दूसरी क़िस्म क़िस्म की इबादतें जो किया करता था अगर ह़ालते जेहाद में वोह अगर्चे अपने बिस्तर पर मर गया। मगर चूंकि जेहाद के दौरान उस की मौत होती है इस लिए उस को येह करामत नसीब होगी कि वोह अपनी ज़िन्दगी में जितनी इबादतें किया करता था अब वोह मर गया और कोई इबादत भी नहीं करता मगर उस के नामए आमाल में उन सब इबादतों का सवाब रोज़ाना लिखा जाएगा जो वोह किया करता था और बराबर जन्नत में उस की रोज़ी उस को मिलती रहेगी और **अल्लाह** तआ़ला उस को तमाम फ़ितने में डालने वालों यानी शैत़ान, दज्जाल, वग़ैरा से बे ख़ौफ़ कर देगा और क़ब्र में मुन्करो नकीर के सुवाल व जवाब की आज़माइश और क़ियामत के ज़लज़ले की हौलनाकियों वग़ैरा की तमाम आज़माइशों और इम्तिह़ानों से वोह बे ख़ौफ़ हो जाएगा। واللہ تعالٰی اعلم

बहर ह़ाल इन सब ह़दीसों का ह़ासिल येह है कि जेहाद जन्नत में ले जाने वाला एक बहुत ही आला दरजे का अ़मल है और दर ह़क़ीक़त जेहाद बिहिश्त की कुन्जियों में से एक बड़ी कुन्जी और जन्नत की सड़कों में से बहुत बड़ी सड़क बल्कि शाह राह है।

﴾22﴿ शहादत

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में शहीद हो जाना येह भी जन्नत में ले जाने वाले आमाल में से एक बहुत आला और इत़मीनान बख़्श अ़मले सालेह़ है। क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने शहीदों के लिए ह़याते जावेदानी की बिशारत और जन्नतुल फ़िरदौस की ख़ुश ख़बरी दी है। शहादत के फ़ज़ाइल में सेंकड़ों ह़दीसों में से येह चन्द ह़दीसें दर्जे ज़ैल हैं इन को बग़ौर

पढ़िए और अपने अन्दर जोशे जेहाद और शहादत का जज़्बा पैदा कर के ह़याते जावेदानी, बागे़ बिहिश्त की शादमानी और जन्नती ज़िन्दगानी की करामत ह़ासिल करने की कोशिश कीजिए।

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ یَضْحَكُ اللّٰهُ تَعَالٰی اِلٰی رَجُلَیْنِ یَقْتُلُ اَحَدُهُمَا الْاٰخَرَ یَدْخُلَانِ الْجَنَّةَ یُقَاتِلُ هٰذَا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیُقْتَلُ ثُمَّ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَی الْقَاتِلِ فَیُسْتَشْهَدُ۔متفق علیه [1]

(مشکوٰۃ،ج۲،ص۲۳۰)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला उन दो आदमियों से बहुत ख़ुश हो जाता है कि उन में से एक दूसरे को क़त्ल कर देता है फिर वोह दोनों जन्नत में दाख़िल हो जाते हैं एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जंग करते हुवे क़त्ल हो जाता है फिर **अल्लाह** तआ़ला क़ातिल की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और फिर वोह भी शहीद हो जाता है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَنَسٍ اَنَّ الرُّبَیِّعَ بِنْتَ الْبَرَاءِ وَهِیَ اُمُّ حَارِثَةَ بْنِ سُرَاقَةَ اَتَتِ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَلَا تُحَدِّثُنِیْ عَنْ حَارِثَةَ وَكَانَ قُتِلَ یَوْمَ بَدْرٍ اَصَابَهٗ سَهْمٌ غَرْبٌ فَاِنْ كَانَ فِی الْجَنَّةِ صَبَرْتُ وَاِنْ كَانَ غَیْرَ ذٰلِكَ اِجْتَهَدْتُ عَلَیْهِ فِی الْبُكَاءِ فَقَالَ یَا اُمَّ حَارِثَةَ اِنَّهَا جِنَانٌ فِی الْجَنَّةِ وَاِنَّ ابْنَكِ اَصَابَ الْفِرْدَوْسَ الْاَعْلٰی۔رواه البخاری[2](مشکوٰۃ،ج۲،ص۳۳۱)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الاول،الحدیث:۳۸۰۷،ج۲،ص۲۶

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الاول،الحدیث:۳۸۰۹،ج۲،ص۲۷

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते रबीअ़ बिन्ते बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जो ह़ारिसा बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मां हैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आ कर अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मुझ से कुछ न बयान फ़रमाएंगे ? ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जंगे बद्र के दिन क़त्ल हो गए थे, उन को एक ना मालूम तीर लग गया था। अगर वोह जन्नत में हों जब तो मैं सब्र करूंगी और अगर इस के सिवा कोई बात हो तो मैं उन पर रोने में पूरी कोशिश करूंगी । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ ह़ारिसा की मां ! बेशक जन्नत के अन्दर बहुत सी जन्नतें हैं और यक़ीन रख कि तेरा बेटा फ़िरदौसे आला में है। इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने नक़्ल किया है।

ह़दीस : 3

عَنْ سَالِمٍ اَبِی النَّضْرِ قَالَ کَتَبَ اِلَیْہِ عَبْدُ اللّٰہِ بْنُ اَبِیْ اَوْفٰی اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ وَاعْلَمُوْا اَنَّ الْجَنَّۃَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّیُوْفِ (1)

(بخاری، ج۱، ص۳۹۵)

ह़ज़रते सालिम अबू नज़्र से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि इन के पास अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लिख कर भेजा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया है कि तुम लोग यक़ीन के साथ जान लो कि बेशक जन्नत तलवारों के साए के नीचे है।

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب الجنة...الخ، الحدیث:۲۸۱۸، ج۲، ص۲۵۹

ह़दीस : 4

عَنْ عُمَرَ قَالَ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ [1] (بخاری، ج۱، ص۲۵۳)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने येह कहा कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तू अपनी राह में शहादत नसीब कर और अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शह़्र में मुझे मौत दे।

ह़दीस : 5

عَنْ اَبِیْ مَالِكِ نِ الْاَشْعَرِیِّ مَنْ خَرَجَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَمَاتَ اَوْقُتِلَ فَهُوَ شَهِیْدٌ اَوْوَقَصَتْهُ فَرَسُهٗ اَوْبَعِیْرُهٗ اَوْلَدَغَتْهُ هَامَّةٌ اَوْمَاتَ عَلٰی فِرَاشِهٖ بِاَیِّ حَتْفٍ شَاءَ اللّٰهُ فَهُوَ شَهِیْدٌ [2] (کنزالعمال، ج۴، ص۱۸۶)

ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में (जेहाद) में निकला फिर मर गया या क़त्ल किया गया तो वोह शहीद है या उस को उस के घोड़े या ऊंट ने कुचल दिया या उस को किसी ज़हरीले जानवर ने डस लिया या अपने बिछौने पर जिस मौत के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोह मर गया तो वोह भी शहीद है।

ह़दीस : 6

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَتِیْكٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ الشَّهَادَةُ سَبْعٌ سِوَی الْقَتْلِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَلْمَطْعُوْنُ شَهِیْدٌ وَالْغَرِیْقُ شَهِیْدٌ وَصَاحِبُ ذَاتِ الْجَنْبِ شَهِیْدٌ وَالْمَبْطُوْنُ شَهِیْدٌ وَصَاحِبُ الْحَرِیْقِ شَهِیْدٌ وَالَّذِیْ یَمُوْتُ تَحْتَ

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب فضائل المدینة، باب ۱۳، الحدیث: ۱۸۹۰، ج۱، ص۶۲۲

2 .....کنزالعمال، کتاب الجهاد، الباب الاول، الحدیث: ۱۰۶۴۰، ج۲، الجزء۴، ص۱۳۳

www.dawateislami.net

الْهَدْمِ شَهِيْدٌ وَالْمَرْأَةَ تَمُوْتُ بِجُمْعٍ شَهِيْدٌ۔ رواه مالك وابوداود والنسائی[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۳۶)

हज़रते जाबिर बिन अतीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल हो जाने के सिवा सात दूसरी शहादतें भी हैं : ताऊन में मरा हुवा शहीद है, डूब कर मरा हुवा शहीद है, निमोनिया में मरा हुवा शहीद है, पेट की बीमारी में मरा हुवा शहीद है, आग में जल कर मरा हुवा शहीद है और वोह शख़्स जो किसी चीज़ से दब कर मरा हो वोह शहीद है और वोह औरत जो हालते निफ़ास में मर जाए वोह भी शहीद है। इस हदीस को इमाम मालिक और अबू दावूद व नसाई ने रिवायत किया है।

हदीस : 7

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ اَحَدٍ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ اَنْ يَّرْجِعَ اِلَى الدُّنْيَا وَلَهٗ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا الشَّهِيْدُ يَتَمَنّٰى اَنْ يَّرْجِعَ اِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ لِمَا يَرٰى مِنَ الْكَرَامَةِ۔ متفق علیه[2]

(مشکوٰۃ، ج۲، ص۳۳۰)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोई शख़्स ऐसा नहीं है कि जन्नत में दाख़िल होने के बाद दुन्या में आने को पसन्द करे अगर्चे उस को रूए ज़मीन की हर चीज़ मिल जाए। मगर शहीद इस बात की तमन्ना करेगा कि वोह फिर लौट कर दुन्या में जाए

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض...الخ، الحدیث: ۱۵۶۱، ج۱، ص۲۹۹

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الجهاد، الفصل الاول، الحدیث: ۳۸۰۳، ج۲، ص۲۵

और दस मरतबा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल हो कर शहीद हो। येह तमन्ना इस लिए करेगा कि वोह जन्नत में शुहदा की फ़ज़ीलत देख चुका है तो उस को येह ख़्वाहिश बार बार होगी कि बार बार शहीद किया जाऊं ताकि और ज़्यादा अज्र मिले।

ह़दीस 8

عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَبْوَابَ الْجَنَّۃِ تَحْتَ ظِلَالِ السُّیُوْفِ فَقَامَ رَجُلٌ رَثُّ الْھَیْئَۃِ فَقَالَ یَا اَبَا مُوْسٰی اَنْتَ سَمِعْتَ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ ھٰذَا قَالَ نَعَمْ فَرَجَعَ اِلٰی اَصْحَابِہٖ فَقَالَ اَقْرَأُ عَلَیْکُمُ السَّلَامَ ثُمَّ کَسَرَ جَفْنَ سَیْفِہٖ فَاَلْقَاہُ ثُمَّ مَشٰی بِسَیْفِہٖ اِلَی الْعَدُوِّ فَضَرَبَ بِہٖ حَتّٰی قُتِلَ۔رواہ مسلم[1] (مشکوٰۃ،ج۲،ص۳۳۴)

ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि यक़ीनन जन्नत के दरवाज़े तलवारों के साए के नीचे हैं येह सुन कर एक परागन्दा ह़ाल मर्द खड़ा हो गया और उस ने कहा कि ऐ अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! क्या आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह फ़रमाते हुवे सुना है ? तो ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि हां ! फिर वोह मर्द अपने साथियों के पास गया और कहा कि मैं आप लोगों को सलाम करता हूं फिर उस ने अपनी तलवार की नियाम को तोड़ कर फेंक दिया फिर तलवार ले कर दुश्मन की त़रफ़ बढ़ा और तलवार चलाता रहा यहां तक कि शहीद हो गया। इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है।

---

1 .....مشکاۃالمصابیح،کتاب الجھاد،الفصل الثالث،الحدیث:۳۸۵۲،ج۲، ص۳۳

ह़दीस : 9

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ الشَّهِیْدُ لَا یَجِدُ اَلَمَ الْقَتْلِ اِلَّا کَمَا یَجِدُ اَحَدُکُمْ اَلَمَ الْقَرْصَةِ۔رواه الترمذی[1] (مشکوٰة،ج۲،ص۳۳۳)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि शहीद को क़त्ल होने के वक़्त सिर्फ़ इतनी तक्लीफ़ होती है जैसे किसी च्यूंटी ने काट लिया। इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 10

عَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِیْکَرِبَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لِلشَّهِیْدِ عِنْدَ اللّٰهِ سِتُّ خِصَالٍ یُغْفَرُ لَهٗ فِیْ اَوَّلِ دَفْعَةٍ وَیُرٰی مَقْعَدَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ وَیُجَارُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَیَأْمَنُ مِنَ الْفَزَعِ الْاَکْبَرِ وَیُوْضَعُ عَلٰی رَاْسِهٖ تَاجُ الْوَقَارِ الْیَاقُوْتَةُ مِنْهَا خَیْرٌ مِّنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْهَا وَیُزَوَّجُ ثِنْتَیْنِ وَسَبْعِیْنَ زَوْجَةً مِّنَ الْحُوْرِالْعِیْنِ وَیُشَفَّعُ فِیْ سَبْعِیْنَ مِنْ اَقْرِبَائِهٖ۔رواه الترمذی وابن ماجه[2] (مشکوٰة،ج۲،ص۳۳۳)

ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मअ़द यकरिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि शहीद के लिए छे फ़ज़ीलतें ह़ासिल हैं। (1) ख़ून का पेहला क़त़रा गिरते ही उस की मग़फ़िरत हो जाती है। (2) ब वक़्ते शहादत वोह जन्नत में अपनी जगह देख लेता है। (3) अ़ज़ाबे क़ब्र से मेह़फ़ूज़ रेहता है। (4) क़ियामत के दिन की परेशानियों और घबराहटों से बे ख़ौफ़ हो जाता है। (5) उस के सर पर इ़ज़्ज़त का ताज रखा जाता है।

---

1 .....مشکاة المصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الثانی،الحدیث:۳۸۳٦،ج۲،ص۳۱

2 .....مشکاة المصابیح، کتاب الجهاد،الفصل الثانی،الحدیث:۳۸۳٤،ج۲،ص۳۰

www.dawateislami.net

जिस का एक याक़ूत दुन्या और उस की तमाम काएनात से ज़्यादा बेहतर और क़ीमती होगा और बहत्तर बीबियां उस को हूरों में से मिलेंगी। (6) सत्तर रिश्तेदारों के ह़क़ में उस की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।

(तिरमिज़ी व इब्ने माजा)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

इस उ़नवान के तह़्त दस ह़दीसें और इन के तराजुम हम तेह़रीर कर चुके और इन सब ह़दीसों से शहादत के बुलन्द दरजात और इस की फ़ज़ीलतों का ह़ाल निहायत ही तफ़्सील व वज़ाह़त के साथ मालूम हो जाता है।

﴾1﴿ ह़दीस नम्बर 1 का मत़लब येह है कि किसी काफ़िर ने किसी मुसलमान को शहीद कर दिया तो शहीद से **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ख़ुश हो कर उस को जन्नत अ़त़ा फ़रमा देगा फिर वोह काफ़िर मुसलमान हो जाए और वोह भी कुफ़्फ़ार से जेहाद करते हुवे शहीद हो जाए तो उस से भी **अल्लाह** तआ़ला ख़ुश हो कर उस को जन्नत में भेज देगा। इस त़रह़ क़ातिल व मक़्तूल दोनों जन्नत में गए और दोनों से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ख़ुश हो गया।

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 2 से साफ़ साफ़ मालूम हुवा कि शहीद को जन्नत में फ़िरदौसे आला का मह़ल अ़त़ा किया जाता है।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 3 जन्नत तलवारों के साए के नीचे है। इस का मत़लब येह है कि तलवार के नीचे पड़ कर शहीद हो जाना येह जन्नत में जाने का वसीला और ज़रीआ़ है। तो गोया जन्नत तलवार के साए के नीचे है।

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 4 में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ का ज़िक्र है वोह हमेशा ख़ुलूसे क़ल्ब के साथ येह दुआ़ मांगा करते थे। और بِحَمْدِ اللّٰہ تَعَالٰی उन की दुआ़ मक़्बूल हो गई कि उन को शह्रे मदीना की मस्जिदे नबवी में ब ह़ालते नमाज़े फ़ज्र अबू लुलु फ़ीरोज़ मजूसी काफ़िर ने ख़न्जर मार कर शहीद कर

दिया। इस त़रह़ आप को शहादत भी मिल गई और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस शहरे मदीनए मुनव्वरा में आप की वफ़ात भी हो गई। आप की शहादत का पूरा वाक़िआ़ हमारी किताब "दो ह़क़्क़ानी तक़रीरें" में पढ़िए।

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 5 से मालूम हुवा कि जो शख़्स जेहाद के लिए अपने घर से निकल गया। अब ख़्वाह उस को किसी त़रह़ भी मौत आए मगर बहर ह़ाल उस को शहादत का दरजा मिलेगा।

﴾6﴿ ह़दीस नम्बर 6 का ह़ासिल येह है कि इन सातों को शहीद फ़ी सबीलिल्लाह का सवाब मिलेगा अगर्चे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में सर कटा कर शहीद होने वाले और इन लोगों के दरजात व मरातिब में बड़ा फ़र्क़ होगा येह **अल्लाह** तआ़ला का फ़ज़्लो करम है कि इन अमराज़ व अ़वारिज़ में मरने वालों को भी शहीद का सवाब मिलेगा।

﴾7﴿ ह़दीस नम्बर 8 से मालूम होता है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को किस क़दर जज़्बए जेहाद और शहादत ह़ासिल करने का शौक़ था, اَللّٰهُ اَكْبَر ! اَللّٰهُ اَكْبَر ! इस ह़दीस का मत़लब ह़दीस नम्बर 3 की तशरीह़ में गुज़र चुका है।

﴾8﴿ ह़दीस नम्बर 9 से पता चलता है कि शहीद को जज़्बए शहादत की ऐसी लज़्ज़त मिलती है कि बड़े बड़े ज़ख़्म लगने की बस उस को इतनी ही तक्लीफ़ मेह़सूस होती है जैसे किसी च्यूंटी ने काट लिया हो। शहादत की लज़्ज़त को बयान करने के लिए कोई लफ़्ज़ नहीं मिल सकता उस लज़्ज़त को तो बस वोही जान सकता है जिस को येह रुतबए बुलन्द मिल जाए और हर एक को शहादत का येह बुलन्द रुतबा कहां मिलता है ? सच तो येह है कि

येह रुतबए बुलन्द मिला जिस को मिल गया
हर मुद्दई के वासित़े दार व रसन कहां

शहादत मिलने का आसान त़रीक़ा

ह़ज़रते सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो सिद्क़ दिल से ख़ुदावन्दे तआ़ला से शहादत मांगता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस को शुहदा का मर्तबा अ़त़ा फ़रमा देता है ख़्वाह वोह अपने बिस्तर ही पर मरे ।[1] (मुस्लिम) (मिश्कात, जि. 2 स. 330)

इस ह़दीस से मालूम हुवा कि जो हमेशा सच्चे दिल और सच्ची निय्यत के साथ ख़ुदावन्दे तआ़ला से शहादत ह़ासिल होने की दुआ़ मांगता रहेगा तो वोह ख़्वाह किसी भी बीमारी में और कहीं भी और किसी ह़ाल में भी मरे मगर वोह क़ियामत के दिन शहीदों की सफ़ में खड़ा होगा और **अल्लाह** तआ़ला उस को शुहदाए किराम के मरातिब व दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा । سُبْحَانَ اللّٰہ, سُبْحَانَ اللّٰہ

ज़िन्दा जावेद हैं मिल्लत के शहीदाने किराम
नौजवानो ! तुम्हें मालूम भी है उन का मक़ाम
येह वोह महरूम हैं जिन के लिए ख़ुद रेह़मते ह़क़
ले के आती है ह़याते अबदी का पैग़ाम
उन की लाशों पे फ़रिश्तों की सफ़ें होती हैं
ले के उतरे हैं ख़ुशनूदिए रब का पैग़ाम
ज़िन्दा है मिल्लते बैज़ा शुहदा के दम से
उन की रूहों पे हो सौ बार दुरूद और सलाम

﴾23﴿ सामाने जेहाद की तय्यारी

जिस त़रह़ जेहाद करना आमाले जन्नत में से बहुत ही आला और अहम अ़मले सालेह़ है इसी त़रह़ जेहाद के सामानों की तय्यारी भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है इस बारे में चन्द ह़दीसें पढ़ लीजिए ।

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب استحباب طلب...الخ، الحدیث ۱۹۰۹، ص ۱۰۵۷

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اِیْمَانًا بِاللّٰهِ وَتَصْدِیْقًا بِوَعْدِهٖ فَاِنَّ شِبْعَهٗ وَرِیَّهٗ وَرَوْثَهٗ وَبَوْلَهٗ فِیْ مِیْزَانِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ۔رواه البخاری[1] (مشکوٰة،ج۲،ص۳۳۶)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाते हुवे और उस के वादों को सच्चा मानते हुवे जेहाद के लिए घोड़ा पाले तो उस घोड़े का चारा और उस का पानी और उस की लीद और पेशाब येह सब क़ियामत के दिन उस के मीज़ाने अ़मल में नेकियों के पलड़े में तोले जाएंगे। येह ह़दीस बुख़ारी में है।

ह़दीस : 2

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی یُدْخِلُ بِالسَّهْمِ الْوَاحِدِ ثَلٰثَةَ نَفَرٍ الْجَنَّةَ صَانِعَهٗ یَحْتَسِبُ فِیْ صَنْعَتِهِ الْخَیْرَ وَالرَّامِیْ بِهٖ وَمُنْبِلَهٗ فَارْمُوْا وَارْكَبُوْا وَاَنْ تَرْمُوْا اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ تَرْكَبُوْا۔رواه الترمذی[2] (مشکوٰة،ج۲،ص۳۳۷)

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि **अल्लाह** तआ़ला एक तीर के बदले तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। उस के बनाने वाले को जिस ने उस के बनाने में ख़ैर की निय्यत

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجهاد،باب اعدادآلۃالجهاد،الحدیث:۳۸۶۸،ج۲، ص۳۶

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الجهاد،باب اعدادآلۃالجهاد،الحدیث:۳۸۷۲،ج۲، ص۳۷

की हो और उस के चलाने वाले को और उस तीर को उठा कर देने वाले को, तुम लोग तीर अन्दाज़ी करो और घोड़ों पर सुवारी करो और तीर अन्दाज़ी घोड़े की सुवारी करने से ज़्यादा मुझे पसन्द है।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ نَجِیْحِ السُّلَمِیِّ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ مَنْ بَلَغَ بِسَھْمٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ فَھُوَ لَہٗ دَرَجَۃٌ فِی الْجَنَّۃِ وَمَنْ رَمٰی بِسَھْمٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ فَھُوَ لَہٗ عِدْلُ مُحَرَّرٍ وَمَنْ شَابَ شَیْبَۃً فِی الْاِسْلَامِ کَانَتْ لَہٗ نُوْرًا یَّوْمَ الْقِیٰمَۃِ۔

رواہ البیھقی[1] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۳۳۷)

ह़ज़रते अबू नजीह़ सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जो शख़्स एक तीर को जेहाद में पहुंचा दे तो वोह उस के लिए जन्नत में एक दरजा है और जो एक तीर जेहाद में चला दे तो उस को एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है और जिस के बाल इस्लाम में सफ़ेद हो गए येह सफ़ेद बाल उस के लिए क़ियामत के दिन नूर होंगे। इस ह़दीस को बैहक़ी ने रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

जेहाद चूंकि एलाए कलिमतुल्लाह का ज़रीआ़ है इस लिए जेहाद बहुत बड़ा अ़मले सालेह़ और आला दरजे की इ़बादत है और चूंकि सामाने जेहाद की तय्यारी मसलन मैदाने जेहाद तक पहुंचने के लिए सुवारियों का इन्तिज़ाम, आलाते जंग मसलन तीर व तल्वार का बनाना, ख़रीदना, तीर अन्दाज़ी, शमशीरज़नी, बन्दूक़ चलाने की मश्क़ करना, चूंकि येह सब सामाने जेहाद की तय्यारी है। लेहाज़ा जेहाद का वसीला होने के सबब से

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الجھاد، باب اعداد آلۃ الجھاد، الحدیث: ۳۸۷۳، ج۲، ص۳۷

येह सब काम भी अ़मले सालेह़ और इ़बादत बन गए। चुनान्चे, ह़दीस नम्बर 1 में जेहाद की निय्यत से घोड़ा पालने का अज्र आप ने पढ़ लिया कि वोह घोड़ा जितना चारा खाएगा जिस क़दर पानी पिएगा जितनी लीद और पेशाब करेगा येह सब घोड़ा पालने वाले के मीज़ाने अ़मल में नेकी बना कर तोले जाएंगे इसी त़रह़ ह़दीस नम्बर 2 व नम्बर 3 में एक तीर का बनाना इस का मैदाने जेहाद तक पहुंचाना इस को चलाना इस का अज्रो सवाब कितना अ़ज़ीम है इस को आप पढ़ चुके बहर ह़ाल सामाने जेहाद की तय्यारी के सिलसिले में हर वोह चीज़ बाइ़से अज्रो सवाब है जिस का जेहाद से तअ़ल्लुक़ हो।

﴾24﴿ अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र

अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र भी बहुत बड़ी इ़बादत और जन्नत के आमाल में से एक आला दरजे का अ़मल है इस के मुतअ़ल्लिक़ भी चन्द ह़दीसें तेह़रीर की जाती हैं। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करे कि इन ह़दीसों के अन्वार से मुसलमानों के दिलों में हिदायत का नूर चमक उठे।

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ لِلّٰهِ تَعَالٰی تِسْعَةً وَّتِسْعِیْنَ اِسْمًا مِائَةً اِلَّا وَاحِدَةً مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ [1] (بخاری ومسلم)(مشکوۃ، ج۱،ص)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के निनानवे नाम हैं जो इन को गिन गिन कर इख़्लास के साथ पढ़ता रहे वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات، باب اسماء اللّٰہ تعالٰی، الحدیث ۲۲۸۷، ج۱، ص۴۲۸

www.dawateislami.net

ह़दीस : 2

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوْا قَالُوْا وَمَا رِيَاضُ الْجَنَّةِ قَالَ حِلَقُ الذِّكْرِ[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तुम लोग जन्नत के बाग़ों में गुज़रो तो मेवा चुनो। सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने कहा कि जन्नत के बाग़ात कौन हैं ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि ज़िक्रे इलाही के ह़ल्क़े।

ह़दीस : 3

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقِيْتُ اِبْرَاهِيْمَ لَيْلَةَ اُسْرِىَ بِىْ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ اِقْرَأْ اُمَّتَكَ مِنِّى السَّلَامَ وَاَخْبِرْهُمْ اَنَّ الْجَنَّةَ طَيِّبَةُ التُّرْبَةِ عَذْبَةُ الْمَاءِ وَاِنَّهَا قِيْعَانٌ وَّاِنَّ غِرَاسَهَا سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ۔ رواہ الترمذی[2] (مشکوٰۃ، ج، ص۲۰۳)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि मैं ने मेराज की रात में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से मुलाक़ात की तो उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप अपनी उम्मत से मेरा सलाम केह दीजिए और उन को येह ख़बर दीजिए कि जन्नत की मिट्टी ख़ुश्बूदार और उस का पानी

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ذکر اللّٰہ، الحدیث ۲۲۷۱، ج۱، ص ۴۲۵

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح...الخ، الحدیث ۲۳۱۵، ج۱، ص ۴۳۳

www.dawateislami.net

बहुत शीरीं है और बेशक जन्नत में बहुत से मैदान हैं और इन में शजरकारी سُبْحَانَ الله और اَلْحَمْدُلِلّٰه और لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ और اَللّٰهُ اَكْبَر हैं। (तिरमिज़ी)

ह़दीस : 4

عَنِ ابْنِ عُمَرَ اَرْبَعَةٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ بَنَى اللّٰهُ لَهٗ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَكَانَ فِىْ نُوْرِاللّٰهِ الْاَعْظَمِ مَنْ كَانَتْ عِصْمَتُهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاِذَا اَصَابَ حَسَنَةً قَالَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاِذَا اَصَابَ ذَنْبًا قَالَ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاِذَا اَصَابَتْهُ مُصِيْبَةٌ قَالَ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ [1] (کنزالعمال، ج۲۰،ص۳۰۶)

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि चार चीज़ें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए जन्नत में एक घर बना देगा और वोह **अल्लाह** तआ़ला के नूरे आज़म में रहेगा जिस की ह़िफ़ाज़त لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ हो और वोह जब कोई नेकी करे तो اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे और जब उस से कोई गुनाह हो जाए तो वोह اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ कहे और जब उस को कोई मुसीबत पहुंचे तो वोह اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ कहे।

ह़दीस : 5

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰهَ لَيَرْفَعُ الدَّرَجَةَ لِلْعَبْدِ الصَّالِحِ فِى الْجَنَّةِ فَيَقُوْلُ يَا رَبِّ اَنّٰى لِىْ هٰذِهٖ فَيَقُوْلُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ [2] (مشکوۃ، ج۱،ص۲۰۶)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बेशक **अल्लाह** तआ़ला

---

1 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ،الباب الاول،الحدیث ٤٣٤٥٠،ج٨،الجزء١٥، ص٣٦٦

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب الاستغفار والتوبۃ،الحدیث:٢٣٥٤،ج١، ص٤٤٠

www.dawateislami.net

एक नेक बन्दे का दरजा जन्नत में बुलन्द फ़रमाएगा तो वोह कहेगा कि ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ कहां से येह मर्तबा मुझ को मिला ? तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि तेरे बेटे ने तेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ़ मांगी है इस लिए तुझे येह दरजा मिला है।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की पेहली ह़दीस में जो مَنْ اَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ आया है शारिह़ीने ह़दीस ने इस की चन्द शर्हें तेह़रीर की हैं। चुनान्चे, साह़िबे मिरक़ात ने ह़दीसे मज़्कूर की शर्ह़ में तेह़रीर फ़रमाया कि

اَیْ مَنْ اٰمَنَ بِهَا اَوْعَدَّهَا وَقَرَأَهَا كَلِمَةً كَلِمَةً عَلٰى طَرِيْقِ التَّرْتِيْلِ تَبَرُّكًا وَّاِخْلَاصًا اَوْحَفِظَ مَبَانِيْهَا وَعَلِمَ مَعَانِيْهَا وَتَخَلَّقَ بِمَا فِيْهَا [1](مرقاة)

यानी اَحْصَاهَا के चन्द मआ़नी हो सकते हैं ﴾1﴿ उन पर ईमान लाया ﴾2﴿ गिन कर पढ़ा ﴾3﴿ ठेहर ठेहर कर तरतील के साथ बरकत ह़ासिल करते हुवे इख़्लास के साथ पढ़ा ﴾4﴿ इस के अल्फ़ाज़ को याद कर लिया और इस के माना के मुत़ाबिक़ अपने अख़्लाक़ को संवारा। واللہ تعالٰی اعلم

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 2 में ज़िक्र के ह़ल्क़ों को जन्नत का बाग़ इस लिए फ़रमाया कि ज़िक्र के ह़ल्क़े जन्नत के बाग़ात में जाने का सबब हैं तो गोया जो ज़िक्र के ह़ल्क़ों में गया वोह जन्नत के बाग़ात में पहुंच गया।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 5 से मालूम हुवा कि औलाद अगर अपने मां बाप के लिए इस्तिग़फ़ार या और किसी ज़रीए़ से ईसाले सवाब करते रहें तो औलाद के इस्तिग़फ़ार व फ़ातिह़ा दिलाने से मां बाप को फ़ाएदा पहुंचता है कि जन्नत में उन के दरजात बुलन्द कर दिए जाते हैं।

---

1 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الدعوات، باب اسماء الله تعالى، تحت الحديث ٢٢٨٧، ج٥، ص ٧١

﴾4﴿ **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र मोमिन के लिए बहुत बड़ा अज्रो सवाब का बाइस है इस बारे में चन्द ह़दीसों के तराजुम पढ़ लीजिए।

ह़दीस : 1

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो क़ौम भी **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करने के लिए बैठती है तो फ़रिश्ते उन को चारों त़रफ़ से घेर लेते हैं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की रेह़मत उन को ढांप लेती है और उन लोगों पर सकीना (रूह़ का सुकून, दिल का इत़मीनान) नाज़िल होता है और **अल्लाह** तआ़ला अपने मुक़र्रबीन में उन का तज़किरा फ़रमाता है।[1] इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 196)

ह़दीस : 2

एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा के रास्ते में चल रहे थे। जब आप का गुज़र "जमदान" नामी पहाड़ के पास हुवा तो आप ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! चले चलो येह "जमदान" है और सुन लो कि जो मुमताज़ लोग हैं वोह क़ुर्बे ख़ुदावन्दी पा लेने में दूसरों से आगे बढ़ गए हैं तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुमताज़ लोग कौन हैं ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि वोह मर्द जो **अल्लाह** तआ़ला का ब कसरत ज़िक्र करते रेहते हैं और वोह औ़रतें जो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कसरत से करती रेहती हैं।[2] (मिश्कात, जि. 1 स.196)

---

1 .....صحيح مسلم، كتاب الذكر...الخ،باب فضل الاجتماع...الخ،الحديث ٢٧٠٠، ص١٤٤٨

2 .....صحيح مسلم، كتاب الذكر...الخ،باب الحث على...الخ،الحديث٢٦٧٦، ص١٤٣٩

ह़दीस : 3

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम लोगों को तुम्हारे बेहतरीन आमाल की ख़बर न दूं जो आमाल ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बड़े सुथरे और तुम्हारे दरजात को बहुत ज़्यादा बुलन्द करने वाले हैं, वोह तुम्हारे लिए सोना चांदी ख़र्च करने से कहीं ज़्यादा बढ़ कर हैं और वोह इस से भी बेहतर हैं कि तुम अपने दुश्मनों (कुफ़्फ़ार) से लड़ो और वोह तुम्हारी गर्दन मारें और तुम उन की गर्दन मारो तो सह़ाबा ने कहा कि क्यूं नहीं आप ज़रूर हमें उस अ़मल की ख़बर दीजिए तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि वोह अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र है।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 198)

ह़दीस : 4

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जो रास्तों में चक्कर लगाते फिरते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों को ढूंडते रेहते हैं। तो जब किसी क़ौम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुवे पा लेते हैं तो एक दूसरे को पुकारते हैं कि आ जाओ अपनी मुराद के पास। फिर येह फ़रिश्ते उन ज़िक्र करने वालों को ढांप लेते हैं ज़मीन से आस्माने दुन्या तक फिर **अल्लाह** तआ़ला बा वुजूद येह कि वोह ख़ूब जानता है, उन फ़रिश्तों से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि मेरे बन्दे क्या केह रहे हैं? तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि वोह लोग तेरी तस्बीह़ पढ़ते हैं और तेरी बड़ाई बयान करते हैं और तेरी तारीफ़ और बुज़ुर्गी का एलान करते हैं। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या उन बन्दों ने मुझे देखा है? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि नहीं ब ख़ुदा उन्हों ने तुझ

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ٦، الحدیث ٣٣٨٨، ٥، ص ٢٤٦

को नहीं देखा है। फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि अगर उन बन्दों ने मुझे देखा होता तो उन का क्या ह़ाल होता ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि अगर उन बन्दों ने तुझे देख लिया होता तो और ज़्यादा बढ़ चढ़ कर तेरी इ़बादत करते और तेरी बुज़ुर्गी और पाकी बयान करते। फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे मुझ से क्या मांग रहे थे ? तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि वोह लोग तुझ से जन्नत का सुवाल कर रहे थे। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या उन्हों ने जन्नत देखी है ? फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि नहीं ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! उन बन्दों ने तेरी जन्नत को नहीं देखा। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि अगर उन बन्दों ने जन्नत को देख लिया होता तो उन का क्या ह़ाल होता ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि उन बन्दों ने जन्नत को देख लिया होता तो उन की ह़िर्स व रग़बत और त़लब बहुत बढ़ जाती। फिर **अल्लाह** तआ़ला दरयाफ़्त फ़रमाता है कि मेरे बन्दे किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि जहन्नम से। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या मेरे बन्दों ने जहन्नम को देखा है ? तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि नहीं ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! उन्हों ने जहन्नम को नहीं देखा है। तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि अगर मेरे बन्दे जहन्नम को देख लेते तो उन का क्या ह़ाल होता ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि अगर तेरे बन्दे जहन्नम को देख लेते तो और ज़्यादा उस से डरते और भागते। फिर **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मैं तुम लोगों को गवाह बनाता हूं कि बेशक मैं ने उन सब ज़िक्र करने वाले बन्दों को बख़्श दिया। येह सुन कर एक फ़रिश्ता अ़र्ज़ करता है कि इलाही عَزَّوَجَلَّ ! उन बन्दों में तो फ़ुलां आदमी भी था जो ज़िक्र के लिए नहीं आया था बल्कि अपनी किसी ज़रूरत से उन लोगों के पास आ गया था, तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि येह ज़िक्र करने

वाले ऐसे बैठने वाले हैं कि जो भी इन के पास बैठ जाए वोह बद नसीब नहीं होगा। लेहाज़ा मेहूज़ उन लोगों के पास बैठ जाने से उस आदमी की भी मग़फ़िरत हो गई।[1] येह बुख़ारी की ह़दीस है।

(मिश्कात, जि. 1 स. 197)

ह़दीस : 5

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सुवाल किया कि तमाम बन्दों में अफ़्ज़ल और क़ियामत के दिन तमाम बन्दों से बुलन्द मर्तबा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दरबार में कौन है ? तो इरशाद फ़रमाया कि वोह बन्दे और बन्दियां जो बहुत ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले हैं तो एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि क्या येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जेहाद करने वाले से भी अफ़्ज़ल हैं ? येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर कोई मुजाहिद कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन को अपनी तलवार से यहां तक मारता रहे कि तलवार टूट जाए और वोह मुजाहिद ख़ून में लत पत हो जाए फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला दरजे में उस मुजाहिद से अफ़्ज़ल ही होगा।[2]

(मिश्कात, जि. 1 स. 198 व स. 199)

﴾25﴿ दुरूद शरीफ़

दुरूद शरीफ़ पढ़ना भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मले ख़ैर है और दुरूद शरीफ़ के बरकात व फ़ज़ाइल के बारे में ब कसरत अह़ादीस मौजूद हैं। उस में से चन्द ह़दीसें हम तबर्रुकन ज़िक्र करते हैं :

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ذکرالله...الخ،الحدیث:۲۲٦۷،ج۱، ص٤۲٤

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات،باب ذکرالله...الخ،الحدیث:۲۲۸۰،ج۱، ص٤۲۷

ह़दीस : 1

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَوْلَى النَّاسِ بِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلٰوةً۔رواه الترمذی[1](مشکوٰۃ،ج۱،ص۸۶)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तमाम लोगों में मुझ से सब से ज़्यादा क़रीब क़ियामत के दिन वोह शख़्स होगा जो सब से ज़्यादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा। (तिरमिज़ी)

ह़दीस : 2

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَاةً وَّاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيَّاتٍ وَرُفِعَتْ لَهٗ عَشْرُ دَرَجَاتٍ۔[2](مشکوٰۃ،ج۱،ص۸۶)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस दुरूदें भेजता है और उस के दस गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाते हैं और उस के लिए दस दरजे बुलन्द कर दिए जाते हैं। (नसाई)

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ اَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَيَّ رُوْحِيْ حَتّٰى اَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ۔رواه ابو داود[3]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۸۶)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۲۳،ج۱، ص۱۸۹

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۲۲،ج۱،ص۱۸۹

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۲۵،ج۱، ص۱۸۹

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स भी मुझ पर सलाम अ़र्ज़ करता है तो **अल्लाह** तआ़ला मेरी रूह को मुझ पर लौटा देता है यहां तक कि मैं उस के सलाम का जवाब देता हूं। (अबू दावूद)

ह़दीस : 4

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ ذُکِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ یُصَلِّ عَلَیَّ وَرَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَیْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ اَنْ یُّغْفَرَ لَهٗ وَ رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ اَدْرَکَ عِنْدَهٗ اَبَوَاهُ الْکِبَرَ اَوْاَحَدُهُمَا فَلَمْ یُدْخِلَاهُ الْجَنَّةَ۔رواه الترمذی[1](مشکوٰة،ج۱،ص۸۶)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरूद नहीं पढ़ा और उस मर्द की नाक मिट्टी में मिल जाए कि उस पर रमज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मग़फ़िरत होने से क़ब्ल ही रमज़ान गुज़र गया और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन ने उस को जन्नत में नहीं दाख़िल किया। (तिरमिज़ी)

ह़दीस : 5

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ اِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوْفٌ بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ لَا یَصْعَدُ مِنْهَا شَیْءٌ حَتّٰی تُصَلِّیَ عَلٰی نَبِیِّكَ۔رواه الترمذی[2]

(مشکوٰة،ج۱،ص۸۷)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۲۷،ج۱، ص۱۸۹

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۳۸،ج۱، ص۱۹۱

हज़रते उ़मर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि दुआ़ आस्मानो ज़मीन के दरमियान ठेहरी रेहती है दुआ़ओं में से कोई दुआ़ भी ऊपर नहीं चढ़ती यहां तक कि तू अपने नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़ ले। (तिरमिज़ी)

ह़दीस : 6

عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَکْثِرُوا الصَّلٰوۃَ عَلَیَّ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ فَاِنَّہٗ مَشْھُوْدٌ یَشْھَدُہُ الْمَلٰئِکَۃُ وَاِنَّ اَحَدًا لَمْ یُصَلِّ عَلَیَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَیَّ صَلٰوتُہٗ حَتّٰی یَفْرُغَ مِنْھَا قَالَ قُلْتُ وَبَعْدَ الْمَوْتِ قَالَ اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَنْ تَاْکُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَاءِ فَنَبِیُّ اللّٰہِ حَیٌّ یُّرْزَقُ۔ رواہ ابن ماجہ[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۲۱)

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम लोग जुम्आ़ के दिन मुझ पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़ो। क्यूंकि जुम्आ़ का दिन फ़रिश्तों की ह़ाज़िरी का दिन है कि उस दिन में फ़रिश्ते ह़ाज़िर होते हैं और जो कोई भी मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है उस का दुरूद मेरे सामने पेश किया जाता है यहां तक कि वोह दुरूद पढ़ने से फ़ारिग़ हो जाए। अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि क्या आप की वफ़ात के बाद भी ? तो आप ने फ़रमाया कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बदनों को खाए। इस लिए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नबी ज़िन्दा है और उस को रोज़ी मिलती है। (इब्ने माजा)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، الحدیث: ۱۳۶۶، ج۱، ص۲۶۵

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 1 का मत़लब येह है कि क़ियामत के दिन सब से ज़्यादा मेरे क़रीब वोह शख़्स रहेगा जो दुन्या में सब से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहा होगा।

हुज़ूर रेह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन कभी मक़ामे मेह़मूद यानी शफ़ाअ़ते कुब्रा के मक़ाम में होंगे, कभी ह़ौज़े कौसर के पास रहेंगे, फिर आख़िर में फ़िरदौसे आला की उस मन्ज़िले आला में तशरीफ़ फ़रमा होंगे जो रब्बुल आ़लमीन ने ख़ास त़ौर पर अपने मेह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए तय्यार कर रखा है, बहर ह़ाल ह़दीस का ह़ासिल येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन जहां भी और जिस मक़ाम पर भी होंगे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सब से ज़्यादा क़ुर्ब उस ख़ुश नसीब को ह़ासिल रहेगा जो दुन्या में सब से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहा होगा।

दुरूद शरीफ़ की कसरत के बारे में तिरमिज़ी शरीफ़ की एक ह़दीस बहुत ज़्यादा रिक़्क़त ख़ेज़ व इ़ब्रत अंगेज़ है।

ह़दीस :

ह़ज़रते उबय बिन काब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं बहुत ज़्यादा आप पर दुरूद पढ़ा करता हूं तो आप बता दीजिए कि दिन रात का कितना ह़िस्सा मैं दुरूद ख़्वानी के लिए मुक़र्रर कर दूं ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस क़दर तुम चाहो मुक़र्रर कर लो। तो मैं ने कहा कि दिन रात का चौथाई ह़िस्सा मैं दुरूद ख़्वानी के लिए मुक़र्रर कर लूं ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस क़दर चाहो मुक़र्रर कर लो अगर तुम चौथाई से ज़्यादा मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर ही होगा। तो ह़ज़रते उबय बिन काब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि मैं दिन रात का निस्फ़

हिस्सा दुरूद ख़्वानी के लिए मुक़र्रर कर लूं ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस क़दर तुम चाहो मक़र्रर कर लो और अगर तुम इस से ज़्यादा वक़्त मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर ही होगा। तो ह़ज़रते उबय رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि दिन रात का दो तिहाई मुक़र्रर कर लूं ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम जितना चाहो वक़्त मुक़र्रर कर लो और अगर तुम इससे ज़्यादा वक़्त मुक़र्रर कर लोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर ही होगा। तो ह़ज़रते उबय رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि मैं दिन रात का कुल हिस्सा दुरूद ख़्वानी ही में ख़र्च करूंगा। तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर ऐसा करोगे तो दुरूद शरीफ़ तुम्हारी तमाम फ़िक्रों और ग़मों को दूर करने के लिए काफ़ी हो जाएगा और तुम्हारे तमाम गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगा।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 86)

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 3 का मत़लब है कि जब मेरा कोई उम्मती मुझ पर सलाम अ़र्ज़ करता है तो **अल्लाह** तआ़ला मेरी रूह़ को उस सलाम करने वाले की त़रफ़ मुतवज्जेह फ़रमा देता है और मैं उस के सलाम के जवाब देता हूं। रूह़ को लौटाने का येह मत़लब नहीं है कि आप की रूह़ जो आप के बदन से जुदा हो चुकी है वोह दोबारा आप के बदन में दाख़िल की जाती है। बल्कि रूह़ को लौटाने का मत़लब येह है कि आप की रूह़ रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُه के मुशाहदे में हर दम मुस्तग़्रक़ रेहती है। मगर जब कोई उम्मती सलाम करता है तो **अल्लाह** तआ़ला आप की रूह़ को आ़लमे इस्तिग़्राक़ से सलाम करने वाले की त़रफ़ मुतवज्जेह फ़रमा देता है और आप मुतवज्जेह हो कर उस के सलाम का जवाब अ़त़ा फ़रमाते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते शैख़ मुह़क़्क़िक़ अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने फ़रमाया कि

لَيْسَ الْمُرَادُ بِعَوْدِ الرُّوْحِ عَوْدُهَا بَعْدَ الْمُفَارَقَةِ عَنِ الْبَدَنِ وَاِنَّمَا الْمُرَادُ اَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى الْبَرْزَخِ مَشْغُوْلٌ حَوْلَ الْمَلَكُوْتِ فِى مُشَاهَدَةِ

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الصلاۃ،باب الصلاۃعلی النبی وفضلھا،الحدیث۹۲۹،ج۱، ص۱۹۰

رَبِّ الْعِزَّةِ عَزَّوَجَلَّ كَمَا كَانَ فِى الدُّنْيَا فِى حَالَةِ الْوَحْيِ وَفِى الْاَحْوَالِ الْاُخْرِ فَعُبِّرَعَنْ اِفَاقَتِهٖ مِنْ تِلْكَ الْمُشَاهَدَةِ وَ ذٰلِكَ الْاِسْتِغْرَاقِ بِرَدِّالرُّوْحِ (1)

(لمعات شرح مشکوٰۃ)

रूह़ के लौटने से येह मुराद नहीं है कि बदन से जुदा होने के बाद फिर रूह़ बदन में आई बल्कि इस से मुराद येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ़लमे बरज़ख़ में मलकूत के माह़ोल में रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे में मश्ग़ूल हैं जैसा कि दुन्या में नुज़ूले वह़ी और दूसरे ख़ास एह़वाल में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस क़दर मश्ग़ूल व मुस्तग़रक़ हो जाया करते थे कि आप की तवज्जोह दूसरी चीज़ों की त़रफ़ नहीं हुवा करती थी तो इस मुशाहदे व इस्तिग़राक़ से इफ़ाक़ा होने और आप की तवज्जोह दूसरी त़रफ़ मब्ज़ूल व मुतवज्जेह होने को रूह़ लौटाने के लफ़्ज़ से बयान कर दिया गया है। (लमआ़त, मुसन्निफ़ह़ू ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ الرَّحْمَة)

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 4 का येह मत़लब है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन शख़्सिय्यतों के लिए येह दुआ़ फ़रमाई कि "उन की नाक मिट्टी में मिल जाए।" नाक मिट्टी में मिल जाए इस का मत़लब येह है कि येह लोग ज़लीलो ख़्वार और नाकाम व नामुराद हो जाएं। अ़रब के लोग जब किसी आदमी को इन्तिहाई ज़लील करते थे तो उस को मजबूर करते थे कि वोह अपनी नाक को ज़मीन पर रगड़ कर उस को ख़ाक आलूद करे। यहीं से "رَغِمَ اَنْفُهٗ" का मुह़ावरा चल पड़ा कि जब किसी को इन्तिहाई ज़लील कर दिया जाता है तो येह कहा जाता है : "رَغِمَ اَنْفُهٗ" यानी उस की नाक मिट्टी में मिल गई। फ़रमाने ह़दीस का ह़ासिल येह है कि तीन शख़्सों के लिए हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़लीलो ख़्वार होने की दुआ़ फ़रमाई है।

---

1 .....لمعات شرح مشکوۃ،از شیخ عبدالحق محدث دھلوی علیہ الرحمۃ

www.dawateislami.net

﴾1﴿ जिस के सामने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह दुरूद शरीफ़ न पढ़े।

﴾2﴿ जिस ने रमज़ान का महीना पाया और रमज़ान में इबादत कर के अपने को मग़फ़िरत के लाइक़ न बनाया।

﴾3﴿ वोह शख़्स कि जिस के वालिदैन बुढ़ापे की ह़ालत में उस के पास रहे और उस ने वालिदैन की ख़िदमत कर के अपने को जन्नत का अह्ल न बनाया।

اَللّٰهُ اَكْبَر ! इन तीनों की मन्हूसिय्यत में क्या शुबा किया जा सकता है ? जब कि रेह्मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन तीनों से इस क़दर ख़फ़ा हैं कि इन लोगों की ज़िल्लतो ख़्वारी की दुआ़ फ़रमा रहे हैं। (معاذ اللہ تعالٰی)

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 5 का मज़मून बिल्कुल ज़ाहिर है कि कोई दुआ़ दरबारे इलाही में पहुंचती ही नहीं बल्कि ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ ही रेहती है जब तक दुरूद शरीफ़ न पढ़ा जाए इस लिए मुस्तह़ब है कि हर दुआ़ के अव्वलो आख़िर में दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया जाए जैसा कि एह्ले सुन्नत व जमाअ़त का त़रीक़ा है

﴾5﴿ ह़दीस नम्बर 6 से साबित हो गया कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी अपनी क़ब्रों में लवाज़िमे ह़याते जिस्मानी के साथ ज़िन्दा हैं और हरगिज़ हरगिज़ उन के जिस्मों को मिट्टी नहीं खा सकती क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर ह़राम ठेहरा दिया है कि वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खा सके।

इस ह़दीस का आख़िरी फ़क़रा कि "فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُّرْزَقُ" यानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं और उन्हें रोज़ी दी जाती है। इस का क्या मत़लब है ? तो इस बारे में साह़िबे मिरक़ात का बयान है कि

www.dawateislami.net

يُرْزَقُ اَىْ رِزْقًا مَعْنَوِيًّا فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَالَ فِىْ حَقِّ الشُّهَدَاءِ مِنْ اُمَّتِهٖ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ (1) فَكَيْفَ سَيِّدُهُمْ بَلْ رَئِيْسُهُمْ وَلَا يُنَافِيْهِ اَنْ يَكُوْنَ هُنَاكَ رِزْقٌ حِسِّىٌّ اَيْضًا وَهُوَالظَّاهِرُ الْمُتَبَادِرُ(2)(مرقاة ملخصًا)

यानी उन्हें रिज़्क़े मानवी दिया जाता है इस लिए कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप की उम्मत के शहीदों के बारे में फ़रमाया कि "बल्कि वोह ज़िन्दा हैं और रोज़ी दिए जाते हैं।" तो फिर क्या ह़ाल होगा उन शहीदों के सरदार का बल्कि रईस का और येह जो हम ने लिख दिया है कि रिज़्क़े मानवी दिया जाता है तो येह इस के मनाफ़ी नहीं है कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें रिज़्क़े ह़िस्सी भी अ़त़ा फ़रमाए और यहां येही रिज़्क़े ह़िस्सी मुराद लेना ज़ाहिर है जो जल्द ज़ेहनों में आ जाता है। (यानी ज़ाहिरी त़ौर पर खाना पीना)

बहर ह़ाल दुरूद शरीफ़ की कसरत आमाले जन्नत में से एक बहुत ही उम्मीद अफ़ज़ा अ़मल है लेहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए कि दुरूद शरीफ़ का वज़ीफ़ा ज़रूर पढ़ता रहे ताकि क़ियामत के दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब हो जो दोनों जहान की नेमतों में सब से ज़्यादा अ़ज़ीम नेमत और दारैन की दौलतों में सब से बढ़ कर अनमोल दौलत है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

﴾26﴿ तौबाओ इस्तिग़फ़ार

अपने गुनाहों से तौबा करना और अपने गुनाहों की मग़फ़िरत की दुआ़ मांगना। येह भी आमाले जन्नत में से एक अ़मल है और बन्दे की

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं। (پ٤،ال عمران:١٦٩)

2 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الصلوٰة، تحت الحديث١٣٦٦، ج٣، ص٤٦٠

तौबा से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कितनी ख़ुशी होती है इस को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ह़दीस में इरशाद फ़रमाया है :

ह़दीस : 1

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَلّٰهُ اَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهٖ حِيْنَ يَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنْ اَحَدِكُمْ كَانَ رَاحِلَتُهٗ بِاَرْضٍ فَلَاةٍ فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ وَعَلَيْهَا طَعَامُهٗ وَشَرَابُهٗ فَاَيِسَ مِنْهَا فَاَتٰى شَجَرَةً فَاضْطَجَعَ فِىْ ظِلِّهَا قَدْ اَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهٖ فَبَيْنَمَا هُوَ كَذٰلِكَ اِذْ هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهٗ فَاَخَذَ بِخِطَامِهَا ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَبْدِىْ وَاَنَا رَبُّكَ اَخْطَاَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ۔رواه مسلم[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۰۳)

ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे के तौबा करने से जब बन्दा तौबा करता है इस क़दर ख़ुश होता है कि उस की ख़ुशी उस आदमी की ख़ुशी से भी ज़्यादा होती है जो कि एक बे आबो गियाह ज़मीन में था। नागहां उस की सुवारी बिदक कर भाग गई और उसी सुवारी पर उस का खाना पानी भी था जब वोह उस सुवारी से ना उम्मीद हो गया तो एक दरख़्त के पास आ कर उस के साए में लेट गया और वोह अपनी सुवारी से मायूस हो चुका था गोया मरने के लिए लेट गया। पस इसी दरमियान में कि वोह इसी मायूसी के आ़लम में था कि अचानक क्या देखता है कि उस की सुवारी उस के पास खड़ी है तो उस ने उस की मुहार पकड़ ली फिर उस को इस क़दर ख़ुशी हुई कि वोह बजाए इस के कि येह केहता कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूं येह केहने लगा कि या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू मेरा बन्दा है और मैं तेरा रब हूं मारे ख़ुशी के उस से

1 .....مشكاة المصابيح، كتاب الدعوات، باب الاستغفار والتوبة، الحديث ٢٣٣٢، ج١، ص٤٣٦

ग़लती हो गई तो जितनी उस शख़्स को ख़ुशी हुई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ज़्यादा ख़ुश हो जाता है जब **बन्दा तौबा करता है**।

इस सिलसिले में दूसरी चन्द ह़दीसों के तराजुम भी मुत़ालआ़ कर लीजिए जो बहुत ज़्यादा रिक़्क़त ख़ेज़ व इब्रत अंगेज़ हैं।

ह़दीस : 2

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में एक ऐसा शख़्स था जिस ने निनानवे इन्सानों को क़त्ल किया था फिर वोह येह फ़तवा पूछने के लिए निकला कि उस की तौबा क़बूल हो सकती है या नहीं ? चुनान्चे, एक राहिब के पास आ कर उस ने पूछा कि क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है ? उस ने केह दिया कि नहीं। येह सुन कर उस ने उस राहिब को क़त्ल कर दिया और फिर लोगों से येही सुवाल करता रहा कि मेरी तौबा क़बूल होगी या नहीं ? तो एक शख़्स ने उस को येह बताया कि फ़ुलां फ़ुलां गाऊं में जाओ वहां नेक लोग रेहते हैं वहां तुम्हारी तौबा मक़्बूल हो जाएगी येह शख़्स उस गाऊं के इरादे से चला मगर रास्ते ही में उस की मौत आ गई। तो येह शख़्स मुंह के बल आगे को गिरा। और मशक़्क़त कर के कुछ अपने सीने को उस गाऊं की त़रफ़ बढ़ा दिया। फ़ौरन ही रेह़मत और अ़ज़ाब के दोनों फ़रिश्ते आ गए। अ़ज़ाब के फ़रिश्ते इस को दोज़ख़ की त़रफ़ ले जाना चाहते थे कि येह बहुत से इन्सानों का क़ातिल है और रेह़मत के फ़रिश्ते इस को जन्नत की त़रफ़ ले जाना चाहते थे क्यूंकि येह तौबा की निय्यत से उस गाऊं की त़रफ़ चल पड़ा था अगर्चे अभी वहां तक पहुंचा न था। इतने में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमा दिया कि वोह गाऊं जहां येह जा रहा था क़रीब हो जाए और वोह गाऊं जहां से चला था दूर हो जाए चुनान्चे, ऐसा हो गया कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने नापने का हुक्म दिया तो एक बालिश्त येह क़ातिल उस गाऊं की त़रफ़ आगे बढ़ चुका था लेहाज़ा

अल्लाह तआ़ला ने उस को बख़्श दिया ।[1] येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है । (मिश्कात, जि. 1 स. 203)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि शैत़ान ने ख़ुदा से येह कहा कि ऐ मेरे रब ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक इन्सानों की रूहें उन के जिस्मों में हैं मैं हमेशा उन इन्सानों को बेहकाता और गुमराह करता रहूंगा तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि मुझ को मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल और बुलन्दिए रुत्बा की क़सम है कि जब तक वोह इन्सान मुझ से इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे मैं उन को हमेशा बख़्शता रहूंगा ।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 204)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि बन्दा जब गुनाह कर के ख़ुदा के हुज़ूर अपनी ख़त़ाओं का इक़रार कर के तौबा कर लेता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा को क़बूल फ़रमा लेता है ।[3]

(मिश्कात, जि. 1 स. 203)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है उन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बन्दा जब गुनाह कर के येह केह देता है कि ऐ मेरे रब ! मैं ने गुनाह कर लिया तू मुझे बख़्श दे तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या मेरा बन्दा इस बात को जानता है

1 .....صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ٥٦، الحدیث: ٣٤٧٠، ج٢، ص٤٦٦

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید خدری، الحدیث ١١٢٣٧، ج٤، ص٥٨

3 .....صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب فی حدیث الافك ...الخ، الحدیث ٢٧٧٠، ص١٤٩٠

कि उस का एक रब है जो गुनाहों को बख़्शता भी है और गुनाहों पर मुवाख़ज़ा भी फ़रमाता है, मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया। फिर जब तक **अल्लाह** चाहता है वोह बन्दा गुनाहों से रुका रेहता है फिर कोई गुनाह कर लेता है तो केहता है कि ऐ मेरे परवर दगार ! मैं ने एक गुनाह कर लिया है तू इस को बख़्श दे तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या मेरा बन्दा येह जानता है कि उस का एक रब है जो गुनाहों को बख़्शता भी है और उस पर मुवाख़ज़ा भी फ़रमाता है। मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया। फिर जब तक **अल्लाह** चाहता है बन्दा गुनाहों से रुका रेहता है। फिर कोई गुनाह कर लेता है तो केहता है कि ऐ मेरे रब ! मैं ने एक दूसरा गुनाह कर लिया है तू उस को बख़्श दे तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि क्या मेरा बन्दा येह जानता है कि उस का एक रब है जो गुनाहों को बख़्शता भी है और उस पर गिरिफ़्त भी करता है मैं ने अपने बन्दे को बख़्श दिया, मेरा बन्दा जो चाहे करे। इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।[1]

(मिश्कात, जि. 1 स. 203)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि जो शख़्स हमेशा इस्तिग़फ़ार करता रहेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देगा और हर फ़िक्रो ग़म से उस को ख़लासी देगा और उस को ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहां से उस को रोज़ी मिलने का गुमान भी नहीं था।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 204)

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب التوحید،باب قول اللّٰہ تعالٰی:یریدون...الخ،الحدیث۷۵۰۷،ج٤، ص٥٧٥

2 .....سنن ابی داود، کتاب الوتر،باب فی الاستغفار،الحدیث:۱۵۱۸،ج۲،ص۱۲۲

ह़दीस : 7

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला येह फ़रमाता है कि मेरे बारे में जो बन्दा येह यक़ीन रखता है कि मैं गुनाह बख़्श देने की कुदरत रखता हूं तो मैं उस बन्दे को बख़्श देता हूं और मैं कोई परवाह नहीं करता हूं जब तक कि वोह मेरे साथ शिर्क न करे।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 204)

ह़दीस : 8

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने गुनाह कर के ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार कर लिया तो वोह गुनाह पर अड़ जाने वाला नहीं केहलाएगा अगर्चे दिन भर में वोह उस गुनाह को सत्तर मरतबा कर डाले।[2] इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 204)

ह़दीस : 9

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में दो दोस्त थे एक इ़बादत करने में बड़ी मेह़नत करता था और दूसरा येही केहता रेहता था कि मैं गुनहगार हूं। तो इ़बादत गुज़ार उस से केहने लगा कि तू गुनाह छोड़ दे तो वोह बोला कि तुम मेरा मुआ़मला मेरे रब पर छोड़ दो। एक दिन ऐसा हुवा कि इ़बादत गुज़ार ने अपने गुनहगार दोस्त को एक बहुत बड़ा गुनाह करते हुवे देखा तो उस ने कहा कि तू गुनाह करना छोड़ दे। इस पर जवाब में गुनहगार ने येह केह दिया कि तुम मेरा मुआ़मला मेरे रब पर छोड़ दो क्या तुम मेरे निगरां और निगेहबान बना कर भेजे गए हो ? येह सुन कर

1 .....شرح السنة، كتاب الرقاق، باب الرجاء وسعة رحمة الله، الحديث ٤٠٨٦، ج٧، ص٣٨٥

2 .....سنن الترمذی، احادیث شتی، الحدیث: ٣٥٧٠، ٥، ص٣٢٧

इबादत गुज़ार दोस्त ने केह दिया कि **अल्लाह** तआ़ला तुझ को कभी नहीं बख़्शेगा और न तुझ को जन्नत में दाख़िल करेगा। इस के बाद **अल्लाह** तआ़ला ने उन दोनों के पास अपने फ़रिश्ते मलकुल मौत को भेज दिया और उन्हों ने दोनों की रूह़ को क़ब्ज़ कर लिया। जब दोनों दोस्त ख़ुदा के दरबार में इकठ्ठे हुवे तो **अल्लाह** तआ़ला ने गुनहगार से फ़रमाया कि तू मेरी रेह़मत से जन्नत में दाख़िल हो जा और इबादत गुज़ार से फ़रमाया कि क्या तू मेरे बन्दे को मेरी रेह़मत से मेह़रूम कर सकता है? फिर ख़ुदा ने फ़रमाया कि ऐ मेरे फ़रिश्तो! तुम इस को दोज़ख़ में ले जाओ।[1] इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 205)

ह़दीस : 10

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि क़ब्र में मुर्दे की मिसाल उस ग़र्क़ होने वाले की है जो लोगों से मदद के लिए फ़रियाद कर रहा हो, मुर्दा इन्तिज़ार करता रेहता है कि बाप, मां, भाई या दोस्त की त़रफ़ से उस को दुआ़ पहुंचे और जब किसी की त़रफ़ से कोई दुआ़ उस को पहुंचती है तो वोह उस के नज़्दीक दुन्या और दुन्या के तमाम सामानों से ज़्यादा मेह़बूब होती है और **अल्लाह** तआ़ला ज़मीन वालों की त़रफ़ से दुआ़ओं का सवाब पहाड़ों के मिस्ल क़ब्र वालों की क़ब्रों में पहुंचाता है और बिलाशुबा ज़िन्दों का तोह़फ़ा मुर्दों की त़रफ़ येही है कि जो लोग ज़िन्दा हैं वोह मुर्दों के लिए इस्तिग़फ़ार और उन की मग़फ़िरत के लिए दुआ़एं करते रहें।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 206)

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی ہریرۃ،الحدیث:۸۲۹۹،ج۳،ص۲۱۰

2 .....شعب الایمان،باب فی برالوالدین،فصل فی حفظ...الخ،الحدیث۷۹۰۵،ج۶، ص۲۰۳

ह़दीस : 11

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि गुनाह से तौबा करने वाला मिस्ल उस शख़्स के गुनाहों से पाक हो जाता है जिस ने गुनाह किया ही नहीं।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 207)

ह़दीस : 12

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस के नामए आमाल में ज़्यादा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार हो उस के लिए मुबारक बादी है।[2]

(मिश्कात, जि. 1 स. 206)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के गुनाहों से बहुत नाराज़ होता है लेकिन अगर बन्दा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर अपने गुनाहों का इक़रार कर के तौबाओ इस्तिग़फ़ार कर ले तो वोह ऐसा अरह़मुर्राह़िमीन है कि न सिर्फ़ अपने बन्दों के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है बल्कि वोह अपने फ़ज़्लो करम का इस दरजा इज़हार फ़रमाता है कि

فَاُولٰٓئِکَ یُبَدِّلُ اللّٰہُ سَیِّاٰتِہِمْ حَسَنٰتٍ[3]

कि **अल्लाह** तआ़ला तौबा करते ही बन्दों के गुनाहों को नेकी बना देता है। मसलन किसी बन्दे ने एक लाख गुनाह कर के तौबा कर लिया तो **अल्लाह** तआ़ला ऐसा करीम व रह़ीम है कि बन्दे के एक लाख गुनाहों को एक लाख नेकी बना देता है मगर शर्त़ येह है कि सिद्क़ दिल से सच्ची तौबा करे।

---

1 .....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث: ٤٢٥٠، ج٤، ص٤٩١

2 .....سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب الاستغفار، الحديث: ٣٨١٨، ج٤، ص٢٥٧

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा। (پ١٩، الفرقان: ٧٠)

www.dawateislami.net

तौबा का त़रीक़ा

तौबा का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि गुनाह के बाद वुज़ू करे और दो रक्अ़त नमाज़ सलातुत्तौबा की निय्यत से पढ़े फिर अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर खुदा से येह अ़ह्द करे कि मैं अब कभी भी येह गुनाह न करूंगा फिर इस तौबा पर क़ाइम रहे और उस गुनाह के क़रीब न जाए और खुदा عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाह की बख़्शिश और मुआ़फ़ी मांगे।

﴾27﴿ अज़्कारे मासूरा

हर वोह लफ़्ज़ या जुम्ला जिस से ख़ुदावन्दे कुद्दूस की अ़ज़मत व बुज़ुर्गी और किब्रियाई का इज़हार होता हो उस को पढ़ना येह ज़िक्रे इलाही है मगर कुछ ऐसे कलिमात और दुआ़एं हैं जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल हैं कि उन को ख़ुद हुज़ूर ने पढ़ा या उन के पढ़ने का हुक्म दिया या उन को पढ़ने की फ़ज़ीलत या फ़ाएदा और सवाब बताया। ऐसे कलिमात और दुआ़ओं को "अज़्कारे मासूरा" केहते हैं दूसरे अज़्कार और दुआ़ओं की ब निस्बत अज़्कारे मासूरा को पढ़ना बहुत ही अफ़्ज़लो आला ज़िक्र और बाइ़से अज्रो सवाब अ़मले सालेह़ है इस लिए हम चन्द अज़्कारे मासूरा भी तेह़रीर कर रहे हैं क्यूंकि येह भी उस आमाले सालेह़ा में से हैं जो जन्नत में ले जाने वाले हैं।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तमाम कलामों में अफ़्ज़ल येह चार कलिमात हैं : "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" और एक रिवायत

में यूं है कि तमाम कलामों में **अल्लाह** तआ़ला को सब से ज़्यादा येह चारों कलिमात मेह़बूब हैं : "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" और इन चारों में से जिस को चाहो पेहले पढ़ो जिस को चाहो बाद में पढ़ो इस में कोई ह़रज नहीं ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ" को मैं पढ़ूं येह मुझ को उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा मेह़बूब है जिन पर सूरज तुलूअ़ करता है ।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स दिन भर में एक सौ मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ लेगा उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे अगर्चे वोह गुनाह समुन्दर के झाग के मिस्ल हों (यानी बहुत ज़्यादा हों) । इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है ।[3] (मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दो कलिमे हैं कि ज़बान पर बहुत ही हल्के हैं और मीज़ाने अ़मल में बहुत भारी हैं

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۲۹٤،ج۱، ص٤۲۹

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۲۹٥،ج۱، ص٤۳۰

3 ..... مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۲۹٦،ج۱، ص٤۳۰

और रह़्मान को बहुत मेह़बूब हैं : [1] سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ
येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है ।(मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह पूछा गया कि कौन सा कलाम अफ़्ज़ल है ? तो आप ने फ़रमाया कि वोह कलाम जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने अपने फ़रिश्तों के लिए चुन लिया है । यानी سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है ।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स येह दुआ़ पढ़ेगा जन्नत में उस के लिए एक दरख़्त लगा दिया जाएगा । سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है ।[3](मिश्कात, जि. 1 स. 200)

ह़दीस : 7

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो दिन में सौ मरतबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ पढ़ लेगा उस को दस ग़ुलामों के आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उस के लिए एक सौ नेकियां लिखी जाएंगी और उस के एक सौ गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे और दिन भर यहां तक कि शाम हो जाए वोह शैत़ान से मेह़फ़ूज़ रहेगा और कोई उस से ज़्यादा फ़ज़ीलत

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۲۹۸،ج۱، ص۴۳۰

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۳۰۰،ج۱، ص۴۳۰

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۲۹۸،ج۱، ص۴۳۱

वाला अ़मल नहीं कर सकता मगर वोह शख़्स जो इस दुआ़ को एक सौ से ज़्यादा मरतबा पढ़े । इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 201)

ह़दीस : 8

ह़ज़रते बिलाल बिन यसार बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि मुझ से मेरे बाप ने मेरे दादा से रिवायत करते हुवे बयान किया कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जिस ने येह दुआ़ पढ़ी उस के सब गुनाह बख़्श दिए जाएंगे अगर्चे जेहाद से भागा हो । اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ इस ह़दीस को तिरमिज़ी और अबू दावूद ने रिवायत किया है ।[2]

(मिश्कात, जि. 1 स. 205)

ह़दीस : 9

ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार येह है :

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰـہَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَ اَبُوْٓءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

जो शख़्स इस दुआ़ को यक़ीन रखते हुवे दिन में पढ़ ले और उसी दिन रात आने से पेहले मर जाए तो वोह जन्नती है और जो शख़्स यक़ीन

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۳۰۲،ج۱، ص۴۳۱

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب الاستغفار والتوبۃ،الحدیث۲۳۵۳،ج۱، ص۴۳۹

रखते हुवे रात में इस दुआ़ को पढ़ ले और सुब्ह़ होने से पेहले उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नती है। बुख़ारी ने इस ह़दीस को रिवायत किया है।[1](मिश्कात, जि. 1 स. 206)

ह़दीस : 10

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सुब्ह़ करते तो येह दुआ़ पढ़ते :

"اَللّٰھُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ"

और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब शाम करते थे तो येह दुआ़ पढ़ते थे :

"اَللّٰھُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ"

इस ह़दीस को तिरमिज़ी व अबू दावूद व इब्ने माजा ने रिवायत किया है।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 209)

ह़दीस : 11

ह़ज़रते अबान बिन उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने अपने बाप से सुना वोह केहते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो बन्दा हर दिन की सुब्ह़ में और हर रात की शाम में तीन मरतबा येह दुआ़ पढ़ ले तो दिन और रात में कोई चीज़ उस को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

इस ह़दीस को तिरमिज़ी व इब्ने माजा व अबू दावूद ने रिवायत किया है।[3](मिश्कात, जि. 1 स. 209)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب الاستغفار والتوبۃ،الحدیث۲۳۳۵،ج۱، ص۴۳۶

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب مایقول عند...الخ،الحدیث۲۳۸۹،ج۱، ص۴۴۶

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب مایقول عند...الخ،الحدیث۲۳۹۱،ج۱، ص۴۴۷

ह़दीस : 12

ह़ज़रते मक्ह़ूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि तुम ब कसरत पढ़ा करो : لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ क्यूंकि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और ह़ज़रते मक्ह़ूल ने फ़रमाया कि जिस ने لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ وَلَامَنْجٰی مِنَ اللّٰہِ اِلَّا اِلَیْہِ पढ़ लिया तो **अल्लाह** तआ़ला उस से तक्लीफ़ों के सत्तर दरवाज़े दफ़्अ़ फ़रमा देगा कम से कम येह कि मोह़ताजी इस के पास नहीं आएगी।[1](मिश्कात, जि. 1 स. 202)

ह़दीस : 13

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ निनानवे बीमारियों की दवा है, सब से कम दवा येह है कि इस के पढ़ने वाले को कोई रंजो ग़म नहीं होता।[2](मिश्कात, जि. 1 स. 202)

और दूसरी रिवायत में है कि لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ अ़र्श के नीचे का एक कलिमा और जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है जब कोई बन्दा इस को पढ़ता है तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मेरा बन्दा मेरा फ़रमां बरदार हो गया और इस ने अपना सब कुछ मेरे सिपुर्द कर दिया।[3](मिश्कात, जि. 1 स. 202)

ह़दीस : 14

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सूखे पत्ते वाले दरख़्त के पास से गुज़रे और अपने

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث ۲۳۱۹،ج۱، ص۴۳۴

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث ۲۳۲۰،ج۱، ص۴۳۴

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث ۲۳۲۱،ج۱، ص۴۳۴

अ़सा से उस दरख़्त को मार दिया तो उस के पत्ते झड़ गए फिर आप ने फ़रमाया कि जो इन कलिमात को पढ़ ले उस के तमाम गुनाह इसी त़रह़ झड़ जाएंगे वोह कलिमात येह हैं।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

(मिश्कात, जि. 1 स. 302)

ह़दीस : 15

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अफ़्ज़ल ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ है और अफ़्ज़ल दुआ़ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ है।[2]

ऐब छुपाइए जन्नत में जाइए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो आदमी अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दापोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 3 स. 145)

नाबीना को ले कर चलने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो किसी नाबीना को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2 स. 255)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۳۱۸،ج۱، ص۴۳۳

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الدعوات،باب ثواب التسبیح...الخ،الحدیث۲۳۰۶،ج۱، ص۴۳۱

﴾28﴿ अल्लाह के लिए महब्बत व अदावत

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ خَرَجَ عَلَیْنَا رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ اَتَدْرُوْنَ اَیُّ الْاَعْمَالِ اَحَبُّ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی قَالَ قَائِلٌ الصَّلٰوۃُ وَالزَّکٰوۃُ وَقَالَ قَائِلٌ اَلْجِھَادُ قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اَحَبَّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰہِ۔(رواہ احمد و ابوداود)[1](مشکوٰۃ،ج۲،ص۴۲۷)

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि हमारे पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि कौन सा अ़मल **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक सब से ज़्यादा मेह़बूब है ? तो किसी केहने वाले ने कहा कि नमाज़ व ज़कात और किसी ने कहा कि जेहाद तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेशक तमाम आमाल में सब से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मेह़बूब और प्यारा अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए दोस्ती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए दुश्मनी करना है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ قَالَ کُنْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ فِی الْجَنَّۃِ لَعُمُدًا مِّنْ یَاقُوْتٍ عَلَیْھَا غُرَفٌ مِّنْ زَبَرْجَدٍ لَھَا اَبْوَابٌ مُفَتَّحَۃٌ تُضِیْئُ کَمَا یُضِیْئُ الْکَوْکَبُ الدُّرِّیُّ فَقَالُوْا مَنْ یَّسْکُنُھَا قَالَ اَلْمُتَحَابُّوْنَ فِی اللّٰہِ وَالْمُتَجَالِسُوْنَ فِی اللّٰہِ وَالْمُتَلَاقُوْنَ فِی اللّٰہِ[2]

(مشکوٰۃ،ج۲،ص۴۲۷)

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب الحب فی اللّٰہ ...الخ،الحدیث:۵۰۲۱،ج۲، ص۲۲۰

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب الحب فی اللّٰہ...الخ،الحدیث:۵۰۲۶،ج۲، ص۲۲۱

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में था तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत में याक़ूत के चन्द ऐसे सुतून हैं कि उन के ऊपर ज़बरजद के बालाख़ाने हैं जिन के दरवाज़े खुले हुवे हैं ऐसे चमकते हैं जैसे रौशन तारा चमकता है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि उन बालाख़ानों में कौन लोग रहेंगे ? तो इरशाद फ़रमाया कि वोह लोग जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिए एक दूसरे की हम नशीनी करने वाले हैं और **अल्लाह** तआ़ला ही के लिए एक दूसरे से मुलाक़ात करने वाले हैं।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ اُمَامَۃَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ اَحَبَّ لِلّٰہِ وَاَبْغَضَ لِلّٰہِ وَاَعْطٰی لِلّٰہِ وَمَنَعَ لِلّٰہِ فَقَدِ اسْتَکْمَلَ الْاِیْمَانَ۔رواہ ابوداود [1]

(مشکوۃ،ج۱،ص۱۴)

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए दुश्मनी की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए कुछ दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मन्अ़ कर दिया तो उस ने ईमान को कामिल बना लिया। इस ह़दीस को अबू दावूद ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 4

عَنْ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ مِنْ عِبَادِ اللّٰہِ لَاُنَاسًا مَا ھُمْ بِاَنْبِیَاءِ وَلَاشُھَدَاءَ یَغْبِطُھُمُ الْاَنْبِیَاءُ وَالشُّھَدَاءُ بِمَکَانِھِمْ مِنَ اللّٰہِ قَالُوْا

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الایمان،الفصل الثانی،الحدیث:۳۰،ج۱،ص۲۷

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ تُخْبِرُنَا مَنْ هُمْ قَالَ هُمْ قَوْمٌ تَحَابُّوْا بِرُوْحِ اللّٰهِ عَلٰى غَيْرِ اَرْحَامٍ بَيْنَهُمْ وَلَا اَمْوَالٍ يَّتَعَاطُوْنَهَا فَوَاللّٰهِ اِنَّ وُجُوْهَهُمْ لَنُوْرٌ وَاِنَّهُمْ لَعَلٰى نُوْرٍ لَا يَخَافُوْنَ اِذَا خَافَ النَّاسُ وَلَا يَحْزَنُوْنَ اِذَا حَزِنَ النَّاسُ وَقَرَأَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ: اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ [1] رواه ابو داود۔[2] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۲۶)

हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से कुछ ऐसे लोग हैं जो न अम्बिया हैं न शुहदा मगर **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उन को मिलने वाले मर्तबों पर अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और शुहदा علیہم الرحمۃ रश्क करेंगे तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम लोगों को ख़बर दीजिए कि येह कौन लोग होंगे ? तो इरशाद फ़रमाया कि येह वोह क़ौम होगी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत के साथ एक दूसरे से मह़ब्बत करते रहे होंगे। बग़ैर इस के कि उन लोगों के दरमियान कोई रिश्तेदारी होगी न येह लोग आपस में मालो सामान का लेन देन करते रहे होंगे तो ब ख़ुदा इन लोगों के चेहरे (क़ियामत के दिन) नूर होंगे और यक़ीनन येह लोग नूर के ऊपर होंगे और जब सब लोग ख़ौफ़ ज़दा होंगे उस वक़्त येह लोग बिला ख़ौफ़ होंगे और जब लोग ग़मगीन होंगे तो इन लोगों को कोई ग़म नहीं होगा। फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत पढ़ी कि "ख़बरदार ! **अल्लाह** के औलिया न इन पर कोई ख़ौफ़ होगा न येह लोग ग़मगीन होंगे।" इस ह़दीस को अबू दावूद ने रिवायत किया है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

《1》 **अल्लाह** ही के लिए मह़ब्बत और **अल्लाह** ही के लिए दुश्मनी, इस को अ़रबी ज़बान में اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰہِ केहते हैं।

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म। (پ۱۱، یونس:۶۲)

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الحب فی اللّٰہ...الخ، الحدیث:۵۰۱۲، ج۲، ص۲۱۹

www.dawateislami.net

इस का मत़लब येह है कि किसी से मेह़ज़ इस बिना पर मह़ब्बत की जाए कि वोह अल्लाह वाला और **अल्लाह** का मक़्बूल बन्दा है येह मह़ब्बत न किसी रिश्तेदारी की बिना पर हो न माल के लेन देन की बिना पर न और किसी ग़रज़े दुन्यावी की बिना पर, येह "اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ" है। और किसी से दुश्मनी मेह़ज़ इस बिना पर रखी जाए कि वोह **अल्लाह** का दुश्मन और उस के दरबार से फिटकारा हुवा है। येह दुश्मनी किसी ग़रज़े दुन्यावी और ख़्वाहिशे नफ़्सानी की बुन्याद पर न हो, येह "اَلْبُغْضُ فِی اللّٰہِ" है। मसलन हम लोग तमाम अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और तमाम सह़ाबाओ एह्ले बैत और तमाम औलिया व शुहदा व सालिह़ीन से मह़ब्बत रखते हैं तो हमारी येह मह़ब्बत मेह़ज़ इसी बुन्याद पर है कि येह लोग अल्लाह वाले और **अल्लाह** के प्यारे हैं, न इन लोगों से हमारी रिश्तेदारी है न कोई तिजारत न किसी क़िस्म का माली लेन देन है न कोई ग़रज़े दुन्यावी न कोई ख़्वाहिशे नफ़्सानी तो बिलाशुबा येह मह़ब्बत ख़ालिस **अल्लाह** ही के लिए है और यक़ीनन येह मह़ब्बत "اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ" है।

इसी त़रह़ हम शैत़ान, अबू लहब, अबू जह्ल और तमाम बद दीनों, बे दीनों मसलन वहाबियों, क़ादियानियों, राफ़िज़ियों, ख़ारिजियों वग़ैरा से जो अ़दावत और दुश्मनी रखते हैं तो सिर्फ़ इस बुन्याद पर कि येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के और उस के मेह़बूबों के दुश्मन हैं न तो इन लोगों ने हमारा कुछ बिगाड़ा है न हमारा माल लूटा है न हमारा कोई ह़क़ छीना है ग़रज़ इन लोगों से दुश्मनी करने में हमारी कोई ख़्वाहिशे नफ़्सानी या ग़रज़े दुन्यावी नहीं है। लेहाज़ा बिलाशुबा और यक़ीनन येह दुश्मनी "اَلْبُغْضُ فِی اللّٰہِ" है और येह हमारी दोस्ती और दुश्मनी ऐसी है जो यक़ीनन हम को जन्नत में ले जाने वाली और बड़े बड़े मरातिब व दरजात दिलाने वाली है। इसी लिए इस दोस्ती और दुश्मनी को मज़्कूरा बाला ह़दीसों में जन्नत में ले जाने वाला अ़मल फ़रमाया गया है।

लेकिन अफ़्सोस ! कि आज कल सेंकड़ों बल्कि हज़ारों लाखों मुसलमान इस जन्नती अ़मल से ग़ाफ़िल हैं बल्कि बहुत से तो जान बूझ कर इस के तारिक बल्कि मुन्किर हैं चुनान्चे, येह लोग मेह्ज़ अपनी दुन्यावी अग़राज़ व मक़ासिद की बिना पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वालों से दुश्मनी और **अल्लाह** के दुश्मनों यानी काफ़िरों, मुर्तद्दों, बद दीनों, बे दीनों से मह़ब्बत और दोस्ती रखते हैं और जन्नती आमाल की शाहराहों को छोड़ कर जहन्नमी धन्दों के गोरख धन्धों और भूल भुलय्यों में पड़े हुवे हैं हम इन ह़ालात में अब इस के सिवा और क्या कर सकते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करें कि अरह़मुर्राहिमीन ! इन लोगों को गुमराही की दलदल से निकाल कर हिदायत की सीधी सड़क पर पहुंचा दे। (आमीन)

﴾2﴿ ह़दीस नम्बर 1 में जो येह फ़रमाया गया है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत और **अल्लाह** के लिए दुश्मनी येह तमाम आमाल में सब से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मेह़बूब है तो इस का येह मत़लब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ यानी नमाज़ व ज़कात और रोज़ा व ह़ज अदा करने के बाद और तमाम ह़राम कामों से बचने के बाद बाक़ी जो आमाल हैं उन में सब से ज़्यादा प्यारा अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक **अल्लाह** के लिए मह़ब्बत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए दुश्मनी है वरना ज़ाहिर है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ पर अ़मल करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़राम किए हुवे कामों से बचना, इस से बढ़ कर तो कोई अ़मल अफ़्ज़ल और ख़ुदा का मेह़बूब हो ही नहीं सकता क्यूंकि मुसलमान का बच्चा बच्चा जानता है कि मसलन नमाज़ तमाम आमाल से ज़्यादा अफ़्ज़ल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को प्यारी है।

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 2 का ह़ासिल येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत का मत़लब येह है कि दिल में **अल्लाह** ही के लिए किसी की उल्फ़त हो और अगर किसी की सोह़बत में बैठे तो इस में भी येही मह़ब्बते ख़ुदावन्दी का जल्वा कार फ़रमा हो हरगिज़ हरगिज़ किसी रिश्तेदारी या माली फ़वाइद की ग़रज़ से न हो। ख़ुलासा येह कि हम नशीनी, मुलाक़ात,

साथ में खाना पीना, उठना बैठना, अदबो ताज़ीम जो कुछ भी हो। सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के वासिते हो, इस में हरगिज़ हरगिज़ किसी ग़रज़े नफ़्सानी का अ़मल दख़्ल न हो तो येह मह़ब्बत बिलाशुबा और यक़ीनन "اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ" है जो यक़ीनन जन्नत में ले जाने वाली है।

﴾4﴿ ह़दीस नम्बर 3 में जो फ़रमाया गया कि अम्बिया व शुहदा उन के मर्तबों पर रश्क करेंगे। तो इस का मत़लब येह है कि अम्बिया व शुहदा उन के मरातिब व दरजात को देख कर तअ़ज्जुब करेंगे और ख़ुश हो कर उन लोगों की मदहो सना करेंगे रश्क करने का यहां येह मत़लब नहीं कि अम्बिया और शुहदा उन के मर्तबों को ह़ासिल करने की तमन्ना और आरज़ू करेंगे क्यूंकि अम्बिया और शुहदा को तो **अल्लाह** तआ़ला उन से कहीं बढ़ चढ़ कर अफ़्ज़लो आला मरातिब व दरजात अ़त़ा फ़रमाएगा फिर कमतर दरजे के मरातिब की तमन्ना और आरज़ू करने का क्या मत़लब हो सकता है ? लेहाज़ा वाज़ेह़ रहे कि इस ह़दीस में يُغْبِطُهُمْ के लफ़्ज़ से ग़िब्त़ा (रश्क) के मजाज़ी माना मुराद हैं। यानी अम्बिया व शुहदा ख़ुश होंगे न येह कि अम्बिया उन के मर्तबों की तमन्ना करेंगे।[1] (ह़ाशिया मिश्कात ब ह़वाला लम्आ़त) (मिश्कात, जि. 2 स. 426)

लिल्लाही मह़ब्बत व अ़दावत की अहम्मिय्यत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत व अ़दावत की क्या अहम्मिय्यत और कितनी ज़रूरत है ? इस सिलसिले में एक ह़दीस बहुत ज़्यादा नसीह़त ख़ेज़ व इ़ब्रत अंगेज़ है इस लिए इस मक़ाम पर हम इस ह़दीस का तर्जमा तेह़रीर कर देते हैं शायद कि कुछ लोगों को इस से हिदायत मिल जाए।

ह़दीस :

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबियों में

1 .....اشعة اللمعات، کتاب الآداب، باب الحب فی اللّٰہ، فصل ثانی، ج٤، ص١٤٦

से एक नबी की त़रफ़ येह वह़ी भेजी कि आप फ़ुलां आ़बिद से केह दीजिए कि दुन्या में तू ज़ाहिद बन कर रहा तो तुझ को इस का फ़ाएदा दुन्या ही में मिल गया कि तू ने अपने नफ़्स की राह़त को जल्दी से पा लिया और तू ने दुन्या से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ कर के मेरी त़रफ़ रुजूअ़ किया और तू मेरा हो गया तो मेरी वज्ह से तू साह़िबे इ़ज़्ज़त बन गया। अब तू येह बता कि मेरा ह़क़ जो तेरे ऊपर है इस मुआ़मले में तू ने कौन सा अ़मल किया है ? तो वोह आ़बिद कहेगा कि ऐ रब ! वोह कौन सा अ़मल है ? तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि क्या तू ने मेरे लिए किसी दुश्मन से दुश्मनी, और मेरे लिए किसी दोस्त से दोस्ती भी की है ?[1] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 9 स. 3)

اَللّٰهُ اَكْبَر ! मुसलमानो ! ग़ौर करो कि ज़ाहिद होने और दुन्या से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करने की ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के दरबार में इतनी अहम्मिय्यत नहीं है जितनी कि उस दरबार में ज़्यादा अहम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए मह़ब्बत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए अ़दावत है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नत की नेमतों को इस पर मौक़ूफ़ ठेहराया। ! سُبْحَانَ الله ! سُبْحَانَ الله क्या ख़ूब है "اَلْحُبُّ فِی اللّٰهِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰهِ" का जल्वा ! मगर

आंख वाला तेरे जल्वों का तमाशा देखे दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे ?

﴾29﴿ ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ اَنَّهٗ سَمِعَ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَقُصُّ عَلَی الْمِنْبَرِ وَهُوَ یَقُوْلُ: **وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ**[2] قُلْتُ وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الصحبة، الباب الاول، الحدیث: ۲٤٦٥۳، ج٥، الجزء۹، ص٤

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिए दो जन्नतें हैं। (پ۲۷، الرحمٰن: ٤٦)

www.dawateislami.net

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ فَقَالَ الثَّانِيَةَ: وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ فَقُلْتُ الثَّانِيَةَ وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ فَقَالَ الثَّالِثَةَ: وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ فَقُلْتُ الثَّالِثَةَ وَاِنْ زَنٰى وَاِنْ سَرَقَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ وَاِنْ رَغِمَ اَنْفُ اَبِى الدَّرْدَاءِ رواه احمد[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۳۷)

हज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इन्हों ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जब कि आप मिम्बर पर तक़रीर फ़रमा रहे थे येह सुना कि जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा होने से डर गया उस के लिए दो जन्नतें हैं तो मैं ने कहा कि अगर्चे वोह ज़िना करे, अगर्चे वोह चोरी करे या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा फ़रमाया कि जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डर गया उस के लिए दो जन्नतें हैं। तो मैं ने दोबारा कहा कि अगर्चे वोह ज़िना करे, अगर्चे वोह चोरी करे या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ? फिर हुज़ूर ने तीसरी बार फ़रमाया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े होने से डर गया उस के लिए दो जन्नतें हैं। तो मैं ने तीसरी बार येह अ़र्ज़ किया कि अगर्चे वोह ज़िना करे, अगर्चे वोह चोरी करे या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर्चे अबू दरदा की नाक मिट्टी में मिल जाए। (मगर उस के लिए दो जन्नतें हैं।)

हदीस : 2

عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ كُلُّ عَيْنٍ بَاكِيَةٌ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِلَّا عَيْنٌ بَكَتْ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَعَيْنٌ فُقِئَتْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ عَيْنٌ غَضَّتْ عَنْ مَحَارِمِ اللّٰهِ وَعَيْنٌ

1 .....مشكاة المصابيح، كتاب الدعوات، باب سعة رحمة الله، الحديث: ٢٣٧٦، ج١، ص٤٤٣

بَاتَتْ سَاهِرَةً يُّبَاهِي اللّٰهُ تَعَالٰى بِهِ الْمَلَائِكَةَ يَقُوْلُ اُنْظُرُوْا اِلٰى عَبْدِيْ رُوْحُهٗ عِنْدِيْ وَجَسَدُهٗ فِيْ طَاعَتِيْ وَتَجَافٰى بَدَنُهٗ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنِيْ خَوْفًا وَّطَمَعًا فِيْ رَحْمَتِيْ اِشْهَدُوْا اَنِّيْ قَدْ غَفَرْتُ لَهٗ [1] (کنزالعمال، ج۲۰، ص۳۰۸)

हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि क़ियामत में चार आंखों के सिवा तमाम आंखें रोएंगी ? चारों आंखें येह हैं : ﴾1﴿ वोह आंख जो दुन्या में **अल्लाह** के ख़ौफ़ से रो चुकी हो । ﴾2﴿ वोह आंख जो जेहाद में ज़ख़्मी कर दी गई हो । ﴾3﴿ वोह आंख जो **अल्लाह** की ह़राम की हुई चीज़ों से नीची रही । ﴾4﴿ वोह आंख जो ख़ुदा की इबादत में रातों को जागती रही । **अल्लाह** तआ़ला उन बन्दों के ज़रीए़ फ़रिश्तों से इज़हारे फ़ख़्र फ़रमाएगा और कहेगा कि ऐ फ़रिश्तो ! मेरे बन्दे को देख लो कि उस की रूह़ मेरे पास है और उस का बदन मेरी फ़रमां बरदारी में है उस का बदन ख़्वाब गाहों से अलग रेहता है मुझ से डरते हुवे और मेरी रेह़मत की उम्मीद में मेरी इबादत करता है तुम लोग गवाह रहो कि मैं ने उस को बख़्श दिया ।

तशरीह़ात व फ़वाइद

मज़्कूरा बाला दोनों ह़दीसों में ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी को जन्नत में ले जाने वाला अ़मल बताया गया है । इस के इलावा दूसरी बहुत सी ह़दीसों और क़ुरआने मजीद की आयतों का भी येही मज़मून है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला जन्नती है बल्कि ह़क़ीक़त तो येह है कि अगर ग़ौर से देखा जाए तो येह ज़ाहिर होगा कि "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से डरना" येह तमाम नेकियों का सर चश्मा है और "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से न डरना" येह तमाम गुनाहों का सर चश्मा है इस लिए यक़ीनन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला जन्नती होगा और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से न डरने वाला जन्नत से मेह़रूम होगा । (واللہ تعالٰی اعلم)

1 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث: ٤٣٤٦١، ج٨، الجزء١٥، ص٣٦٨

www.dawateislami.net

﴾30﴿ मौत को याद करना

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَكْثِرُوْا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتِ۔رواه الترمذی و النسائی و ابن ماجه [1]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۴۰)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम लोग लज़्ज़तों को काट देने वाली यानी मौत को ब कसरत याद करो । इस ह़दीस को तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजा ने रिवायत किया है ।

ह़दीस : 2

عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ اَنَّ نَبِیَّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَاتَ يَوْمٍ لِاَصْحَابِهٖ اِسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ قَالُوْا اِنَّا نَسْتَحْيِیْ مِنَ اللّٰهِ يَا نَبِیَّ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ قَالَ لَيْسَ ذٰلِكَ وَلٰكِنْ مَنِ اسْتَحْيٰى مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ فَلْيَحْفَظِ الرَّاْسَ وَمَا وَعٰى وَلْيَحْفَظِ الْبَطْنَ وَمَاحَوٰى وَلْيَذْكُرِ الْمَوْتَ وَالْبِلٰى وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَكَ زِيْنَةَ الدُّنْيَا فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ فَقَدِ اسْتَحْيٰى مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ ۔ رواه احمد و الترمذی [2]

(مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۴۰)

ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन अपने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجنائز،باب تمنی الموت وذکرہ،الحدیث:۱۶۰۷،ج۱، ص۳۰۶

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجنائز،باب تمنی الموت وذکرہ،الحدیث:۱۶۰۸، ج۱،ص۳۰۶

फ़रमाया कि तुम लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो जैसा कि ह़या करने का ह़क़ है तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि बेशक हम लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते हैं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه, तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह वोह चीज़ नहीं है लेकिन जो शख़्स अल्लाह से ऐसी ह़या करे जैसा कि ह़क़ है तो उस को चाहिए कि वोह सर की और उन ख़यालात की निगेहबानी करे जिन को सर ने याद रखा है और चाहिए कि पेट और पेट ने जो ग़िज़ा जम्अ़ की है उस ग़िज़ा की निगेहबानी रखे और मौत और गलने सड़ने को याद करे और जो आख़िरत का इरादा करे वोह दुन्या की ज़ीनत को छोड़ दे तो जिस ने येह सब काम कर लिया यक़ीनन उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ऐसी ह़या की जैसा कि ह़या का ह़क़ है। इस ह़दीस को इमाम अह़मद और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 3

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ اَخَذَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْكِبَيَّ فَقَالَ كُنْ فِى الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ اَوْعَابِرُ سَبِيْلٍ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَقُوْلُ اِذَا اَمْسَيْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ الصَّبَاحَ وَاِذَا اَصْبَحْتَ فَلَا تَنْتَظِرِ الْمَسَاءَ وَخُذْ مِنْ صِحَّتِكَ لِمَرَضِكَ وَمِنْ حَيٰوتِكَ لِمَوْتِكَ۔رواه البخارى[1] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۳۹)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे दोनों कन्धों को पकड़ा फिर फ़रमाया : तुम दुन्या में इस त़रह़ रहो गोया कि तुम परदेसी हो बल्कि गोया तुम रास्ता चलने वाले हो। और ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाया

1 .....مشكاة المصابيح، كتاب الجنائز، باب تمنى الموت وذكره، الحديث: ١٦٠٤، ج١، ص٣٠٥

करते थे कि जब तुम शाम करो तो सुब्ह़ का इन्तिज़ार मत करो और तुम जब सुब्ह़ करो तो शाम का इन्तिज़ार न करो और अपनी तनदुरुस्ती से अपनी बीमारी के लिए कुछ ले लो और अपनी ज़िन्दगी से अपनी मौत के लिए कुछ ले लो। इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 4

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لَا یَتَمَنّٰی اَحَدُکُمُ الْمَوْتَ اِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهٗ اَنْ یَزْدَادَ خَیْرًا وَّاِمَّا مُسِیْئًا فَلَعَلَّهٗ اَنْ یَّسْتَعْتِبَ۔رواہ البخاری[1] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۳۹)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम में से कोई मौत की तमन्ना न करे क्यूंकि या तो वोह नेकूकार होगा तो शायद कि कुछ और ज़्यादा नेकी करे और या बदकार होगा तो शायद कि तौबा कर ले। इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 5

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ تُوُفِّیَ رَجُلٌ بِالْمَدِیْنَةِ مِمَّنْ وُلِدَ بِهَا فَصَلّٰی عَلَیْهِ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ یَا لَیْتَهٗ مَاتَ بِغَیْرِ مَوْلِدِهٖ قَالُوْا وَلِمَ ذَاكَ یَارَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ اِنَّ الرَّجُلَ اِذَا مَاتَ بِغَیْرِ مَوْلِدِهٖ قِیْسَ لَهٗ مِنْ مَوْلِدِهٖ اِلٰی مُنْقَطَعِ اَثَرِهٖ فِی الْجَنَّةِ۔رواہ النسائی وا بن ماجہ[2](مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۳۸)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया जो मदीने ही

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجنائز،باب تمنی الموت وذکرہ،الحدیث:۱۵۹۸، ج۱،ص۳۰٤

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الجنائز،باب عیادۃالمریض...الخ،الحدیث:۱۵۹۳، ج۱،ص۳۰۳

www.dawateislami.net

में पैदा हुवा था तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, फिर इरशाद फ़रमाया कि काश ! येह शख़्स अपनी जाए पैदाइश के ग़ैर में मरा होता। सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह किस लिए ? तो इरशाद फ़रमाया कि जब आदमी अपनी जाए पैदाइश के ग़ैर में मरता है तो उस की पैदाइश की जगह से उस की वफ़ात की जगह तक नाप कर जन्नत में जगह दी जाती है। इस ह़दीस को नसाई व इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ मौत को याद करना जन्नत के आमाल में से यूं है कि आदमी जब हर वक़्त उस को याद रखेगा कि मुझे एक दिन मरना है और सारा मालो सामान और जाईदाद व मकान छोड़ कर ख़ाली हाथ दुन्या से चले जाना है तो उस को दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत के सामान जम्अ़ करने की फ़िक्र हो जाएगी और ज़ाहिर है कि दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की फ़िक्र येह दोनों चीज़ें हर क़िस्म की नेकियों का सर चश्मा हैं और हर क़िस्म के गुनाहों से बचने का बेहतरीन ज़रीआ़ हैं इस लिए मौत को ब कसरत याद करना येह जन्नत दिलाने वाले आमाल में से एक अ़मल है। और जन्नत में ले जाने वाली एक बड़ी शाहराह है।

﴾31﴿ बीमार पुर्सी

ह़दीस : 1

ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो वोह जब तक न लौट जाए बराबर लगातार जन्नत के मेवे चुनता रेहता है।[1] इस ह़दीस को मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 133)

1 .....صحيح مسلم، كتاب البر...الخ،باب فضل عيادة المريض،الحديث:٢٥٦٨، ص١٣٨٩

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जो मुसलमान किसी मुसलमान की बीमार पुर्सी के लिए सुब्ह़ को जाता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शाम तक उस के लिए रेह़्मत की दुआ़ करते रेहते हैं और अगर शाम को बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुब्ह़ तक उस के लिए दुआ़ए रेह़्मत करते रेहते हैं और जन्नत में उस के लिए एक बाग़ तय्यार हो जाता है।[1] इस ह़दीस को तिरमिज़ी व अबू दावूद ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 135)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और अपने मुसलमान भाई की बीमार पुर्सी को सवाब त़लब करने की निय्यत से जाए तो वोह साठ बरस की मसाफ़त की मिक़्दार के बराबर जहन्नम से दूर कर दिया जाएगा। इस ह़दीस को अबू दावूद ने रिवायत किया है।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 135)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मरीज़ की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो आस्मान से एक फ़रिश्ता पुकार कर येह केहता है कि ऐ शख़्स ! तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा है और तू ने

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، الحدیث: ۹۷۱، ج۲، ص ۲۹۰

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض...الخ، الحدیث: ۱۵۵۲، ج۱، ص ۲۹۸

www.dawateislami.net

जन्नत में से एक मन्ज़िल को अपना ठिकाना बना लिया।[1] इस ह़दीस को इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 137)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स किसी मरीज़ की बीमार पुर्सी करता है तो वोह बराबर लगातार रेह़मत में दाख़िल होता रेहता है यहां तक कि बैठ जाए और जब बैठ जाता है तो वोह रेह़मत में डूब जाता है।[2] इस ह़दीस को इमाम मालिक और इमाम अह़मद ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरीज़ की बीमार पुर्सी फ़रमाई तो इरशाद फ़रमाया कि तुम ख़ुश ख़बरी ह़ासिल करो इस लिए कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि येह बुख़ार मेरी आग है मैं इस को बन्दए मोमिन पर दुन्या में मुसल्लत़ कर देता हूं ताकि क़ियामत के दिन येह जहन्नम से इस का ह़िस्सा हो जाए।[3] इस ह़दीस को इमाम अह़मद व इब्ने माजा ने व बैहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

ह़दीस : 7

ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जब तुम किसी मरीज़

---

1 .....سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب...الخ، الحديث:١٤٤٣، ج٢، ص١٩٢

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبدالله، الحديث:١٤٢٦٤، ج٥، ص٣٠

3 .....سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب الحمى، الحديث:٣٤٧٠، ج٤، ص١٠٥

के पास दाख़िल हो तो उस से कहो कि वोह तुम्हारे लिए दुआ़ करे क्यूंकि उस की दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ के मिस्ल है।[1] इस ह़दीस को इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

ह़दीस : 8

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने फ़रमाया कि बीमार पुर्सी में मरीज़ के पास थोड़ी देर बैठना और शोर कम करना येह सुन्नत है। इस ह़दीस को रज़ीन ने रिवायत किया है।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

ह़दीस : 9

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बीमार पुर्सी ऊंटनी दोहने के वक़्त की मिक़्दार बराबर है और ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यिब की मुर्सल रिवायत में है कि बीमार पुर्सी का अफ़्ज़ल त़रीक़ा येही है कि बहुत जल्द मरीज़ के पास से उठ जाएं।[3] इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

ह़दीस : 10

ह़ज़रते शद्दाद बिन औस और ह़ज़रते सनाबही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि येह दोनों एक मरीज़ की बीमार पुर्सी के लिए गए तो इन दोनों ने मरीज़ से पूछा कि तुम ने किस ह़ाल में सुब्ह़ की ? तो उस ने कहा कि मैं ने नेमत की ह़ालत में सुब्ह़ की तो ह़ज़रते शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

---

1 .....سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی عيادة المريض، الحديث: ١٤٤١، ج٢، ص١٩١

2 .....مشكاة المصابيح، كتاب الجنائز، باب عيادة المريض...الخ، الحديث: ١٥٨٩، ج١، ص٣٠٣

3 .....شعب الايمان، باب فی عيادة المريض، الحديث: ٩٢٢١-٩٢٢٢، ج٦، ص٥٤٣، ٥٤٢

फ़रमाया कि तुम ख़ुश ख़बरी ह़ासिल करो कि गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया और ख़त़ाएं मुआ़फ़ हो गईं इस लिए कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मैं जब किसी बन्दए मोमिन को मुब्तला करता हूं और वोह इस इब्तिला पर मेरी ह़म्द करता है तो वोह अपनी इस बीमारी की ख़्वाबगाह से उठेगा तो वोह गुनाहों से इस त़रह़ पाको साफ़ हो जाएगा जिस त़रह़ उस दिन गुनाहों से पाको साफ़ था कि जिस दिन उस की मां ने उस को जना था और रब तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि मैं ने अपने बन्दे को मुक़य्यद और मुब्तला कर दिया था। लेहाज़ा (ऐ फ़रिश्तो !) इस के नामए आमाल को वैसा ही जारी रखो जैसा कि इस की तनदुरुस्ती की ह़ालत में जारी रखते थे।[1] इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 138)

मत़लब येह है कि तनदुरुस्ती की ह़ालत में बन्दे के नामए आमाल में जितने आमाल दर्ज होते थे फ़रिश्तों को हुक्म होता है कि बन्दा अगर्चे बीमारी में कोई अ़मल नहीं कर सकता मगर उस के नामए आमाल में वोही सब आमाल दर्ज करें जो वोह अपनी तनदुरुस्ती की ह़ालत में किया करता था।

﴾32﴿ सच्चा ताजिर

ह़दीस :

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ[2] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۴۳)

---

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل، حديث شداد بن اوس، الحديث:۱۷۱۱۸، ج۶، ص۷۷

2 .....مشكاة المصابيح، كتاب البيوع، المساهلة فى المعاملات، الحديث:۲۷۹۶، ج۱، ص۵۱۹

हज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सच्चा और अमानत दार ताजिर नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ (क़ियामत में) रहेगा।

मत़लब येह है कि जो मुसलमान ह़लाल तिजारत करे और तिजारत में सच्चाई और अमानत दारी को हमेशा अपना त़रीक़ए कार बनाए रखे तो ऐसा ताजिर जन्नती है और क़ियामत के दिन येह ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ रहेगा। ह़लाल त़रीक़े से रोज़ी ह़ासिल करना येह भी इबादत है और सच्चाई व अमानत दारी के साथ तिजारत कर के ह़लाल रोज़ी ह़ासिल करना येह हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस त़रीक़ा है लेहाज़ा ऐसा ताजिर बिलाशुबा जन्नती है।

﴾33﴿ लेन देन में नर्मी

ह़दीस : 1

हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम से पेहली उम्मतों का एक शख़्स उस के पास उस की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिए मलकुल मौत आए। फिर फ़रिश्तों ने उस से कहा कि तुम को इस का इल्म है कि तुम ने कोई नेकी की है ? तो उस ने कहा कि मैं तो नहीं जानता तो उस से कहा गया कि सोचो तो उस ने कहा कि मैं कुछ नहीं जानता लेकिन इतनी बात है कि मैं दुन्या में लोगों से सौदा बेचा करता था तो लोगों के साथ दरगुज़र का बरताव किया करता था कि मालदार को क़र्ज़ अदा करने में मोहलत दिया करता था और तंगदस्त से क़र्ज़ को मुआ़फ़ कर दिया करता था। बस उस की इतनी ही नेकी पर **अल्लाह** तआ़ला ने उस को जन्नत में दाख़िल कर दिया।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 243)

1 .....صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر...الخ، الحدیث: ۳۴۵۱، ج۲، ص۴۶۰

ह़दीस : 2

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला उस आदमी पर रेह़्म फ़रमाए जो बेचने ख़रीदने और तक़ाज़ा करने के वक़्त नर्म ख़ू रहे।[1] इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 243)

मज़्कूरा बाला दोनों ह़दीसों से मालूम हुवा कि मुआ़मलात यानी ख़रीदो फ़रोख़्त क़र्ज़ों के लेन देन में नर्मी का बरताव और नर्म ख़ूई इख़्तियार करना येह जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है और ऐसा आदमी ब हुक्मे ह़दीस जन्नती है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾34﴿ सच बोलना

सच बोलना भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है। इस के मुतअ़ल्लिक़ भी चन्द ह़दीसों के तराजुम पढ़ कर इब्रत ह़ासिल कीजिए और ख़ुदा के दरबार में सिद्दीक़ का लक़ब ह़ासिल कर के दोनों जहान के एज़ाज़ से सरफ़राज़ हो जाइए।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग सच बोलने को लाज़िम पकड़ लो इस लिए कि सच नेकी की त़रफ़ रेहनुमाई करता है और नेकी जन्नत में पहुंचाती है और आदमी हमेशा सच बोलता रेहता है और सच ही की जुस्तजू रखता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है। और तुम लोग अपने को झूट से बचाओ क्यूंकि झूट बदकारी का रास्ता दिखाता है और बदकारी

1 .....صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب السھولۃ...الخ، الحدیث:۲۰۷۶، ج۲، ص۱۲

जहन्नम में पहुंचा देती है और आदमी हमेशा झूट बोलता रेहता है और हमेशा झूट का क़स्द रखता है यहां तक कि ख़ुदा के नज़दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।[1] इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 2 स. 412)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे लिए छे चीज़ें क़बूल कर लो तो मैं तुम लोगों को जन्नत देना क़बूल कर लूंगा। ﴾1﴿ जब तुम में से कोई बात करे तो झूट न बोले। ﴾2﴿ और जब वादा करे तो वादा ख़िलाफ़ी न करे। ﴾3﴿ और जब अमीन बनाया जाए तो ख़ियानत न करे। ﴾4﴿ अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करे। ﴾5﴿ अपनी निगाहों को नीची रखे। ﴾6﴿ अपने हाथों को गुनाहों से रोके रखे।[2]

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स झूट को छोड़ दे ह़ालांकि वोह झूट उस के लिए बेकार और ग़ैर मुफ़ीद था तो उस के लिए जन्नत के कनारे में मह़ल बनाया जाएगा और जो ह़क़ पर होते हुवे झगड़े को छोड़ दे तो उस के लिए जन्नत के दरमियान में मह़ल तामीर किया जाएगा और जिस ने अपने अख़्लाक़ को अच्छा बना लिया उस के लिए जन्नत के आला ह़िस्से में मह़ल बनाया जाएगा।[3] इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 2 स. 412)

---

1 .....صحیح مسلم، کتاب البر...الخ،باب قبح الکذب...الخ،الحدیث:٢٦٠٧، ص١٤٠٥

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب حفظ اللسان...الخ،الحدیث:٤٨٧٠، ج٢،ص١٩٧

3 .....سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ،باب اجتناب البدع والجدل،الحدیث:٥١، ج١، ص٣٩

﴾35﴿ निकाह़

गुनाहों से बचने के लिए नेक निय्यती के साथ निकाह़ करना भी आमाले जन्नत में से एक अ़मल है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद मुलाह़ज़ा कीजिए।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जब बन्दे ने निकाह़ कर लिया तो उस ने अपने आधे दीन को मुकम्मल कर लिया तो उस को चाहिए कि निस्फ़ दीन में जो बाक़ी रेह गया है **अल्लाह** से डरता रहे।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 268)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन आदमी ऐसे हैं कि **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि इन तीनों की मदद फ़रमाए ﴾1﴿ वोह मुकातिब जो अपनी किताबत की रक़म अदा करने का इरादा रखता हो ﴾2﴿ वोह निकाह़ करने वाला जो पाक दामनी का इरादा रखता हो ﴾3﴿ **अल्लाह** तआ़ला की राह में जेहाद करने वाला।[2] इस ह़दीस को तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 2 स. 265)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया चार चीज़ें नबियों की सुन्नत में दाख़िल हैं : निकाह़, मिस्वाक, ह़या, ख़ुश्बू लगाना।[3]

---

1 .....شعب الایمان،باب فی تحریم الفروج،الحدیث:٥٤٨٦،ج٤،ص٣٨٢

2 .....سنن الترمذی،کتاب فضائل الجهاد،باب ماجاء فی المجاهد...الخ،الحدیث:١٦٦١، ج٣،ص٢٤٧

3 ..... مشکاۃالمصابیح،کتاب الطهارۃ،باب السواك،الحدیث:٣٨٢،ج١،ص٨٨

﴾36﴿ लड़कियों की परवरिश

ह़दीस : 1

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ دَخَلَتْ اِمْرَأَةٌ مَعَهَا اِبْنَتَانِ لَهَا تَسْأَلُ فَلَمْ تَجِدْ عِنْدِیْ شَیْئًا غَیْرَ تَمْرَةٍ فَاَعْطَیْتُهَا اِیَّاهَا فَقَسَمَتْهَا بَیْنَ اِبْنَتَیْهَا وَلَمْ تَاْكُلْ مِنْهَا ثُمَّ قَامَتْ فَخَرَجَتْ وَدَخَلَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ عَلَیْنَا فَاَخْبَرْتُهٗ فَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنِ ابْتُلِیَ مِنْ هٰذِهِ الْبَنَاتِ بِشَیْءٍ كُنَّ لَهٗ سِتْرًا مِّنَ النَّارِ[1]

(بخاری، ج۱، ص۱۹۰)

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि एक औ़रत अपनी दो बेटियों के साथ भीक मांगती हुई हमारे घर में दाख़िल हुई और मेरे पास एक खजूर के सिवा उस ने कुछ नहीं पाया मैं ने उस को वोही एक खजूर दे दी तो उस ने उस खजूर को अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक़्सीम कर दिया और ख़ुद उस ने उस में से कुछ नहीं खाया फिर उठी और चली गई जब नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे मकान में आए तो मैं ने हुज़ूर को इस वाक़िए की ख़बर दी तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स उन बेटियों के साथ मुब्तला किया गया येह बेटियां उस के लिए जहन्नम से पर्दा बन जाएंगी।

ह़दीस : 2

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَنْ كَانَتْ لَهٗ اُنْثٰى فَلَمْ یَئِدْهَا وَلَمْ یُهِنْهَا وَلَمْ یُؤْثِرْ وَلَدَهٗ عَلَیْهَا یَعْنِی الذُّكُوْرَ اَدْخَلَهُ اللّٰهُ الْجَنَّةَ۔ رواہ ابو داود[2] (مشکوٰۃ، ج، ص۴۲۳)

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ، باب اتقوا النار...الخ، الحدیث:۱۴۱۸، ج۱، ص۴۷۸

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الشفقۃ والرحمۃ...الخ، الحدیث:۴۹۷۹، ج۲، ص۲۱۴

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के बेटी हुई और उस ने न उस को ज़िन्दा दफ़्न किया न उस की तौहीन की न अपने बेटों को उस पर तरजीह़ दी तो उस को **अल्लाह** तआ़ला जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

ह़दीस : 3

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ عَالَ ثَلٰثَ بَنَاتٍ اَوْمِثْلَهُنَّ مِنَ الْاَخَوَاتِ فَاَدَّبَهُنَّ وَرَحِمَهُنَّ حَتّٰى يُغْنِيَهُنَّ اللّٰهُ اَوْجَبَ اللّٰهُ لَهُ الْجَنَّةَ فَقَالَ رَجُلٌ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَوِاثْنَتَيْنِ قَالَ اَوِاثْنَتَيْنِ حَتّٰى لَوْ قَالُوْا اَوْ وَاحِدَةً فَقَالَ اَوْ وَاحِدَةً (1) (مشکوٰۃ، ج۲،ص۴۲۳)

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने तीन बेटियों या इन के मिस्ल बहनों की परवरिश का इन्तिज़ाम किया फिर उन को अदब सिखाया और उन पर मेहरबान रहा यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें (शादी हो जाने के बाद) बे नियाज़ कर दे तो उस शख़्स के लिए **अल्लाह** तआ़ला जन्नत वाजिब कर देता है येह सुन कर एक मर्द ने कहा कि या दो लड़कियां ? तो फ़रमाया कि या दो लड़कियां यहां तक कि अगर लोग केहते या एक लड़की ? तो आप फ़रमा देते एक ही लड़की।

तशरीह़ात व फ़वाइद

﴾1﴿ ह़दीस नम्बर 1 का ह़ासिल येह है कि जिस शख़्स को **अल्लाह** तआ़ला ने बेटियां दी हैं और वोह इन की निहायत ही मह़ब्बतो शफ़्क़त के साथ परवरिश करता है तो क़ियामत के दिन येही बेटियां उस के लिए

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب الشفقة...الخ،الحدیث:٤٩٧٥، ج٢،ص٢١٤ بتغیر

जहन्नम से पर्दा बन जाएंगी कि वोह शख़्स जहन्नम में जाना तो बड़ी बात है जहन्नम को देख भी न सकेगा। बेटियों के मिलने को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुब्तला किया जाना फ़रमाया इस में इशारा है कि जिस के यहां बेटी पैदा हुई गोया वोह एक इम्तिहान में डाल दिया गया लेहाज़ा उस के लिए सब्रो तहम्मुल ज़रूरी है।

﴾2﴿ हदीस नम्बर 2 में बेटियों को मां बाप के लिए जन्नत में जाने का ज़रीआ व वसीला बताया गया है मगर शर्त येह है कि बेटियों को बेटों से कम और हक़ीर न समझे और उन की तालीमो तरबियत में कोई कोताही न करे। मगर वाज़ेह रहे कि येह शर्त बड़ी कड़ी और कठिन है लेकिन इस का बदला भी जन्नत है कि इस से बढ़ कर कोई इन्आम हो ही नहीं सकता।

﴾3﴿ हदीस नम्बर 3 का मा हसल येह है कि बेटियों और बहनों की परवरिश का यक्सां अज्रो सवाब है और तीन बेटियों और बहनों की परवरिश का जो अज्रो सवाब है वोही दो या एक बेटी और बहन की परवरिश का भी अज्रो सवाब है।

﴾37﴿ शौहर की रिज़ामन्दी

हदीस : 1

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمَرْأَةُ اِذَا صَلَّتْ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَاَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَهَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ اَيِّ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَتْ [1] (مشکوۃ، ج۱، ص۲۱۸)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि औरत जब अपनी पांचों नमाज़ों को पढ़े और रमज़ान के महीने का रोज़ा रखे और अपनी शर्मगाह को पाक

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب النکاح، باب عشرۃالنساء...الخ، الحدیث:۳۲۵٤، ج۱، ص۵۹۷

दामन रखे और अपने शौहर की फ़रमांबरदारी करे तो वोह औ़रत जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगी जन्नत में दाख़िल हो जाएगी।

ह़दीस : 2

عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُّمَا اِمْرَأَةٍ مَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ دَخَلَتِ الْجَنَّةَ [1] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۲۱۸)

ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि उस का शौहर उस से राज़ी रहा तो वोह औ़रत जन्नत में दाख़िल होगी।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

औ़रत पर हुक़ूक़ुल्लाह के फ़राइज़ के इलावा शौहर की इत़ाअ़त का भी एक बड़ा फ़र्ज़ है। औ़रत अगर हुक़ूक़ुल्लाह के फ़राइज़ को अदा कर के अपने शौहर की ख़िदमत व इत़ाअ़त का फ़रीज़ा भी अदा करे और मरते वक़्त उस का शौहर उस से ख़ुश रहे तो वोह औ़रत जन्नती है। इस बारे में बहुत सी ह़दीसें वारिद हुई हैं। (واللہ تعالٰی اعلم)

﴾38﴿ बच्चों की मौत

ह़दीस : 1

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जिस मुसलमान के तीन नाबालिग़ बच्चे वफ़ात पा गए तो उस को **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो रेह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[2] (बुख़ारी, जि. 1 स. 167)

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب النکاح، باب عشرۃ النساء...الخ، الحدیث:۳۲۵۶، ج۱، ص۵۹۷

2 .....صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب فضل من مات...الخ، الحدیث:۱۲۴۸، ج۱، ص۴۲۴

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि औ़रतों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप औ़रतों के लिए (वाज़ का) एक दिन मुक़र्रर फ़रमा दीजिए । तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन औ़रतों से वाज़ में फ़रमाया कि जिस औ़रत के तीन बच्चे मर गए हों वोह बच्चे उस औ़रत के लिए जहन्नम से ह़िजाब बन जाएंगे । येह सुन कर एक औ़रत ने कहा कि अगर किसी के दो ही बच्चे मर गए हों ? तो आप ने फ़रमाया कि दो बच्चे भी ।[1] (जहन्नम से ह़िजाब बन जाएंगे ।) (बुख़ारी, जि. 1 स. 167)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब किसी बन्दे का बच्चा मर जाता है तो **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि तुम लोगों ने मेरे बन्दे के बच्चे को मार डाला ? तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि जी हां ! फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि तुम लोगों ने उस के दिल के फल को छीन लिया ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि जी हां ! फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि बेटे की मौत पर मेरे बन्दे ने क्या कहा ? तो फ़रिश्ते केहते हैं कि तेरी ह़म्द की और اِنَّا لِلّٰہِ पढ़ा । तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि तुम लोग मेरे उस बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बना दो और उस घर का नाम "बैतुल ह़म्द" रखो ।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 151)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिन दो मुसलमान मियां

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب فضل من مات...الخ، الحدیث:۱۲۴۹، ج۱، ص۴۲۴

2 .....سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب فضل المصیبة...الخ، الحدیث:۱۰۲۳، ج۲، ص۳۱۳

बीवी के तीन बच्चे वफ़ात पा गए हों अल्लाह तआ़ला उन दोनों मियां बीवी को अपने फ़ज़्लो रेह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, तो सह़ाबा ने कहा कि या दो बच्चे मरे हों ? तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि या दो बच्चे, फिर कुछ सह़ाबा ने कहा कि या एक बच्चा मरा हो ? तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि या एक बच्चा, फिर इस के बाद हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि मुझे उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि बेशक कच्चा बच्चा अपनी नाल के साथ अपनी मां को खींच कर जन्नत में ले जाएगा जब कि उस की मां ने उस को सवाब जाना हो ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 153)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते क़ुर्रा मुज़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक आदमी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास अपने लड़के को साथ ले कर आया करता था तो हुज़ूर ने उस से पूछा कि क्या तुम इस लड़के से मह़ब्बत करते हो ? तो उस ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस से इतनी मह़ब्बत करता हूं कि मेरी येह दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला आप से इतनी ही मह़ब्बत फ़रमाए । फिर उस लड़के को जब हुज़ूर ने नहीं देखा तो फ़रमाया कि फ़ुलां का बेटा वोह क्या हुवा ? तो लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह तो मर गया । तो हुज़ूर ने लड़के के बाप से फ़रमाया कि तुम क्या इस को पसन्द नहीं करते कि तुम जन्नत के जिस दरवाज़े पर भी जाओगे तुम्हारा बच्चा तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा होगा येह सुन कर उस आदमी ने कहा कि येह फ़ज़ीलत ख़ास मेरे ही लिए है या हर उस मुसलमान के लिए जिस का बच्चा मर गया हो ? तो हुज़ूर

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل،حديث معاذ بن جبل،الحديث:٢٢١٥١،ج٨، ص٢٥٤

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि हर उस मुसलमान के लिए येही फ़ज़ीलत है जिस का बच्चा मर गया हो ।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 153)

तशरीहात व फ़्वाइद

इस उ़नवान की पांचों ह़दीसों का ह़ासिल येही है कि जिस मुसलमान मर्द व औ़रत के तीन या दो या एक नाबालिग़ बच्चे मर गए हों और मां बाप ने उन बच्चों की मौत पर सब्र किया हो और उन बच्चों की मौत को अज्रो सवाब जाना हो तो **अल्लाह** तआ़ला उन मर्हूम बच्चों के मां बाप को जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा । बल्कि ह़दीस में येह भी आया है कि कच्चा बच्चा भी जिस का इस्क़ात हो गया हो उस की नाल बाप की पीठ और मां के पेट से जुड़ी होगी और वोह कच्चा बच्चा अपने मां बाप की मग़फ़िरत के लिए ख़ुदा से इसरार के साथ गुज़ारिश करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि "اَيُّهَا السِّقْطُ الْمُرَاغِمُ رَبَّهٗ اَدْخِلْ اَبَوَيْكَ الْجَنَّةَ" यानी ऐ कच्चे बच्चे ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ से झगड़ने वाले तू अपने मां बाप को जन्नत में दाख़िल कर दे । "فَيَجُرُّهُمَا بِسَرَرِهٖ حَتّٰى يُدْخِلَهُمَا الْجَنَّةَ" यानी फिर वोह कच्चा बच्चा अपने मां बाप को अपनी नाल के ज़रीए़ खींचेगा यहां तक कि उन दोनों को जन्नत में दाख़िल कर देगा ।[2] (मिश्कात, जि. 1 स. 153)

﴾39﴿ इत़ाअ़ते वालिदैन

ह़दीस : 1

ह़ज़रते मुआ़विया बिन जाहिमा से मरवी है कि जाहिमा हुज़ूर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने जेहाद में जाने का इरादा कर

1 .....مشكاةالمصابيح، كتاب الجنائز، باب البكاء على الميت، الحديث:١٧٥٦، ج١، ص٣٣٢

2 .....مشكاةالمصابيح، كتاب الجنائز، باب البكاء على الميت، الحديث:١٧٥٧، ج١، ص٣٣٢

www.dawateislami.net

लिया है और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! के पास मश्वरे के लिए आया हूं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या तुम्हारी मां है ? तो उन्हों ने कहा : जी हां ! तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम उस की ख़िदमत में चिमटे रहो क्यूंकि तुम्हारी जन्नत उस के पैरों के पास है ।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 421)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि एक आदमी ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का उन की औलाद पर किस क़दर और कितना ह़क़ है ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मां बाप ही तेरी जन्नत और तेरे दोज़ख़ हैं ।[2] (मिश्कात, जि. 2 स. 421)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मां बाप का फ़रमां बरदार होगा उस के लिए जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और अगर वालिदैन में से किसी एक ही का फ़रमां बरदार हो तो उस के लिए जन्नत का एक ही दरवाज़ा खुलेगा और जो शख़्स अपने वालिदैन का ना फ़रमान होगा उस के लिए जहन्नम के दो दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और अगर वालिदैन में से एक ही का ना फ़रमान हो तो एक ही दरवाज़ा दोज़ख़ का खुलेगा । येह सुन कर एक आदमी ने कहा कि अगर्चे मां बाप लड़के पर ज़ुल्म करते हों ? तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

---

1 .....شعب الایمان،باب فی برالوالدین،الحدیث:۷۸۳۳،ج٦،ص١٧٨

2 .....سنن ابن ماجه،کتاب الادب،باب برالوالدین،الحدیث:٣٦٦٢،ج٤،ص١٨٦

फ़रमाया : अगर्चे दोनों उस पर ज़ुल्म करते हों, अगर्चे दोनों उस पर ज़ुल्म करते हों, अगर्चे दोनों उस पर ज़ुल्म करते हों ।[1] (तीन बार इस लफ़्ज़ को फ़रमाया) (मिश्कात, जि. 2 स. 421)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो लड़का अपने मां बाप को रेह़मत की नज़र से देखेगा तो उस को हर नज़र के बदले में एक ह़ज्जे मबरूर का सवाब मिलेगा, तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि अगर्चे लड़का हर दिन में सौ मरतबा मां बाप को देखे ? तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है और बहुत पाकीज़ा है ।[2] (मिश्कात, जि. 2 स. 421)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि इन के पास एक आदमी आया और कहा कि मेरी एक औ़रत है और मेरी मां उसे त़लाक़ देने का मुझे हुक्म दे रही है । तो अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि वालिद जन्नत के दरवाज़ों में से बीच का दरवाज़ा है तो अगर तुम चाहो तो उस दरवाज़े को बरबाद कर दो और अगर चाहो तो उस दरवाज़े को मेह़फ़ूज़ रखो ।[3] (तिरमिज़ी, जि. 2 स. 12)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

वालिदैन की ख़िदमत व इत़ाअ़त औलाद पर फ़र्ज़ है और मां बाप को अदना दर्जे की तक्लीफ़ देना भी ह़राम है । कुरआने मजीद में **अल्लाह**

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب البر والصلۃ، الحدیث:٤٩٤٣، ج٢، ص٢٠٩

2 .....شعب الایمان، باب فی برالوالدین، الحدیث:٧٨٥٦، ج٦، ص١٨٦

3 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء من الفضل...الخ، الحدیث:١٩٠٦، ج٣، ص٣٥٩

तबारक व तआ़ला ने (1) وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا फ़रमाया कि मां बाप के साथ भलाई का सुलूक करना औलाद पर फ़र्ज़ है। और कुरआने मजीद में खुदावन्दे कुद्दूस ने येह भी फ़रमाया कि (2) فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا यानी वालिदैन को किसी बात के जवाब में उफ़ केहना और इन को झिड़क देना ह़राम है।

इस उ़नवान की मज़्कूरा बाला ह़दीसों का तर्जमा बिल्कुल वाज़ेह़ और ज़ाहिर है लेहाज़ा मज़ीद तशरीह़ व वज़ाह़त की ज़रूरत नहीं।

अपने वालिदैन की ख़िदमत व इत़ाअ़त और इन को राज़ी रखना येह बिलाशुबा जन्नत में ले जाने वाला अ़मल और बिहिश्त की कुन्जियों में से एक बहुत बड़ी और अहम्मिय्यत वाली कुन्जी और जन्नत की शाहराहों में से एक बड़ी शाहराह है। आज कल की औलाद अपने इस फ़रीज़े से बहुत ग़ाफ़िल है। मगर इन को येह समझ लेना चाहिए कि मां बाप के साथ बद सुलूकी करने वाले को जन्नत तो मिल ही नहीं सकती और दुन्या में येह ख़त़रा हर वक़्त सर पर सुवार है कि जो औलाद मां बाप के साथ बुरा सुलूक करेगी तो उस को समझ लेना चाहिए कि मैं जैसा सुलूक अपने मां बाप के साथ कर रहा हूं मेरी औलाद भी मेरे साथ ऐसा ही सुलूक करेगी इस लिए सब को चाहिए कि मां बाप के साथ बेहतरीन सुलूक करे उन को राज़ी रखना बेह़द ज़रूरी और बहुत बड़ा कारनामा है। मौला तआ़ला सब को इस की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

﴾40﴿ रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक

अपने तमाम रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करना चाहिए कि रिश्तेदारियों को क़ाइम रखते हुवे उन के हुक़ूक़ को अदा करना येह

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। (پ۱۵،بنی اسراء یل:۲۳)

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन से हूं न केहना और उन्हें न झिड़कना। (پ۱۵،بنی اسراء یل:۲۳)

जन्नत में जाने का वसीला और ज़रीआ़ है । इस सिलसिले में चन्द अहादीस की तजल्लियां मुलाहज़ा हों ।

हदीस : 1

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि "रिश्तेदारी" अ़र्श के साथ लटकी हुई येह एलान करती रेहती है कि जो मुझे मिलाएगा उस को **अल्लाह** तआ़ला मिलाएगा और जो मुझे काट देगा **अल्लाह** तआ़ला उसे काट देगा ।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 409)

हदीस : 2

हज़रते जुबैर बिन मुत़अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रिश्तेदारी को काट देने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।[2] (मिश्कात, जि. 2 स. 419)

हदीस : 3

हज़रते अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न उबैय अ़न जिद्दहू रिवायत करते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "रिश्तेदारी" शाख़ों का एक गुच्छा है जिस त़रह़ कि एक टेहनी एक टेहनी में फूटती है तो जो उस रिश्तेदारी को मिलाएगा **अल्लाह** तआ़ला उस को मिलाएगा और जो उस को काटेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को काट देगा और रिश्तेदारी को क़ियामत के दिन उठाया जाएगा तो वोह निहायत तेज़ चलती हुई फ़सीह़ ज़बान से येह कहेगी कि ऐ **अल्लाह** ! फ़ुलां शख़्स ने मुझे मिलाया था लेहाज़ा तू उस को जन्नत में दाख़िल कर दे

1 .....صحیح مسلم، کتاب البر...الخ،باب صلة الرحم...الخ،الحدیث:۲۵۵۵، ص۱۳۸۳

2 .....صحیح البخاری، کتاب الادب،باب اثم القاطع،الحدیث:۵۹۸۴،ج۴، ص۹۷

और फ़ुलां शख़्स ने मुझे काट दिया था लेहाज़ा तू उसे जहन्नम में दाख़िल कर दे ।[1] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 3 स. 207)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है और तुम लोगों के बाद कोई उम्मत नहीं है । ख़बरदार ! तुम लोग अपने रब की इ़बादत करो पांचों वक़्त नमाज़ें पढ़ो और माहे रमज़ान का रोज़ा रखो और अपनी रिश्तेदारियों के साथ सिलए रेह़मी करो और ख़ुशदिली के साथ अपने मालों की ज़कात अदा करो और अपने ह़ाकिमों की फ़रमांबरदारी करो तो तुम लोग अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।[2] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2 स. 258)

तशरीह़ात व फ़वाइद

इस उ़नवान की चारों ह़दीसों में रिश्तेदारियों के काटने और मिलाने का येह मत़लब है कि अपनी रिश्तेदारियों के साथ सिलए रेह़मी करना और अच्छा सुलूक करना इन के रन्जो राह़त में शरीक रेहना, इन की इमदाद व इआ़नत करना, येह तो रिश्तेदारियों को मिलाना है और अपनी रिश्तेदारियों से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ कर लेना और रिश्तेदारों के साथ बे रेह़मी का सुलूक करना, इन के रन्जो राह़त से बे तअ़ल्लुक़ रेहना, इन की हर क़िस्म की इमदादो इआ़नत से अलग थलग हो जाना, येह रिश्तेदारियों को काटना है । रिश्तेदारियों को मिलाए रखना यानी अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करना येह जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है और रिश्तेदारियों को काट देना यानी रिश्तेदारों के साथ बद सुलूकी करना और उन से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ कर लेना येह जहन्नम में गिरा देने वाला काम है ।

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث:٦٩٣٩، ج٢، الجزء٣، ص١٤٦

2 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث:٤٣٦٣٠، ج٨، الجزء١٥، ص٣٩٨

www.dawateislami.net

इस ज़माने में ज़रा ज़रा सी बातों पर लोग येह केह दिया करते हैं कि मैं आज से तेरा भाई नहीं और तू मेरी बहन नहीं इसी त़रह़ भाई भाई से येह केह देता है कि मैं आज से तेरा भाई नहीं और तू मेरा भाई नहीं, येह "क़त़्ए रेह़्म" यानी रिश्तों को काटना है जो ह़राम है और जहन्नम में ले जाने वाला अ़मल है, लेहाज़ा हर मुसलमान को हमेशा इस का ख़याल रखना चाहिए कि किसी रिश्तेदार से तअ़ल्लुक़ न काटे बल्कि हमेशा इस कोशिश में लगा रहे कि रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम रहे और कभी भी रिश्ता कटने न पाए।

बाज़ लोग येह कहा करते हैं कि जो रिश्तेदार हम से तअ़ल्लुक़ रखेगा हम भी उस से तअ़ल्लुक़ रखेंगे और जो हम से कट जाएगा हम भी उस से कट जाएंगे, येह केहना और येह त़रीक़ा भी इस्लाम के ख़िलाफ़ है, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को येह तालीम दी है कि صِلْ مَنْ قَطَعَكَ وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ وَاَحْسِنْ اِلٰى مَنْ اَسَاءَ كَ यानी जो तुम से तअ़ल्लुक़ काटे तुम उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ते रहो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उस को मुआ़फ़ कर दो और जो तुम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उस के साथ भलाई करो।

हां रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ काट देने की एक ही सूरत जाइज़ है और वोह येह कि शरीअ़त के मुआ़मले में तअ़ल्लुक़ काट दिया जाए, मसलन कोई रिश्तेदार अगर्चे कितना ही क़रीबी रिश्तेदार क्यूं न हो अगर वोह काफ़िर व मुर्तद या गुमराह व बद दीन हो जाए तो फिर उस से तअ़ल्लुक़ काट लेना वाजिब है। या कोई रिश्तेदार किसी गुनाहे कबीरा में गिरिफ़्तार है और मन्अ़ करने पर भी वोह बाज़ नहीं आता बल्कि अपने गुनाहे कबीरा पर ज़िद कर के अड़ा हुवा है तो उस से भी क़त़्ए तअ़ल्लुक़ कर लेना ज़रूरी है क्यूंकि उस के साथ तअ़ल्लुक़ रखना और तआ़वुन करना गोया उस के गुनाहे कबीरा में शिर्कत करना है। और येह हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं। والله تعالٰى اعلم

﴾41﴿ पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव

अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव करना और उन के हुक़ूक़ को अदा करना भी जन्नत में ले जाने वाला अ़मल और बिहिश्त में पहुंचाने वाली एक सड़क बल्कि शाहराह है। इस ख़ुसूस में भी एक ह़दीस की तजल्ली से रौशनी ह़ासिल कीजिए।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قِیْلَ لِلنَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ فُلَانَةَ تَقُوْمُ اللَّیْلَ وَتَصُوْمُ النَّهَارَ وَتَفْعَلُ الْخَیْرَاتِ وَتَصَدَّقُ وَتُؤْذِیْ جِیْرَانَهَا بِلِسَانِهَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لَاخَیْرَ فِیْهَا هِیَ مِنْ اَهْلِ النَّارِ قِیْلَ وَفُلَانَةُ تُصَلِّی الْمَکْتُوْبَةَ وَتَصَدَّقُ بِالْاَثْوَارِ مِنَ الْاَقِطِ وَلَا تُؤْذِیْ اَحَدًا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ هِیَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ [1] (کنزالعمال، ج۲، ص۱۱۱)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि किसी ने हुज़ूर नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि फ़ुलानी औ़रत रात भर नमाज़ में खड़ी रेहती है और दिन भर रोज़ादार रेहती है और क़िस्म क़िस्म की नेकियां करती है और सदक़ा देती है मगर इस के साथ साथ वोह अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से ईज़ा देती है। तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस औ़रत में कोई भलाई नहीं वोह जहन्नमी है। और किसी ने कहा कि फ़ुलानी औ़रत सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ों को पढ़ती है और पनीर की टिकियां सदक़े में देती है मगर वोह किसी को सताती नहीं है। तो हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह जन्नती है।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

वाज़ेह़ रहे कि जिस त़रह़ मां बाप, भाई बहन और दूसरे अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ हैं इसी त़रह़ हुज़ूरे अकरम

1 .....کنزالعمال، کتاب الصحبة، باب فی حقوق...الخ، الحدیث: ۲۵۶۱۰، ج۵، الجزء۹، ص۸۰

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पड़ोसियों के भी कुछ हुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं जिन का अदा करना ज़रूरी है। चुनान्चे, बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस है कि مَازَالَ جِبْرَئِيْلُ يُوْصِيْنِيْ بِالْجَارِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ سَيُوَرِّثُهٗ [1] (मिश्कात, जि. 2 स. 422)

ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام पड़ोसी के बारे में मुझे वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे येह गुमान होने लगा कि शायद पड़ोसी को वारिस ठेहराएंगे।

पड़ोसियों के हुक़ूक़ में सब से अहम और ज़रूरी ह़क़ येह है कि अपने पड़ोसियों को हरगिज़ हरगिज़ किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न पहुंचाए बल्कि ह़त्तल इम्कान इन की राह़त व आसानी का सामान करता रहे और ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ अपनी किसी ह़रकत से अपने पड़ोसियों को दुख दर्द में न डाले। एक ह़दीस में है कि لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ لَا يَأْمَنُ جَارُهٗ بَوَائِقَهٗ [2] (मिश्कात, जि. 2 स. 422)

यानी जिस आदमी का पड़ोसी उस की शरारतों से बे ख़ौफ़ न हो वोह आदमी जन्नत में नहीं दाख़िल होगा। बल्कि एक ह़दीस में तो येह भी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार येह फ़रमाया कि वोह शख़्स कामिलुल ईमान नहीं जिस का पड़ोसी उस की शरारतों से बे ख़ौफ़ न हो।[3] (मिश्कात, जि. 2 स. 422)

बहर ह़ाल अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव रखना, उन के रन्जो राह़त में शरीक रेहना और वक़्ते ज़रूरत उन की इम्दादो नुसरत करते रेहना येह हर मुसलमान पर उस के पड़ोसियों का ह़क़ है। जिस का अदा

1 .....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب الوصاة بالجار، الحديث:٦٠١٥، ج٤، ص١٠٤

2 .....صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان تحريم ايذاء الجار، الحديث:٤٦، ص٤٣

3 .....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب اثم من لا يأمن...الخ، الحديث:٦٠١٦، ج٤، ص١٠٤

करना ज़रूरी है अगर येह हुक़ूक़ अदा करेगा तो जन्नती होगा और अगर इन हुक़ूक़ की ह़क़ तलफ़ी करे तो वोह जन्नत से मेह़रूम रहेगा। واللہ تعالیٰ اعلم

﴾42﴿ यतीमों पर शफ़्क़त

यतीमों पर रेह़्म व शफ़्क़त और उन के साथ नेक सुलूक करना येह भी आमाले जन्नत में से एक बड़ा अ़मल है। इस ख़ुसूस में भी चन्द अह़ादीसे करीमा की तजल्लियों से हिदायत का नूर ह़ासिल कीजिए।

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَسَحَ رَاْسَ يَتِيْمٍ لَمْ يَمْسَحْهُ اِلَّا لِلّٰهِ كَانَ لَهٗ بِكُلِّ شَعْرَةٍ تَمُرُّ عَلَيْهَا يَدُهٗ حَسَنَاتٌ وَمَنْ اَحْسَنَ اِلٰى يَتِيْمَةٍ اَوْ يَتِيْمٍ عِنْدَهٗ كُنْتُ اَنَا وَهُوَ فِى الْجَنَّةِ كَهَاتَيْنِ وَقَرَنَ بَيْنَ اُصْبُعَيْهِ[1]

(مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۲۳)

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स यतीम के सर पर हाथ फिराए और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की रिज़ा के लिए हाथ फिराए तो हर उस बाल के बदले जिस पर उस का हाथ गुज़रेगा उस को बहुत सी नेकियां मिलेंगी और जो शख़्स किसी यतीम लड़की या यतीम लड़के के साथ अच्छा सुलूक करे तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उंगलियों को मिला कर बताया कि मैं और वोह इस त़रह़ जन्नत में रहेंगे। (यानी मैं और वोह एक साथ जन्नत में जाएंगे।)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स यतीम को ठिकाना दे कर उस के खाने पीने का इन्तिज़ाम कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب الشفقۃ والرحمۃ...الخ، الحدیث: ٤٩٧٤، ج٢، ص٢١٣

www.dawateislami.net

जन्नत वाजिब कर देगा हां ! मगर येह कि वोह कोई ऐसा गुनाह (शिर्क व कुफ़्र) करे जो मुआ़फ़ी के लाइक़ नहीं ।[1] (तो वोह जन्नत में न जा सकेगा ।) (मिश्कात, जि. 2 स. 423)

ह़दीस : 3

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि जन्नत में एक घर ऐसा है जिस का नाम दारुल फ़रह़ (ख़ुशी का घर) है । उस घर में वोही लोग दाख़िल होंगे जिन्हों ने दुन्या में मुसलमानों के यतीम बच्चों का दिल ख़ुश किया होगा ।[2] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 3 स. 98)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुसलमानों के घरों में सब से बेहतर वोह घर है जिस में कोई यतीम रेहता हो और उस के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और मुसलमानों के घरों में सब से बदतर वोह घर है कि जिस में कोई यतीम रेहता हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाता हो ।[3] (मिश्कात, जि. 2 स. 423)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

इस उ़नवान की मज़्कूरा बाला चारों ह़दीसों का मत़लब येही है कि हर मुसलमान पर लाज़िम है कि उम्मते रसूल के यतीम बच्चों

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة...الخ، الحدیث:١٩٢٤، ج٣، ص٣٦٨

2 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث:٦٠٠٥، ج٢، الجزء٣، ص٧١

3 .....سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب حق الیتیم، الحدیث:٣٦٧٩، ج٤، ص١٩٣

और यतीम बच्चियों की परवरिश और उन के साथ रेह्मो शफ़्क़त का बरताव करें कुरआने मजीद की बहुत सी आयतों में इस की बेह़द ताकीद की गई है । इरशादे रब्बानी है कि فَاَمَّا الْیَتِیْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝[1] यानी यतीम पर क़ेह्र न करो जो लोग यतीमों के मालों को खा डालते थे उन के बारे में एक आयत उतरी कि

اِنَّ الَّذِیْنَ یَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْیَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا یَاْكُلُوْنَ فِیْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ؕ[2]	यानी जो लोग यतीमों का माल खाते हैं वोह दर ह़क़ीक़त अपने पेटों में आग खा रहे हैं ।

बहर ह़ाल यतीम की ख़बरगीरी और उन पर शफ़्क़त व मह़ब्बत करना येह हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जो लोग यतीमों के साथ अच्छा सुलूक करेंगे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दो उंगलियों को मिला कर बताया कि मैं और वोह इस त़रह़ एक साथ दोनों जन्नत में जाएंगे । **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान के सीने में ऐसा दर्दमन्द दिल पैदा फ़रमा दे जो यतीमों की बे कसी पर रेह्म करे और मुसलमान यतीमों के साथ रेह्मो करम का बरताव कर के जन्नत में जाने का सामान करें । واللہ تعالٰی اعلم

﴾43﴿ अच्छे अख़्लाक़

दोनों जहान में मुसलमान की नेक नामी का बेहतरीन सामान उस के अच्छे अख़्लाक़ हैं अच्छे अख़्लाक़ वाला दुन्या में जिस त़रह़ हर दिल अ़ज़ीज़ और सब का प्यारा होता है इसी त़रह़ आख़िरत में भी वोह

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो यतीम पर दबाव न डालो । (پ۳۰، الضحٰی:۹)

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो यतीमों का माल नाह़क़ खाते हैं वोह तो अपने पेट में निरी आग भरते हैं । (پ٤، النساء:١٠)

बड़े बड़े दरजात व मरातिब से सरफ़राज़ हो कर जन्नत का मेहमान बनता है। इस उ़नवान पर चन्द ह़दीसों से हम रौशनी डाल रहे हैं।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते नवास बिन समआ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ केहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि नेकी क्या है ? और गुनाह क्या है ? तो इरशाद फ़रमाया कि नेकी "अच्छे अख़्लाक़" हैं और गुनाह वोह है जो तेरे दिल में खटके और तू उस को बुरा समझे कि लोग उस पर मुत्तलअ़ हों।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 421)

ह़दीस : 2

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तुम लोगों में सब से ज़्यादा मेरा मेह़बूब वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे हों।[2]

(मिश्कात, जि. 2 स. 431)

ह़दीस : 3

क़बीला मुज़ैना के एक आदमी से मरवी है, इन्हों ने कहा कि लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बेहतरीन चीज़ जो इन्सान को दी गई है वोह क्या है ? तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अच्छे अख़्लाक़"।[3] (मिश्कात, जि. 2 स. 431)

ह़दीस : 4

ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रिवायत किया है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ाने

1 .....صحیح مسلم، کتاب البر...الخ،باب تفسیر البر و الاثم،الحدیث:۲۵۵۳، ص۱۳۸۲

2 .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی،باب مناقب عبداللّٰہ بن مسعود رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،الحدیث:۳۷۵۹،ج۲،ص۵۴۹

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب الرفق و الحیاء...الخ،الحدیث:۵۰۷۸،ج۲، ص۲۲۹

www.dawateislami.net

अ़मल में सब से ज़्यादा भारी अ़मल "अच्छे अख़्लाक़" होंगे और **अल्लाह** तआ़ला फ़ोह़्श कलामी करने वाले बे ह़या आदमी को बहुत ना पसन्द फ़रमाता है ।[1] (मिश्कात, जि. 2 स. 431)

ह़दीस : 5

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि मोमिन अपने अच्छे अख़्लाक़ की ब दौलत उस मुसलमान के मर्तबे को पा लेगा जो रात भर नमाज़ में खड़ा रेहता हो और दिन भर रोज़ादार रेहता हो ।[2]

(मिश्कात, जि. 2 स. 432)

ह़दीस : 6

ह़ज़रते अबूज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (नसीह़त फ़रमाते हुवे) मुझ से येह फ़रमाया कि ﴾1﴿ तुम जहां भी रहो ख़ुदा से डरते रहो ﴾2﴿ और हर बदी के बाद कोई नेकी कर लो तो येह नेकी उस बदी को मिटा देगी ﴾3﴿ और तुम लोगों के साथ अच्छे अख़्लाक़ से मिलो ।[3] (मिश्कात, जि. 2 स. 432)

ह़दीस : 7

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम लोगों को ख़बर न दे दूं कि क़ियामत के दिन सब से ज़्यादा मेरा मेह़बूब और सब से ज़्यादा मेरा

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی حسن الخلق،الحدیث:۲۰۰۹، ج۳،ص۴۰۳

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل،مسندالسیدة عائشة،الحدیث:۲۴۶۴۹،ج۹، ص۳۷۸

3 .....مشکاةالمصابیح، کتاب الآداب، باب الرفق والحیاء...الخ،الحدیث:۵۰۸۳،ج۲، ص۲۲۹

मुक़र्रब कौन होगा ? वोह कि तुम लोगों में जिस का "अख़्लाक़" सब से ज़्यादा अच्छा होगा ।[1] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2 स. 10)

ह़दीस : 8

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** तआ़ला (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को अपनी रेह़्मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । ﴾1﴿ जो तुम्हें मेह़रूम करे तुम उस को अ़त़ा करो और ﴾2﴿ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो और ﴾3﴿ जो तुम से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से मिलाप करो ।[2]

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 40 स. 267)

ह़दीस : 9

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ केहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि सब से ज़्यादा कौन सी चीज़ लोगों को जन्नत में दाख़िल करेगी ? वोह येह है : ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला से डरना और ﴾2﴿ अच्छे अख़्लाक़ । और क्या तुम लोग जानते हो कि कौन सी चीज़ सब से ज़्यादा लोगों को जहन्नम में दाख़िल करेगी ? वोह येह है ﴾1﴿ मुंह और ﴾2﴿ शर्मगाह ।[3]

(मिश्कात, जि. 2 स. 412)

ह़दीस : 10

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम लोग अच्छे अख़्लाक़

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۲۲۰، ج۲، الجزء۳، ص۹

2 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث: ۴۳۲۰۸، ج۸، الجزء۱۵، ص۳۴۱

3 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان...الخ، الحدیث: ۴۸۳۲، ج۲، ص۱۹۳

को लाज़िम पकड़ो क्यूंकि येह यक़ीनन जन्नत में जाएगा।[1]

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2 स. 5)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ इस उ़नवान की मज़्कूरा बाला दसों ह़दीसों का ह़ासिल येही है कि "अख़्लाक़े ह़सना" जन्नत में ले जाने वाले आमाल हैं और अच्छे अख़्लाक़ वाले मुसलमान "जन्नती" हैं इस लिए हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अपने को "अख़्लाक़े ह़सना" और अच्छे अच्छे अख़्लाक़ के साथ आरास्ता करे और हमेशा अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करता रहे और वाज़ेह़ रहे कि अख़्लाक़े ह़सना और अच्छे अख़्लाक़ वोही हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ हों दुन्या के लोग किसी आ़दत को लाख पसन्द करें लेकिन अगर वोह अख़्लाक़े नबुव्वत के ख़िलाफ़ है तो हरगिज़ वोह अच्छे अख़्लाक़ में शुमार नहीं होगी और अगर दुन्या वाले किसी आ़दत को लाख बुरा समझें लेकिन अगर वोह अख़्लाक़े नबुव्वत के मुत़ाबिक़ हो तो यक़ीनन वोह अख़्लाक़े ह़सना और अच्छे अख़्लाक़ में शुमार की जाएगी क्यूंकि हर अच्छाई और बुराई का मेयार शरीअ़ते मुत़ह्हरा और सुन्नते मुबारका ही है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾2﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 9 में जो येह आया है कि सब से ज़्यादा जो चीज़ जहन्नम में दाख़िल करेगी वोह दो चीज़ें हैं। (1) मुंह (2) शर्मगाह। ज़ाहिर बात है कि इन दोनों आज़ा से अक्सर गुनाह होते हैं मसलन लुक़्मए ह़राम खाना, कुफ़्रो शिर्क की बोलियां, झूट बोलना, ग़ीबत करना, झूटी गवाही, चुग़ली, बोहतान, गाली गलोच येह सारे गुनाह मुंह से होते हैं इसी त़रह़ ज़िनाकारी वग़ैरा गुनाहों का सरचश्मा शर्मगाह ही तो है।

---

1 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۲۳۰، ج۲، الجزء۳، ص ۱۰

ह़दीस का ह़ासिल मत़लब येह है कि मोमिन को लाज़िम है कि अपने इन दोनों आज़ा पर कन्ट्रोल रखे और हर वक़्त इन की ह़िफ़ाज़त करता रहे कि इन दोनों से कोई गुनाह न होने पाए वरना अगर ज़रा भी इन दोनों की लगाम ढीली हो गई तो येह दोनों आज़ा शरीर घोड़े की त़रह़ सर पट दौड़ कर तुम्हें जहन्नम में गिरा देंगे।

अगले उ़नवान में इस की मज़ीद तफ़्सील और दूसरी अह़ादीस ज़िक्र की जाएंगी जिन से ज़बान व शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त की अहम्मिय्यत और ज़्यादा ज़ाहिर हो जाएगी।

﴾44﴿ ज़बान व शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त

ज़बान व शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त भी आमाले जन्नत में से एक अहम अ़मल है। इस बारे में ह़दीसों का मुक़द्दस फ़रमान पढ़िए और हिदायत का नूर ह़ासिल कीजिए।

ह़दीस : 1

ह़ज़रते सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स अपने दोनों कल्लों और अपनी दोनों टांगों के दरमियान वाली चीज़ का मेरे लिए ज़ामिन हो जाए तो मैं उस के लिए जन्नत का ज़ामिन हूं।[1]

(तिरमिज़ी, जि. 2 स. 63)

मत़लब येह है कि दोनों कल्लों के दरमियान की चीज़ यानी ज़बान की ख़िलाफ़े शरअ़ बातों से ह़िफ़ाज़त करे और दोनों टांगों के दरमियान की चीज़ यानी अपनी शर्मगाह की बदकारी से ह़िफ़ाज़त करे।

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب حفظ اللسان، الحدیث: ٦٤٧٤، ج٤، ص ٢٤٠

ह़दीस : 2

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि दो आदमी जन्नत में जाएंगे एक वोह जो अपने दोनों कल्लों के दरमियान की चीज़ (यानी ज़बान) की ह़िफ़ाज़त करे दूसरा वोह जो अपने दोनों पैरों के दरमियान की चीज़ (यानी शर्मगाह) की ह़िफ़ाज़त करे।[1] (कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2 स. 63)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

ब ज़ाहिर आदमी को एह़सास नहीं होता मगर दर ह़क़ीक़त ज़बान बहुत से गुनाहों का ज़रीआ़ है। कुफ़्रो शिर्क, ग़ीबत व चुग़ली व फ़ोह़्श कलामी, बोहतान, झूट वग़ैरा सब गुनाह ज़बान ही से होते हैं, लेहाज़ा जो ज़बान की ह़िफ़ाज़त करेगा वोह इन सब गुनाहों से मेह़फ़ूज़ रहेगा इसी त़रह़ जो शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करेगा वोह ज़िनाकारी और इस के लवाज़िम के गुनाहों से बचा रहेगा। واللہ تعالٰی اعلم

﴾45﴿ रास्तों से तक्लीफ़ों को दूर करना

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ بَیْنَمَا رَجُلٌ یَمْشِیْ فِی الطَّرِیْقِ اِذْ وَجَدَ غُصْنَ شَوْكٍ فَاَخَّرَهٗ فَشَكَرَ اللّٰهُ لَهٗ فَغَفَرَ لَهٗ[2] (ترمذی، ج۲، ص۱۷)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रावी हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस दरमियान में कि एक आदमी रास्ते में चल रहा था उस ने एक कांटे की शाख़ को पाया तो उस को रास्ते से हटा दिया तो **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ुश हो कर उस को बख़्श दिया।

---

1 .....کنز العمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث: ۴۳۱۷۱، ج۸، الجزء۱۵، ص۳۳۸

2 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی اماطة...الخ، الحدیث: ۱۹۶۵، ج۳، ص۳۸۵

www.dawateislami.net

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ رَجُلٌ بِغُصْنِ شَجَرَةٍ عَلٰی ظَهْرِ طَرِیْقٍ فَقَالَ لَاُنَحِّیَنَّ هٰذَا عَنْ طَرِیْقِ الْمُسْلِمِیْنَ لَا یُؤْذِیْهِمْ فَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ۔متفق علیه[1] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۶۸)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक आदमी एक दरख़्त की टेहनी के पास गुज़रा जो रास्ते की पुश्त पर थी तो उस ने कहा कि मैं ज़रूर ज़रूर इस टेहनी को मुसलमानों के रास्ते से हटा दूंगा ताकि येह मुसलमानों को ईज़ा न पहुंचाए तो वोह आदमी जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ بَرْزَةَ قَالَ قُلْتُ یَا نَبِیَّ اللّٰهِ عَلِّمْنِیْ شَیْئًا اَنْتَفِعُ بِهٖ قَالَ اِعْزِلِ الْاَذٰی عَنْ طَرِیْقِ الْمُسْلِمِیْنَ[2] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۸۶)

ह़ज़रते अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है इन्हों ने कहा कि मैं ने अ़र्ज़ किया कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ऐसी चीज़ की तालीम दीजिए कि मैं उस से नफ़्अ़ पाऊं तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तक्लीफ़ की चीज़ को मुसलमानों के रास्ते से हटाते रहो।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

हर वोह तक्लीफ़ देह चीज़ मसलन कांटा, शीशा, ठोकर की चीज़ें जिस से चलने वालों को ईज़ा पहुंचने का अन्देशा हो उस को

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الحدیث:۱۹۰٤،ج۱، ص۳٦۱

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الحدیث:۱۹۰٦،ج۱، ص۳٦۲

रास्तों से हटा देना बहुत मामूली काम है लेकिन येह अ़मल **अल्लाह** तआ़ला को इस क़दर पसन्द है कि वोह इस की जज़ा में अपने फ़ज़्लो करम से जन्नत अ़ता फ़रमा देता है।

आज कल के मुसलमान इस अ़मले सालेह़ की अ़ज़मत और इस के अज्रो सवाब से बिल्कुल ही ग़ाफ़िल हैं। बल्कि उलटे रास्तों में तक्लीफ़ की चीज़ें डाल दिया करते हैं। मसलन आ़म त़ौर पर लोग केला खा कर उस का छिल्का रेलवे स्टेशन के प्लेट फ़ॉर्म पर फैंक दिया करते हैं। गाड़ी आने पर मुसाफ़िर बद ह़वास हो कर ट्रेन में चढ़ने के लिए दौड़ते और केले के छिल्कों पर पाउं पड़ जाने से फिसल कर गिर जाते हैं और बाज़ शदीद ज़ख़्मी हो जाते हैं इसी त़रह़ हड्डियां और शीशे के टुकड़े आ़म त़ौर पर लोग रास्तों में डाल दिया करते हैं। इन ह़रकतों से मुसलमान को बचना चाहिए बल्कि रास्तों में कोई तक्लीफ़ देह चीज़ अगर नज़र पड़ जाए तो उस को रास्तों से हटा देना चाहिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगर येह अ़मल मक़्बूल हो गया तो जन्नत मिलेगी। واللّٰه تعالٰی اعلم

दावते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिए फ़िक्रमन्द रेहने का ज़ेहन बनेगा।

﴾46﴿ लोगों की ख़ताओं को मुआफ़ करना

ह़दीस :

عَنْ اَنَسٍ اِذَا اُوْقِفَ الْعِبَادُ نَادٰی مُنَادٍ لِیَقُمْ مَنْ اَجْرُہٗ عَلَی اللّٰہِ وَلْیَدْخُلِ الْجَنَّۃَ قِیْلَ مَنْ ذَا الَّذِیْ اَجْرُہٗ عَلَی اللّٰہِ قَالَ الْعَافُوْنَ عَنِ النَّاسِ فَقَامَ کَذَا وَکَذَا اَلْفًا فَدَخَلُوا الْجَنَّۃَ بِغَیْرِ حِسَابٍ[1] (کنز العمال، ج۳، ص۲۱۴)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि (मैदाने मेह़शर में) जब तमाम बन्दे (ह़िसाब के लिए) खड़े किए जाएंगे तो एक मुनादी येह एलान करेगा कि जिस का अज्र **अल्लाह** के ज़िम्मे है उस को चाहिए कि वोह खड़ा हो जाए और जन्नत में दाख़िल हो जाए तो कोई केहने वाला कहेगा कि वोह कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे है ? तो मुनादी कहेगा कि जो लोगों की ख़ताओं को मुआफ़ करने वाले हैं येह सुन कर इतने इतने हज़ार आदमी खड़े हो जाएंगे और बिला ह़िसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

मुसलमानों से अगर कोई ग़लती और ख़ता हो जाए और वोह मुआफ़ी के त़लबगार हों या न हों बहर ह़ाल उन की ख़ताओं को मुआफ़ कर देना येह बहुत बड़ा जन्नती अ़मल है । क़ुरआने मजीद में भी وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ[2] फ़रमा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों की मदह़ फ़रमाई और उन लोगों को नेकूकार बताया है । और ह़दीस शरीफ़ में आप ने पढ़ लिया कि उन लोगों के बारे में मैदाने मेह़शर के अन्दर **अल्लाह** तआ़ला का मुनादी इन लफ़्ज़ों में एलान फ़रमाएगा कि वोह लोग जिन का अज्र **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है वोह उठें और

1 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث:۷۰۰۶، ج۲، الجزء۳، ص۱۵۱

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और लोगों से दरगुज़र करने वाले । (پ۴، ال عمران:۱۳۴)

www.dawateislami.net

बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएं اَللّٰہُ اَکْبَر ! येह कितना बड़ा एज़ाज़ और किस क़दर अ़ज़ीम शरफ़ है । ! سُبْحَانَ الله ! سُبْحَانَ الله

﴾47﴿ मेहमान नवाज़ी

ह़दीस :

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने भाई ह़ज़रते बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि ऐ बरा ! आदमी जब अपने (दीनी) भाई की लि वजहिल्लाह मेहमान नवाज़ी करता है और उस की कोई जज़ा और शुक्रिय्या नहीं चाहता तो **अल्लाह** तआ़ला उस के घर में दस फ़रिश्तों को भेज देता है जो एक साल कामिल तक **अल्लाह** तआ़ला की तस्बीह़ व तेहलील और तक्बीर पढ़ते और उस के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करते रेहते हैं और जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़रिश्तों की पूरे साल की इ़बादत के बराबर उस के नामए आमाल में इ़बादत लिख दी जाती है और **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मे येह है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएं "जन्नतुल ख़ुल्द" और न फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाएगा ।[1]

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 9 स. 153)

तशरीह़ात व फ़्वाइद

इख़्लास के साथ किसी मुसलमान की मेहमान नवाज़ी का बहुत बड़ा अज्रे अ़ज़ीम है, क़ुरआने मजीद की सूरए दह्र में ख़ास तौ़र पर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मेहमान नवाज़ बन्दों की तारीफ़ फ़रमाई और उन के लिए जन्नत और जन्नती लिबास ह़रीर का वादा फ़रमाया है, ह़दीसे मज़्कूरे बाला में भी जो अज्रे अ़ज़ीम बयान किया गया है भला उस की अ़ज़मत का कौन अन्दाज़ा कर सकता है । ख़ुदावन्दे करीम मुसलमानों को मेहमान नवाज़ी और इस की बरकतों और अज्रो सवाब से सरफ़राज़ फ़रमाए । (आमीन)

1 .....کنزالعمال، کتاب الضیافة، الفصل الثانی، الحدیث:۲۵۸۷۸، ج۵، الجزء۹، ص ۱۱۰

﴾48﴿ सलाम व मुसाफ़हा

ह़दीस : 1

عَنْ سَلْمَانَ اِنَّ الْمُسْلِمَ اِذَا لَقِیَ اَخَاهُ الْمُسْلِمَ فَاَخَذَهٗ بِیَدِهٖ تَحَاتَّتْ ذُنُوْبُهُمَا كَمَا تَحَاتُّ الْوَرَقُ مِنَ الشَّجَرَةِ الْيَابِسَةِ فِیْ يَوْمِ رِيْحٍ عَاصِفٍ وَاِلَّا غُفِرَ لَهُمَا وَلَوْ كَانَتْ ذُنُوْبُهُمَا مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ[1] (کنزالعمال،ج۹،ص۷۵)

ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब मुसलमान अपने (दीनी) भाई से मुलाक़ात कर के (मुसाफ़हे में) उस का हाथ पकड़ता है तो उन दोनों के गुनाह इस त़रह़ झड़ जाते हैं जिस त़रह़ सूखे दरख़्त के पत्ते तेज़ आंधी के दिन में और उन दोनों की मग़फ़िरत हो जाती है अगर्चे उन दोनों के गुनाह समुन्दर की झाग के बराबर हों। (यानी गुनाहे सग़ीरा)

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى تُؤْمِنُوْا وَلَا تُؤْمِنُوْا حَتّٰى تَحَابُّوْا اَوَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى شَیْءٍ اِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ اَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ۔رواہ مسلم[2] (مشکوٰۃ،ج۲،ص۳۹۷)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग जन्नत में नहीं दाख़िल होगे यहां तक कि मोमिन बन जाओ और तुम लोग मोमिन नहीं बन सकोगे यहां तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो। क्या मैं तुम लोगों को ऐसी चीज़ का रास्ता न बता दूं कि जब तुम

1 .....کنزالعمال، کتاب الصحبة،الباب الرابع،الحدیث:۲۵۳۵۷،ج۵،الجزء۹، ص۵۶

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الآداب،باب السلام،الحدیث:۴۶۳۱،ج۲،ص۱۶۱

लोग इस को कर लोगे तो एक दूसरे से महब्बत करने लगोगे वोह येह है कि तुम लोग आपस में सलाम का चर्चा करो।

ह़दीस : 3

عَنِ ابْنِ عُمَرَ مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُسَلِّمُ عَلٰى عِشْرِيْنَ رَجُلًا مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ اِلَّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ [1] (کنزالعمال،ج۹،ص۲۸)

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि जो मुसलमान बीस मुसलमानों को सलाम करे उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।

ह़दीस : 4

عَنْ اَنَسٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَا بُنَيَّ اِذَا دَخَلْتَ عَلٰى اَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُوْنُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ۔رواه الترمذی [2] (مشکوٰۃ،ج۲،۲۹۹)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ प्यारे बेटे ! जब तुम अपने घरवालों पर दाख़िल हुवा करो तो सलाम कर लो, येह सलाम तुम्हारे लिए और तुम्हारे घरवालों के लिए बरकत है।

ह़दीस : 5

عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ اِلَّا غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ اَنْ يَّتَفَرَّقَا [3]

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الصحبة،الباب الرابع،الحدیث ۲۵۲۸۲، ج۵،الجزء۹، ص ۵۱

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب،باب السلام،الحدیث:۴۶۵۲، ج۲،ص ۱۶۵

3 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب،باب المصافحة و المعانقة،الحدیث۴۶۷۹،ج۲، ص۱۶۹

हज़रते बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा की नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोई से भी दो मुसलमान मुलाक़ात करते हैं फिर दोनों मुसाफ़हा करते हैं तो उन दोनों के गुनाह उन दोनों के अलग होने से पेहले ही बख़्श दिए जाते हैं (यानी गुनाहे सग़ीरा)।

हदीस : 6

عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ صَلَّى اَرْبَعًا قَبْلَ الْهَاجِرَةِ فَكَاَنَّمَا صَلَّاهُنَّ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَالْمُسْلِمَانِ اِذَا تَصَافَحَا لَمْ يَبْقَ بَيْنَهُمَا ذَنْبٌ اِلَّا سَقَطَ[1] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۰۳)

हज़रते बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो चार रक्अ़त दोपहर से पेहले पढ़े तो गोया उस ने इन रक्अ़तों को शबे क़द्र में पढ़ा और दो मुसलमान जब मुसाफ़हा करते हैं तो उन के सब गुनाह झड़ जाते हैं कोई गुनाह बाक़ी नहीं रेह जाता।

तशरीहात व फ़्वाइद

﴾1﴿ मज़्कूरा बाला अहादीस में जहां जहां तमाम गुनाहों के मुआ़फ़ होने का ज़िक्र है उस से मुराद सग़ीरा गुनाह हैं क्यूंकि कबीरा तो बग़ैर सच्ची तौबा और बग़ैर हक़ वाले से मुआ़फ़ कराए मुआ़फ़ नहीं होते।

﴾2﴿ हदीस नम्बर 2 से मालूम हुवा कि सलाम ज़रीअ़ए मह़ब्बत है लेहाज़ा मुसलमानों को चाहिए कि ब कसरत एक दूसरे को सलाम करें।

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب المصافحۃ والمعانقۃ، الحدیث ٤٦٩٤، ج٢، ص١٧١

﴾3﴿ ह़दीस नम्बर 4 से साबित हुवा कि सलाम ख़ैरो बरकत है और आदमी को चाहिए कि जब अपने घर में दाख़िल हो तो अपने घरवालों को सलाम करे इस सलाम में सलाम करने वाले और घरवाले दोनों के लिए बरकत है। आज कल आ़म तौ़र पर लोग अपने घरवालों को सलाम नहीं करते और चुपके से घरों में दाख़िल हो जाते हैं येह त़रीक़ा सुन्नत के ख़िलाफ़ है। घर में दाख़िल होते वक़्त घरवालों को सलाम करना सुन्नत और बाइ़से ख़ैरो बरकत है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾49﴿ तवाज़ो़अ़ व इन्किसारी

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ مَنْ یَّتَوَاضَعُ لِلّٰہِ دَرَجَۃً یَرْفَعُہُ اللّٰہُ دَرَجَۃً حَتّٰی یَجْعَلَہٗ فِیْ عِلِّیِّیْنَ وَمَنْ یَتَکَبَّرُ عَلَی اللّٰہِ دَرَجَۃً یَضَعُہُ اللّٰہُ دَرَجَۃً حَتّٰی یَجْعَلَہٗ فِیْ اَسْفَلِ السَّافِلِیْنَ[1] (کنزالعمال، ج۳، ص۶۶)

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो **अल्लाह** तआ़ला के लिए एक दरजा इन्किसारी करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को एक दरजा बुलन्द कर देगा यहां तक कि उस को इ़ल्लिय्यीन में पहुंचा देगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर एक दरजा तकब्बुर करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को एक दरजा पस्त कर देगा यहां तक कि उस को अस फ़लिस साफ़िलीन में डाल देगा।

ह़दीस : 2

عَنْ مُعَاذِ بْنِ اَنَسٍ مَنْ تَرَکَ اللِّبَاسَ تَوَاضُعًا لِلّٰہِ وَھُوَ یَقْدِرُ عَلَیْہِ دَعَاہُ اللّٰہُ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ عَلٰی رُءُوْسِ الْخَلَائِقِ حَتّٰی یُخَیِّرَہٗ مِنْ اَیِّ حُلَلِ الْاِیْمَانِ شَاءَ یَلْبَسُھَا[2] (کنزالعمال، ج۳، ۶۸)

1 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث ۵۷۱۸، ج۲، الجزء۳، ص۴۹

2 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۷۳۰، ج۲، الجزء۳، ص۴۹

www.dawateislami.net

हज़रते मुआज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिए इन्किसारी करते हुवे और लिबास पर कुदरत रखते हुवे लिबास छोड़ देगा तो उस को **अल्लाह** तआला क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुला कर येह इख़्तियार देगा कि वोह ईमान के हुल्लों में से जिस को चाहे पेहन ले।

हदीस : 3

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِّنْ مَّالٍ وَمَا زَادَ اللّٰهُ رَجُلًا بِعَفْوٍ اِلَّا عِزًّا وَمَا تَوَاضَعَ اَحَدٌ لِلّٰهِ اِلَّا رَفَعَهُ اللّٰهُ [1] (ترمذی، ج۲، ص۲۳)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सदक़ा माल को नहीं घटाता और जो आदमी किसी को मुआफ़ कर दे तो **अल्लाह** तआला उस की इज़्ज़त बढ़ा देता है और जो **अल्लाह** तआला के लिए इन्किसारी करेगा तो **अल्लाह** तआला उस को बुलन्द फ़रमा देगा।

हदीस : 4

عَنْ مُعَاذٍ اَلَا اُخْبِرُكَ عَنْ مُلُوْكِ اَهْلِ الْجَنَّةِ كُلُّ رَجُلٍ ضَعِیْفٍ مُسْتَضْعَفٍ ذُوْ طِمْرَیْنِ لَا یُؤْبَهُ لَهٗ لَوْ اَقْسَمَ عَلَی اللّٰهِ لَاَبَرَّهٗ [2] (کنز العمال، ج۳، ص۹۰)

हज़रते मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि क्या मैं तुम को एहले जन्नत के बादशाहों की ख़बर न दूं ? वोह कमज़ोरो नातुवां जिन्हें लोग कुछ न समझते हों फटे पुराने कपड़े पेहनते हों अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** ज़रूर उन की क़सम पूरी फ़रमा देगा। (येह लोग एहले जन्नत के बादशाह हैं)

---

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی التواضع، الحدیث ۲۰۳۶، ج۳، ص۴۱۵

2 .....سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب من لایؤبه له، الحدیث ۴۱۱۵، ج۴، ص۴۲۹

www.dawateislami.net

तशरीहात व फ़्वाइद

तवाज़ोअ़ और इन्किसारी खुदावन्दे तआ़ला और बन्दों के नज़्दीक बड़ी प्यारी ख़स्लत है, घमन्ड और तकब्बुर बहुत ही बुरी आ़दत है। तवाज़ोअ़ येह है कि आदमी अपने को दूसरों से कमतर समझे और किसी को ह़क़ीर न जाने और तकब्बुर येह है कि आदमी अपने को दूसरों से बड़ा समझे और दूसरों को अपने आप से ह़क़ीर जाने। तकब्बुर का अन्जाम ज़िल्लतो ख़्वारी है जो तकब्बुर करेगा यक़ीनन ज़लील होगा।

تکبر عزازیل را خوار کرد　　بزندان لعنت گرفتار کرد

तकब्बुर ने अ़ज़ाज़ील को ज़लील कर दिया और उस को लानत के जेल ख़ाने में गिरिफ़्तार कर दिया।

ह़ज़रते शैख़ सादी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि

مرا پیر دانائے روشن شہاب　　دو اندرز فرمود بر روئے آب

یکے آں کہ برخویش خود بیں مباش　　دگر آں کہ برغیر بدبیں مباش

यानी मेरे पीर ख़्वाजा शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ को दरिया के सफ़र में दो नसीह़त फ़रमाई है। एक येह कि अपने आप को अच्छा मत समझ लेना दूसरी येह कि दूसरों को अपने से बुरा मत समझना। मत़लब येह है कि कभी तकब्बुर मत करना और हमेशा तवाज़ोअ़ और इन्किसारी करते रेहना क्यूंकि तवाज़ोअ़ करने वाला "**जन्नती**" और तकब्बुर करने वाला "**जहन्नमी**" है।

﴾50﴿ ह़या

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَلْحَیَاءُ مِنَ الْاِیْمَانِ وَالْاِیْمَانُ فِی الْجَنَّةِ وَالْبَذَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِی النَّارِ[1] (کنزالعمال، ج۳، ص۷۱)

1 ..... کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۷۶۱، ج۲، الجزء۳، ص۵۲

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हया ईमान की ख़स्लतों में से है और ईमान जन्नत में है और बे हयाई ज़ुल्म की ख़स्लतों में से है और ज़ुल्म जहन्नम में है।

हदीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَلْاِیْمَانُ بِضْعٌ وَّسَبْعُوْنَ شُعْبَةً فَاَفْضَلُهَا قَوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَدْنَاهَا اِمَاطَةُ الْاَذٰی عَنِ الطَّرِیْقِ وَالْحَیَاءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْاِیْمَانِ۔متفق علیه[1]

(مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۲)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ईमान की सत्तर से कुछ ज़्यादा शाख़ें हैं तो उन में सब से अफ़्ज़ल لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ है। और सब से अदना किसी तक्लीफ़ की चीज़ों को रास्ते से हटा देना है और हया ईमान की एक बहुत बड़ी शाख़ है। इस हदीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तशरीहात व फ़वाइद

साहिबे मिरक़ात ने हया की येह तारीफ़ की है وَهُوَ خُلُقٌ یَّمْنَعُ الشَّخْصَ مِنَ الْفِعْلِ الْقَبِیْحِ بِسَبَبِ الْاِیْمَانِ[2] यानी हया वोह आदत है कि आदमी को बुरे कामों से ईमान के सबब से रोक दे। ईमानी हया एक बहुत ही बुलन्द मर्तबा ख़स्लत है जो जन्नत में ले जाने वाले बहुत से आमाल का दारो मदार है इसी लिए इस उनवान की हदीस

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، الفصل الاول، الحدیث ۵، ج ۱، ص ۲۲

2 .....مرقاۃ المفاتیح، تحت الحدیث ۵، ج ۱، ص ۱۴۰

नम्बर 2 में फ़रमाया गया कि ह़या ईमान की शाख़ों में से एक बहुत बड़ी शाख़ है क्यूंकि जिस मोमिन में ईमानी ह़या होगी वोह तमाम गुनाहों के कामों से बचता रहेगा फिर उस के जन्नती होने में क्या शुबा है ? बहर ह़ाल ह़या जन्नत में ले जाने वाली ख़स्लत है इस लिए दुआ़ है कि **अल्लाह** तआ़ला हर मोमिन को ईमानी ह़या की दौलते ला ज़वाल से माला माल फ़रमाए ।

अब रहा येह सुवाल कि आख़िर "ह़या" ईमान की बहुत बड़ी शाख़ और बहुत ही अहम ख़स्लत क्यूं कर और किस त़रह़ है ? तो इस का जवाब येह है कि आमाले इस्लाम की दो ही क़िस्में हैं अवामिर व नवाही यानी अच्छे कामों को करो और बुरे कामों को मत करो और ज़ाहिर है कि जिस मुसलमान में ह़या की सिफ़त होगी वोह तमाम बुरे कामों से बाज़ रहेगा तो गोया "ह़या" ईमान की एक ऐसी ख़स्लत होगी कि इस की वज्ह से बहुत सी ईमानी ख़स्लतें पाई जाएंगी इस लिए येह बिलाशुबा दरख़्त ईमान की शाख़ों में से निहायत ही अहम और बहुत ही बड़ी शाख़ है । واللہ تعالیٰ اعلم

﴾51﴿ सब्र

ह़दीस :

عَنْ عَلِيٍّ اَلصَّبْرُ ثَلٰثَةٌ فَصَبْرٌ عَلَى الْمُصِيْبَةِ وَصَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ وَصَبْرٌ عَنِ الْمَعْصِيَةِ فَمَنْ صَبَرَ عَلَى الْمُصِيْبَةِ حَتّٰى يَرُدَّهَا بِحُسْنِ عَزَائِهَا كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ ثَلٰثِمِائَةِ دَرَجَةً مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ صَبَرَ عَلَى الطَّاعَةِ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ سِتَّ مِائَةِ دَرَجَةً مَابَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ تُخُوْمِ الْاَرْضِ اِلٰى مُنْتَهٰى الْاَرْضِيْنَ وَمَنْ صَبَرَ عَنِ الْمَعْصِيَةِ كَتَبَ اللّٰهُ لَهٗ تِسْعَ مِائَةِ دَرَجَةً مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ

كَمَا بَيْنَ تُخُوْمِ الْاَرْضِ اِلٰى مُنْتَهٰى الْعَرْشِ مَرَّتَيْنِ[1] (کنز العمال، ج۳، ص۱۵۷)

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सब्र तीन हैं ﴾1﴿ मुसीबत पर सब्र ﴾2﴿ इ़बादत पर सब्र ﴾3﴿ गुनाह से सब्र, तो **जो मुसीबत पर सब्र करे** यहां तक कि मुसीबत को अच्छी तसल्ली से दूर कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए तीन सौ दरजे लिख देता है जिस के दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीनो आस्मान के दरमियान है और **जो इबादत पर सब्र करता है अल्लाह** तआ़ला उस के लिए छे सौ दरजे लिख देता है जिस के दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीन की निचली कीचड़ और तमाम ज़मीनों के मुन्तहा के दरमियान फ़ासिला है और **जो गुनाह से सब्र करे** तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिए नव सौ दरजे लिख देता है जिस के दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीन की निचली कीचड़ों और अ़र्श के मुन्तहा के दरमियान के दो गुने के दरमियान फ़ासिला है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

सब्र के माना "حَبْسُ النَّفْسِ عَلَى الْمَكَارِهِ" यानी नफ़्स को तक्लीफ़ों के ऊपर रोके रेहना और कन्ट्रोल में रखना, अब ग़ौर कीजिए कि सब्र की तीनों क़िस्मों पर येह तारीफ़ सादिक़ आती है। ﴾1﴿ "صَبْرٌ عَلَى الْمُصِيْبَةِ" ज़ाहिर है कि मुसीबत के वक़्त नफ़्स में बड़ी बे चैनी और बे क़रारी पैदा होती है और बाज़ मरतबा ऐसी बोखलाहट बल्कि जुनून व दीवानगी की कैफ़िय्यत पैदा हो जाती है कि इन्सान रोने पीटने, बाल नोचने और कपड़े फाड़ने लगता है अब इसी मौक़अ़ पर अपने नफ़्स को रोने पीटने और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ की ह़रकतों से रोके रेहना येही "मुसीबत पर सब्र करना" है।

---

1 .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث ۶۵۱۲، ج۲، الجزء۳، ص ۱۱۱

﴾2﴿ "صَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ" ज़ाहिर है कि गरमियों का रोज़ा हो और आदमी प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो और सामने ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा बर्फ़ का शरबत रखा हुवा हो नफ़्स बार बार शरबत की त़रफ़ लपकता है मगर रोज़ेदार नफ़्स को रोके हुवे है जो नफ़्स पर गिरां और शाक़ है येही "इबादत पर सब्र करना" है।

﴾3﴿ "صَبْرٌ عَنِ الْمَعْصِيَةِ" जवान आदमी है, शेहवत का ग़लबा शबाब पर है, ज़िनाकारी के लिए नफ़्स बे क़रार है और कोई ह़सीन औ़रत उस को बदकारी की दावत भी दे रही है मगर परहेज़गार मुसलमान अपने नफ़्स को रोके हुवे है और ज़िनाकारी से बचा हुवा है? येही "صَبْرٌ عَنِ الْمَعْصِيَةِ" यानी गुनाह से सब्र करना" है। ह़दीस में आप ने पढ़ लिया कि सब्र की इन तीनों क़िस्मों का बड़ा दरजा है। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया है कि [1] اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ यानी सब्र करने वालों के साथ **अल्लाह** तआ़ला की इमदादो नुसरत होती है और साबिरीन का मददगार **अल्लाह** तआ़ला होता है।

سُبْحَانَ الله इस से बढ़ कर सब्र का सवाब व अज्र क्या होगा? कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों के साथ होता है।

﴾52﴿ ख़ैर ख़्वाही

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ ثَلٰثَ مِرَارٍ قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ لِمَنْ قَالَ لِلّٰهِ وَلِكِتَابِهٖ وَلِاَئِمَّةِ الْمُسْلِمِيْنَ وَعَامَّتِهِمْ [2]

(ترمذی، ج۲، ص۱۴)

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है। (پ۲، البقرة:۱۵۳)

2 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی النصیحة، الحدیث ۱۹۳۲، ج۳، ص۳۷۱

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा येह फ़रमाया कि "दीन ख़ैर ख़्वाही है।" तो सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस की ख़ैर ख़्वाही ? तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की और उस की किताब की और मुसलमानों के इमामों की और आ़म मुसलमानों की।

ह़दीस : 2

عَنْ تَمِیْمِ نِ الدَّارِیِّ مَنْ جَاءَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ بِخَمْسٍ لَمْ یُصَدَّ وَجْهُهٗ عَنِ الْجَنَّةِ النُّصْحُ لِلّٰهِ وَلِدِیْنِهٖ وَلِکِتَابِهٖ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِجَمَاعَةِ الْمُسْلِمِیْنَ [1]

(کنز العمال، ج۳، ص۲۳۶)

हज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो पांच बातें ले कर क़ियामत के दिन आएगा उस का चेहरा जन्नत से नहीं रोका जाएगा : ﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ैर ख़्वाही। ﴾2﴿ दीन की ख़ैर ख़्वाही। ﴾3﴿ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की किताब की ख़ैर ख़्वाही। ﴾4﴿ **अल्लाह** के रसूल की ख़ैर ख़्वाही। ﴾5﴿ मुसलमानों की जमाअ़त की ख़ैर ख़्वाही।

तशरीह़ात व फ़वाइद

अल्लाह तआ़ला की ख़ैर ख़्वाही से मुराद येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ातो सिफ़ात में शिर्कत से बचना और उस की इबादत करना और उस की ना फ़रमानी और मासियत से बचना। **अल्लाह** की किताब की ख़ैर ख़्वाही से मुराद कुरआन पर ईमान लाना और उस की निहायत ताज़ीम के साथ तिलावत करना और उस की तालीमात पर जज़्बए अ़क़ीदत और जोशे मह़ब्बत के साथ कारबन्द होना। रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ैर ख़्वाही का येह मत़लब है कि सिद्क़ दिल से रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की तस्दीक़ करना और इन के हर अम्र व नही की इत़ाअ़त और इन

[1] .....کنز العمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۷۱۹۹، ج۲، الجزء۳، ص۱۶۶

www.dawateislami.net

की ताज़ीमो तौक़ीर और इन के अदबो एह़तिराम और इन के हुक़ूक़ अदा करना और इन की सुन्नत पर ख़ुद अ़मल कर के दूसरों को उन की सीरत व सुन्नते मुबारका की दावत और उन के दीन की नुस्रत व ह़िमायत और नश्रो इशाअ़त में अपनी त़ाक़त भर ह़िस्सा लेना। अइम्मए मुस्लिमीन की ख़ैर ख़्वाही येह है कि इन के अह़काम व फ़रमूदात की इत़ाअ़त करते रेहना और इन के ख़िलाफ़ ख़ुरूज व बग़ावत न करना, इन के झन्डे के नीचे जेहाद करना और ज़कात व सदक़ात को इन के दरबार तक पहुंचाना। और जमाअ़ते मुस्लिमीन की ख़ैर ख़्वाही येह है कि हर बात में आ़म मुसलमानों की सलाह़ो फ़लाह़ का ख़याल रखा जाए और कोई ऐसा काम न किया जाए जिस से मुसलमानों को ज़रर व नुक़्सान पहुंचे।[1]

(नवावी शरीफ़ शर्हे मुस्लिम मुलख़्ख़सन, जि. 1 स. 54)

﴾53﴿ मुसलमानों की पर्दापोशी

ह़दीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً مِّنْ كُرَبِ الدُّنْیَا نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ یَوْمِ الْقِیٰمَةِ وَمَنْ یَّسَّرَ عَلٰی مُعْسِرٍ فِی الدُّنْیَا یَسَّرَ اللّٰهُ عَلَیْهِ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَنْ سَتَرَ عَلٰی مُسْلِمٍ فِی الدُّنْیَا سَتَرَ اللّٰهُ عَلَیْهِ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ[2] (ترمذی، ج۲، ص۱۵)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो किसी मुसलमान से एक तक्लीफ़

1 .....شرح صحیح مسلم للنووی، ج۱، ص۵٤

2 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السترة...الخ، الحدیث۱۹۳۷، ج۳، ص۳۷۳

www.dawateislami.net

को दुन्या की तक्लीफ़ों में से दूर कर दे तो अल्लाह तआ़ला उस की क़ियामत के दिन की तक्लीफ़ों में से एक तक्लीफ़ को दूर फ़रमा देगा और जो किसी तंगदस्त पर दुन्या में आसानी कर दे तो अल्लाह तआ़ला दुन्याओ आख़िरत में उस पर आसानी फ़रमा देगा और जो किसी मुसलमान की दुन्या में पर्दापोशी करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस की दुन्याओ आख़िरत में पर्दापोशी फ़रमाएगा और अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद में रेहता है जब तक कि बन्दा अपने भाई की मदद में रेहता है।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ لَا یَرٰی اِمْرَؤٌ مِنْ اَخِیْهِ سَیِّئَةً فَیَسْتُرَهَا عَلَیْهِ اِلَّا اُدْخِلَ الْجَنَّةَ [1] (کنزالعمال، ج۳،ص۱۴۵)

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो आदमी अपने भाई की कोई बुराई देख कर उस की पर्दापोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

﴾54﴿ रेह़्म व शफ़्क़त

ह़दीस : 1

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ الرَّاحِمُوْنَ یَرْحَمُهُمُ الرَّحْمٰنُ اِرْحَمُوْا مَنْ فِی الْاَرْضِ یَرْحَمْكُمْ مَنْ فِی السَّمَاءِ اَلرَّحِمُ شُجْنَةٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَمَنْ وَصَلَهَا وَصَلَهُ اللّٰهُ وَمَنْ قَطَعَهَا قَطَعَهُ اللّٰهُ [2]

(ترمذی، ج۲،ص۱۴)

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ٦٣٩٤، ج٢، الجزء٣، ص١٠٣

2 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی رحمة المسلمین، الحدیث ١٩٣١، ج٣، ص ٣٧١

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रेह़्म करने वालों पर रह़्मान रेह़्म फ़रमाता है तुम लोग ज़मीन वालों पर रेह़्म करो तो तुम लोगों पर आस्मान वाला रेह़्म फ़रमाएगा। रिश्तेदारी रह़्मान से तअ़ल्लुक़ रखने वाली एक शाख़ है तो जो शख़्स उस को मिलाएगा **अल्लाह** तआ़ला उस को मिलाएगा और जो शख़्स उस को काटेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को काट देगा।

ह़दीस : 2

عَنْ اَنَسٍ لَا یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ اِلَّا رَحِیْمٌ [1] (کنزالعمال، ج۳، ص۶۸)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जन्नत में रेह़्म करने वाला ही दाख़िल होगा।

ह़दीस : 3

عَنْ اَنَسٍ مَنْ قَادَ اَعْمٰی اَرْبَعِیْنَ خُطْوَۃً لَمْ تَمَسَّ وَجْھَہُ النَّارُ [2]

(کنزالعمال، ج۲۰، ص۲۵۵)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जो किसी अन्धे को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।

ह़दीस : 4

عَنْ جَرِیْرٍ مَنْ لَا یَرْحَمُ لَا یُرْحَمُ وَمَنْ لَا یَغْفِرُ لَا یُغْفَرُ لَہٗ وَمَنْ لَا یَتُوْبُ لَا یَتُوْبُ اللّٰہُ عَلَیْہِ [3] (کنزالعمال، ج۳، ص۹۴)

---

1 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۹۷۱، ج۲، الجزء۳، ص۶۸

2 .....کنزالعمال، کتاب المواعظ...الخ، الباب الاول، الحدیث۴۳۱۲۸، ج۸، الجزء۱۵، ص۳۳۴

3 .....کنزالعمال، کتاب الاخلاق، الباب الاول، الحدیث: ۵۹۶۳، ج۲، الجزء۳، ص۶۸

हज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जो रेह़्म नहीं करेगा उस पर रेह़्म नहीं किया जाएगा और जो ख़त़ा नहीं बख़्शेगा उस की ख़त़ा नहीं बख़्शी जाएगी और जो तौबा नहीं करेगा उस की तौबा नहीं क़बूल की जाएगी।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

﴾1﴿ रेह़्म व शफ़्क़त **अल्लाह** तआ़ला को बहुत ज़्यादा मेह़बूब है। रेह़्म अपने रिश्तेदारों, आदमियों, जानवरों, सब के साथ अच्छा है यहां तक कि जिन चीज़ों को क़त्ल करने का हुक्म है उन के बारे में भी येह हुक्म है कि उन को बे रेह़्मी के साथ मत क़त्ल करो बल्कि रेह़्म व शफ़्क़त और अच्छाई के साथ क़त्ल करो।

﴾2﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 4 में जो येह है कि "जो रेह़्म नहीं करेगा उस पर रेह़्म नहीं किया जाएगा।" इस के दो मत़लब हो सकते हैं एक तो येह कि दुन्या में जो आदमी लोगों पर रेह़्म नहीं करेगा दुन्या में उस पर भी कोई रेह़्म करने वाला नहीं होगा।

चुनान्चे, तारीख़ इस क़िस्म के वाक़िआ़त की शाहिद है कि बड़े बड़े ख़ूं ख़्वार ज़ालिमों का इस दुन्या में येह अन्जाम हुवा है कि वोह मजबूर व लाचार हो कर दर बदर लोगों से रेह़्मो करम की भीक मांगते मांगते मर गए मगर कोई उन पर तरस खा कर रेह़्म करने वाला नहीं मिला।

और दूसरा मत़लब येह हो सकता है कि जो दुन्या में लोगों पर रेह़्म नहीं करेगा क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस पर रेह़्म नहीं फ़रमाएगा। واللہ تعالٰی اعلم

﴾55﴿ सख़ावत

सख़ावत भी जन्नत में ले जाने वाले आमाल में बहुत मुमताज़ अ़मल है इस के बारे में भी चन्द ह़दीसों की तजल्लियां देखिए।

हदीस : 1

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلسَّخِیُّ قَرِیْبٌ مِّنَ اللّٰهِ قَرِیْبٌ مِّنَ الْجَنَّةِ قَرِیْبٌ مِّنَ النَّاسِ بَعِیْدٌ مِّنَ النَّارِ وَالْبَخِیْلُ بَعِیْدٌ مِّنَ اللّٰهِ بَعِیْدٌ مِّنَ الْجَنَّةِ بَعِیْدٌ مِّنَ النَّاسِ قَرِیْبٌ مِّنَ النَّارِ وَالْجَاهِلُ السَّخِیُّ اَحَبُّ اِلَی اللّٰهِ مِنْ عَابِدٍ بَخِیْلٍ[1] (ترمذی، ج۲، ص۱۸)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़रीब है, जन्नत से क़रीब है, तमाम लोगों से क़रीब है, जहन्नम से दूर है और कन्जूस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है, जन्नत से दूर है, तमाम लोगों से दूर है, जहन्नम से क़रीब है और जाहिले सख़ी आ़बिदे बख़ील से ज़्यादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को प्यारा है।

हदीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَلسَّخَاءُ شَجَرَةٌ فِی الْجَنَّةِ فَمَنْ کَانَ سَخِیًّا اَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْهَا فَلَمْ یَتْرُکْهُ الْغُصْنُ حَتّٰی یُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ وَالشُّحُّ شَجَرَةٌ فِی النَّارِ فَمَنْ کَانَ شَحِیْحًا اَخَذَ بِغُصْنٍ مِنْهَا فَلَمْ یَتْرُکْهُ الْغُصْنُ حَتّٰی یُدْخِلَه النَّارَ[2] (مشکوٰۃ، ج۱، ص۱۶۷)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है तो जो शख़्स (दुन्या में) सख़ी होगा वोह उस दरख़्त की एक शाख़ को पकड़ेगा तो वोह शाख़ उस को नहीं छोड़ेगी यहां तक कि उस को जन्नत में दाख़िल कर देगी और बख़ीली जहन्नम में एक दरख़्त है तो जो शख़्स

1 .....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی السخاء، الحدیث ۱۹۶۸، ج۳، ص۳۸۷

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ، باب الانفاق...الخ، الحدیث: ۱۸۸۶، ج۱، ص۳۵۸

www.dawateislami.net

(दुन्या में) बख़ील होगा वोह उस दरख़्त की एक शाख़ पकड़ेगा तो वोह शाख़ उस को नहीं छोड़ेगी यहां तक कि उस को दोज़ख़ में डाल देगी।

ह़दीस : 3

عَنْ اَبِیْ بَکْرِنِ الصِّدِّیْقِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ خِبٌّ وَّلَا بَخِیْلٌ وَّلَا مَنَّانٌ۔رواہ الترمذی [1](مشکوٰۃ،ج۱،ص۱۶۵)

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जन्नत में कमीनी ख़स्लत वाला और कन्जूस और एह़सान जताने वाला नहीं दाख़िल होगा। इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

ह़दीस : 4

وَعَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ خَصْلَتَانِ لَا تَجْتَمِعَانِ فِیْ مُؤْمِنٍ اَلْبُخْلُ وَسُوْءُ الْخُلُقِ [2] (مشکوٰۃ،ج۱،ص۶۵)

ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दो ख़स्लतें मोमिन में जम्अ़ नहीं होंगी कन्जूसी और बद अख़्लाक़ी।

तशरीह़ात व फ़्वाइद

《1》 अह़ादीसे मज़्कूरा बाला और दूसरी ह़दीसों से ज़ाहिर है कि सख़ावत **अल्लाह** तआ़ला को बहुत पसन्द और कन्जूसी बहुत ही ना पसन्द है और **अल्लाह** तआ़ला सख़ी को जन्नत अ़त़ा फ़रमा देगा और कन्जूस को जहन्नम में भेज देगा।

---

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ،باب الانفاق...الخ،الحدیث:۱۸۷۳،ج۱، ص۳۵۵

2 .....سنن الترمذی، کتاب البروالصلۃ،باب ماجاء فی البخل،الحدیث۱۹۶۹،ج۳، ص۳۸۷

﴾2﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 3 में जो येह आया है कि लुच्चे, कन्जूस, एह़सान जताने वाले जन्नत में दाख़िल नहीं होंगे तो इस का मत़लब येह है कि जब तक येह लोग इन तीनों सिफ़तों के साथ आलूदा रहेंगे जन्नत में नहीं जाएंगे और जब येह लोग बुरी ख़स्लतों से पाक हो जाएंगे तो जन्नत में जाएंगे और इन बुरी ख़स्लतों से पाक होने की दो सूरतें हैं या तो मरने से पेहले इन बुरी ख़स्लतों से सच्ची तौबा कर लें या येह कि जहन्नम में येह लोग अपने गुनाहों के बराबर जल लें बहर ह़ाल जब तौबा कर के या अपने गुनाहों के बराबर जहन्नम में जल कर इन बुरी ख़स्लतों से पाक हो जाएंगे तो फिर साह़िबे ईमान होने की वज्ह से जन्नत में जाएंगे।

﴾3﴿ इस उ़नवान की ह़दीस नम्बर 4 का येह मत़लब है कि मोमिन में कन्जूसी और बद अख़्लाक़ी येह दोनों बुरी ख़स्लतें बयक वक़्त जम्अ़ नहीं होंगी मोमिन अगर "कन्जूस" होगा तो "बद अख़्लाक़" नहीं होगा और अगर "बद अख़्लाक़" होगा तो "कन्जूस" नहीं होगा और जिस मुसलमान को देखो कि कन्जूस भी है और बद अख़्लाक़ भी तो इस ह़दीस की रौशनी में येह समझ लो कि उस शख़्स के ईमान में कुछ न कुछ फ़ुतूर ज़रूर है।

﴾4﴿ बाज़ ह़दीसों से मालूम होता है कि **अल्लाह** तआ़ला कभी कभी अपने बन्दों की सख़ावत और कन्जूसी का इम्तिह़ान भी लिया करता है इस लिए जब कोई साइल तुम्हारे दरवाज़े पर आए तो हमेशा उस का ख़याल रखो कि कहीं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मेरा इम्तिह़ान तो नहीं हो रहा है। चुनान्चे, इस सिलसिले में हम यहां अन्धे, गन्जे, कोढ़ी के इम्तिह़ान वाली ह़दीस का तर्जमा तेह़रीर करते हैं जो बहुत ही इ़ब्रत ख़ेज़ और नसीह़त आमोज़ है।

ह़दीस الابرص والاقرع والاعمٰی

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बनी इसराईल के तीन आदमी एक कोढ़ी बर्स वाला, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा, **अल्लाह**

www.dawateislami.net

तआ़ला ने उन तीनों के इम्तिह़ान का इरादा फ़रमाया तो उन तीनों के पास एक फ़रिश्ते को भेज दिया चुनान्चे, वोह फ़रिश्ता सब से पेहले बर्स वाले कोढ़ी के पास आया और उस से कहा कि दुन्या में तुम को सब से ज़्यादा कौन सी चीज़ मेह़बूब है ? तो उस ने कहा कि अच्छा रंग, अच्छी खाल और मेरी येह बीमारी चली जाए जिस की वज्ह से तमाम लोग मुझ से घिन करते हैं। येह सुन कर फ़रिश्ते ने उस के बदन पर हाथ फेर दिया तो एक दम उस का मरज़ दफ़्अ़ हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने उस को बेहतरीन रंग और बेहतरीन खाल अ़ता फ़रमा दी फिर फ़रिश्ते ने उस से पूछा कि तुम्हें कौन सा सामान पसन्द है ? तो उस ने कहा कि "ऊंट" तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उस को एक गाभन ऊंटनी अ़ता कर दी गई और फ़रिश्ता येह केह कर उस के पास से चल दिया कि **अल्लाह** तआ़ला तुम को बरकत अ़ता फ़रमाए।

फिर येह फ़रिश्ता गन्जे के पास आया और कहा कि दुन्या में तुम को सब से ज़्यादा कौन सी चीज़ मेह़बूब है ? तो उस ने कहा कि ह़सीन बाल और मेरी येह बीमारी चली जाए जिस की वज्ह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं। येह सुन कर फ़रिश्ते ने उस के ऊपर हाथ फेरा तो दम ज़दन में उस की बीमारी जाती रही और **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से उस को निहायत ही ह़सीन बाल अ़ता कर दिए गए। इस के बाद फ़रिश्ते ने पूछा कि तुम्हें कौन सा माल पसन्द है ? तो उस ने कहा कि "गाए" तो उस को एक गाभन गाए अ़ता कर दी गई और फ़रिश्ता येह केह कर चल दिया कि **अल्लाह** तआ़ला तुम को बरकत दे।

इस के बाद येह फ़रिश्ता अन्धे के पास आया और कहा कि दुन्या में तुम को कौन सी चीज़ सब से ज़्यादा मेह़बूब है ? तो उस ने कहा कि बस येही कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी बीनाई को वापस अ़ता फ़रमा दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं। येह सुन कर फ़रिश्ते ने उस के ऊपर हाथ फिरा

दिया तो फ़ौरन ही बीना हो गया और **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बीनाई वापस लौटा दी। फिर फ़रिश्ते ने कहा कि तुम को कौन सा माल ज़्यादा पसन्द है ? तो उस ने कहा कि "बकरी" तो उस को एक गाभन बकरी अ़ता कर दी गई।

फिर ऊंटनी, गाए, बकरी तीनों ने बच्चे दिए और उन में इस क़दर बरकत हुई कि कोढ़ी के पास एक मैदान भर कर ऊंट हो गए। और गन्जे के पास एक मैदान भर कर "गाएं" हो गईं और अन्धे के पास एक मैदान भर कर बकरियां हो गईं, फिर कुछ दिनों के बाद येही फ़रिश्ता बर्स वाले कोढ़ी के पास अपनी उसी शक्लो सूरत में आया जिस शक्लो सूरत में पेहली मरतबा आया था और आ कर उस ने कहा कि मैं एक मिस्कीन आदमी हूं और मेरे सफ़र के तमाम ज़राएअ़ ख़त्म हो चुके हैं अब **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मुझे वत़न में पहुंचाने वाला नहीं है मैं तुम से उस **अल्लाह** के नाम पर जिस ने तुम्हें अच्छा रंग और ख़ूब सूरत चमड़ा और ऊंट की दौलत अ़ता की है, एक ऊंट का सुवाल करता हूं कि इस के ज़रीए़ मैं अपना सफ़र तमाम कर लूं। येह सुन कर कोढ़ी ने जवाब दिया कि मुझ पर बहुत से हुक़ूक़ हैं (यानी बहुत से लोगों को और बहुत से कामों में देना है) फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुम को पेहचानता हूं कि क्या तुम कोढ़ी नहीं थे ? कि तुम्हारे बर्स की वज्ह से तमाम लोग तुम से नफ़रत और घिन करते थे और तुम फ़क़ीर थे तो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारी बीमारी दूर कर के तुम्हें माल अ़ता फ़रमा दिया येह सुन कर कोढ़ी ने कहा कि मुझे तो येह माल अपने बुज़ुर्गों से मीरास में मिला है। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम झूट बोल रहे हो तो **अल्लाह** तआ़ला फिर तुम्हें वैसा ही कर दे जैसे कि तुम पेहले थे।

फिर वोह फ़रिश्ता अपनी सूरत में गन्जे के पास आया और वैसे ही सुवाल किया जैसे कि कोढ़ी से किया था और गन्जे ने भी वोही जवाब

दिया जो कोढ़ी ने दिया था तो फ़रिश्ता उस के पास से भी येही केह कर चल दिया कि अगर तू झूट बोल रहा है तो **अल्लाह** तआ़ला फिर तुझे वैसा ही कर दे जैसा कि तू पेहले था।

इस के बाद येह फ़रिश्ता अपनी पेहली ही शक्लो सूरत में अन्धे के पास आया और कहा कि मैं एक मिस्कीन आदमी हूं और मुसाफ़िर हूं मेरे सफ़र के तमाम ज़राएअ़ ख़त्म हो चुके हैं अब **अल्लाह** की मदद के सिवा मेरे वत़न पहुंचने की कोई सूरत ही नहीं है मैं तुम से उस **अल्लाह** के नाम पर जिस ने दोबारा तुम को बीनाई अ़त़ा की एक बकरी मांगता हूं कि इस को मैं अपने वत़न पहुंचने का ज़रीआ़ बनाऊं, येह सुन कर अन्धे ने कहा कि जी मैं तो अन्धा था तो **अल्लाह** ने मुझे दोबारा बीनाई अ़त़ा फ़रमा दी (तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सुवाल किया है) तो इस मैदान में मेरी जितनी बकरियां हैं इन में से जितनी चाहो तुम ले जाओ और जितनी चाहो छोड़ जाओ ख़ुदा की क़सम तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर जितनी भी ले लोगे मैं तुम से उस का मुत़ालबा कर के तुम्हें मशक़्क़त में नहीं डालूंगा।

येह सुन कर फ़रिश्ते ने कहा कि तुम अपना माल अपने पास ही रखो तुम तीनों का इम्तिह़ान लिया गया है तो **अल्लाह** तआ़ला तुम से ख़ुश हो गया और तुम्हारे दोनों साथियों से नाराज़ हो गया।[1] इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, जि. 1 स. 165)

गोश्त पथ्थर हो गया

इसी त़रह़ एक दूसरी ह़दीस भी बहुत ही इ़ब्रत नाक और रिक़्क़त अंगेज़ है जिस के रावी ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हैं। इन का बयान है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमह

1 .....صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء،باب حدیث ابرص...الخ، الحدیث ٣٤٦٤، ج٢،ص٤٦٣

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास किसी ने हदिये में एक बोटी गोश्त भेजा तो चूंकि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गोश्त बहुत पसन्द था उम्मुल मोमिनीन ने ख़ादिमा से कहा कि इस गोश्त को घर में रख दो शायद नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस को खाएं।

चुनान्चे, ख़ादिमा ने उस गोश्त को घर के ताक़ में रख दिया इस के बाद एक साइल आया और दरवाज़े पर येह सदा लगाई कि सदक़ा दो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम घर वालों को बरकत दे। येह सुन कर घर वालों ने केह दिया कि ऐ साइल ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम को बरकत दे येह सुन कर साइल चला गया फिर इस के बाद नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मकान में दाख़िल हुवे और फ़रमाया कि ऐ उम्मे सलमह ! तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है कि मैं उस को खाऊं तो ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने नोकरानी से फ़रमाया कि तुम जाओ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए वोह गोश्त लाओ तो नोकरानी गई लेकिन उस ताक़ में उस को एक चिकने पथ्थर के टुकड़े के सिवा और कुछ भी नहीं मिला इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोगों ने फ़क़ीर को घर में गोश्त होते हुवे नहीं दिया और वापस लौटा दिया तो वोह गोश्त पथ्थर हो गया। इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने अपनी किताब दलाइलुन्नुबुव्वह में रिवायत फ़रमाया है।[1] (मिश्कात, जि. 1 स. 166)

﴾56﴿ तवक्कुल

ह़दीस :

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ مِنْ اُمَّتِیْ سَبْعُوْنَ اَلْفًا بِغَیْرِ حِسَابٍ ھُمُ الَّذِیْنَ لَا یَسْتَرْقُوْنَ وَلَا یَتَطَیَّرُوْنَ وَعَلٰی رَبِّھِمْ یَتَوَکَّلُوْنَ متفق علیہ[2] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۵۲)

1 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الزکاۃ، باب الانفاق...الخ، الحدیث: ۱۸۸۰، ج۱، ص۳۵۷

2 .....مشکاۃالمصابیح، کتاب الرقاق، باب التوکل والصبر، الحدیث: ۵۲۹۵، ج۲، ص۲۶۳

www.dawateislami.net

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जन्नत में मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बग़ैर ह़िसाब के दाख़िल होंगे और येह वोह लोग होंगे जो झाड़ फूंक नहीं कराते हैं और बद शुगूनी नहीं लेते हैं और अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ ही पर तवक्कुल करते हैं। येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है।

तशरीह़ात व फ़वाइद

बीमारियों में कुरआनी आयतों और दुआ़ओं के ज़रीए़ गन्डा तावीज़ करना कराना और झाड़ फूंक कराना और दवा इलाज कराना जाइज़ है लेकिन मुतवक्किलीन की जमाअ़त जो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल करते हैं और हर क़िस्म के तावीज़ गन्डों और दवाओं से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ रखते हैं इस ह़दीस में उन्ही बुज़ुर्गों का तज़किरा है जो बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होंगे। واللہ تعالٰی اعلم

﴾57﴿ छे अ़मल पर जन्नत की गारन्टी

ह़दीस :

عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ اَضْمِنُوْا لِیْ سِتًّا مِّنْ اَنْفُسِکُمْ اَضْمَنْ لَکُمُ الْجَنَّةَ اُصْدُقُوْا اِذَا حَدَّثْتُمْ وَاَوْفُوْا اِذَا وَعَدْتُمْ وَاَدُّوْا اِذَا ائْتُمِنْتُمْ وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَکُمْ وَغُضُّوْا اَبْصَارَکُمْ وَکُفُّوْا اَیْدِیَکُمْ (1)

(مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۱۵)

हज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे लिए अपनी ज़ातों की त़रफ़ से छे चीज़ों की ज़िम्मेदारी क़बूल कर लो तो मैं तुम लोगों के लिए

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب حفظ اللسان...الخ، الحدیث ۴۸۷۰، ج۲، ص۱۹۷

www.dawateislami.net

जन्नत की ज़िम्मेदारी क़बूल कर लूंगा। ﴾1﴿ जब बात करो तो सच बोलो। ﴾2﴿ जब वादा करो तो पूरा करो। ﴾3﴿ जब तुम अमीन बनाए जाओ तो अमानत को अदा करो। ﴾4﴿ अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो ﴾5﴿ अपनी निगाहों को नीची रखो। ﴾6﴿ अपने हाथों को गुनाह के कामों से रोके रखो।

तशरीहात व फ़्वाइद

येह सब आमाल अलग अलग भी जन्नत में ले जाने वाले आमाल हैं जिन में से बाज़ का तज़किरा हम पेहले सफ़हात में तेह्रीर कर चुके हैं मगर इस ह़दीस में मजमूई तौर पर इन छे आमाल की ज़िम्मेदारी क़बूल करने पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जन्नत की गारन्टी दी है। **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान को इस की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

﴾58﴿ तक्लीफ़ों के बदले जन्नत

ह़दीस :

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ۔ متفق علیه [1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जहन्नम शेहवतों से ढांपी हुई है और जन्नत तक्लीफ़ों से ढांपी हुई है। येह ह़दीस बुख़ारी व मुस्लिम में है।

तशरीहात व फ़्वाइद

मत़लब येह है कि जहन्नम तक नहीं पहुंच सकते मगर शेहवतों के मुर्तकिब बन कर और जन्नत तक नहीं पहुंच सकते जब तक तक्लीफ़ों के मुर्तकिब नहीं होंगे।

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، الفصل الاول، الحدیث: ۵۱۶۰، ج۲، ص۲۴۲

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ों से मुराद क़िस्म क़िस्म की इबादतों की मेहनतें और तक्लीफ़ें, नीज़ मसाइब और त़ाआ़त पर सब्र की कुल्फ़तें हैं। ज़ाहिर है कि हर क़िस्म की तक्लीफ़ों पर सब्र की जज़ा जन्नत है तो गोया जन्नत तक्लीफ़ों से घिरी हुई है कि मुसलमान जब तक्लीफ़ों की मन्ज़िलों को सब्र के साथ त़ै कर लेता है तो जन्नत में पहुंच जाता है। واللہ تعالٰی اعلم

﴾59﴿ मुफ़्लिसी और फ़क़ीरी

ह़दीस : 1

عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُمْتُ عَلٰى بَابِ الْجَنَّةِ فَكَانَ عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِيْنُ [1] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۴۶)

ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुवा तो आ़म तौ़र पर जन्नत में दाख़िल होने वाले मिस्कीन लोग थे।

ह़दीस : 2

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُ الْفُقَرَاءُ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْاَغْنِيَاءِ بِخَمْسِ مِائَةِ عَامٍ نِصْفِ يَوْمٍ [2] (مشکوٰۃ، ج۲، ص۴۴۷)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फ़क़ीर लोग मालदारों से पांच सौ बरस पेहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे जो आख़िरत का आधा दिन है।

---

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحدیث: ۵۲۳۳، ج۲، ص۲۵۳

2 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحدیث: ۵۲۴۳، ج۲، ص۲۵۵

तशरीहात व फ़्वाइद

मोमिन की मुफ़्लिसी और ग़रीबी येह ख़ुदावन्दे कुद्दूस की त़रफ़ से मोमिन बन्दों का इम्तिह़ान है अगर मुसलमान सब्र के साथ इस इम्तिह़ान में कामयाब हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला उस मुफ़्लिस व ग़रीब मुसलमान को मालदारों से पांच सौ बरस पेहले ही जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा। आख़िरत का एक दिन दुन्या के हज़ार बरस के बराबर होगा इस लिए पांच सौ बरस में आख़िरत का आधा दिन होगा। واللہ تعالیٰ اعلم

﴾60﴿ सालिह़ीन की ख़िद़मत

ह़दीस :

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَفُّ اَهْلُ النَّارِ فَيَمُرُّ بِهِمُ الرَّجُلُ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَقُوْلُ الرَّجُلُ مِنْهُمْ يَا فُلَانُ اَمَا تَعْرِفُنِىْ اَنَا الَّذِىْ سَقَيْتُكَ شَرْبَةً وَقَالَ بَعْضُهُمْ اَنَا الَّذِىْ وَهَبْتُ لَكَ وَضُوْءً فَيَشْفَعُ لَهٗ فَيُدْخِلَهٗ الْجَنَّةَ۔رواه ابن ماجه [1] (مشکوٰۃ، ج۲،ص۴۹۴)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है इन्हों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जहन्नमी लोग एक क़ित़ार में खड़े किए जाएंगे तो एक जन्नती आदमी का उन लोगों के पास गुज़र होगा तो जहन्नमियों में से एक आदमी उस से कहेगा कि ऐ फ़ुलां ! क्या आप मुझे पेहचानते हैं ? मैं वोही हूं कि आप को शरबत पिलाया था और कोई जहन्नमी कहेगा कि मैं वोही हूं कि आप को वुज़ू का पानी दिया था तो वोह जन्नती उस जहन्नमी की शफ़ाअ़त करेगा और उस को जन्नत में दाख़िल कर देगा। इस ह़दीस को इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

1 .....مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ...الخ،باب الحوض...الخ،الحدیث ٥٦٠٤،ج٢،ص٣٢٧

तशरीहात व फ़्वाइद

सालिहीन यानी उ़लमाए मिल्लत व मशाइख़ के साथ अ़क़ीदतो मह़ब्बत और इन ह़ज़रात की मुख़्लिसाना ख़िदमत दोनों जहां में ख़ैरो बरकत का बाइस और क़ियामत के लिए बेहतरीन सामाने आख़िरत है। आप ने ह़दीस में पढ़ लिया कि एक घूंट शरबत या पानी पिलाने वाले और वुज़ू के लिए पानी देने वाले आदमी को सालिहीन की इतनी ही सी ख़िदमत की बिना पर एक नेक बन्दे की शफ़ाअ़त से जन्नत मिल गई और जहन्नम से हमेशा के लिए रिहाई ह़ासिल हो गई। ह़ज़रते शैख़ सादी علیہ الرحمۃ ने इसी मज़मून की त़रफ़ इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

شنیدم کہ در روز امید و بیم　　بداں را بہ نیکاں بہ بخشد کریم

यानी मैं ने सुना है कि क़ियामत के दिन ख़ुदावन्दे करीम बहुत से गुनाहगारों को नेकों की वज्ह से बख़्श देगा। फ़क़त़। واللہ تعالٰی اعلم

وَمَا تَوْفِيْقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ وَهُوَ حَسْبِيْ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِهٖ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ۔

تمت بالخیر

दुआ़

ऐ ख़ुदावन्दे जहां ऐ किरदगार
तेरी रेह़मत का हूं मैं उम्मीद वार

गो कि मैं इक बन्दए नाकारा हूं
बेकसो मजबूर हूं बेचारा हूं

तेरी रेह़मत से मगर दिल शाद हूं
नेमतों के बाग़ का शमशाद हूं

तू ने ऐसा फ़ज़्ल मुझ पर कर दिया
रेह़मतों से मेरा दामन भर दिया

मेरी क़िस्मत इस त़रह़ नूरी हुई
येह "बिहिश्ती कुन्जियां" पूरी हुई

किस ज़बान से शुक्र तेरा हो अदा
मैं तेरा बन्दा हूं तू मेरा ख़ुदा

ऐ ख़ुदा जब तक रहें लैलो नहार
दो जहां में हो येह मेरी यादगार

ग़ुन्चए उम्मीद खिल कर फूल हो
नूर की सरकार में मक़्बूल हो

आंख रौशन पढ़ के हर दिल सेर हो
और मेरा ख़ातिमा बिल ख़ैर हो

हों मेरे मां बाप या रब जन्नती
अज़ त़ुफ़ैल "رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ"

मेरे सब उस्ताद भी एह़बाब भी
जन्नतुल फ़िरदौस पा जाएं सभी

कर दुआ़ए आज़मी या रब क़बूल
बह़रे अस्ह़ाबे नबी आले रसूल

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
تفسیر روح البیان	الامام الشیخ اسماعیل حقی البروسوی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسی الترمذی ۲۷۹ھ	دارالفکربیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی
سنن النسائی	امام ابوعبد الرحمٰن احمد بن شعیب النسائی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
سنن ابن ماجه	امام ابوعبداللّٰہ محمد بن یزید القزوینی ۲۷۳ھ	دارالمعرفة بیروت
المسند	الامام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت
المستدرک للحاکم	امام ابو عبداللّٰہ محمد بن عبداللّٰہ نیشاپوری ۴۰۵ھ	دارالمعرفة بیروت
المؤطا	الامام الحافظ مالک بن انس ۱۷۹ھ	دار المعرفة بیروت
سنن الدارمی	الامام الحافظ عبد الله بن عبدالرحمن الدارمی ۲۵۵ھ	باب المدینه
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی
الجامع الصغیر	امام ابو عبدالرحمن جلال الدین سیوطی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
کنزالعمال	علامه علی متقی بن حسام الدین هندی برهان پوری ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
شعب الایمان	امام ابوبکراحمد بن الحسین البیهقی۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
شرح السنة	امام حسین بن مسعود بغوی۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
مشکاة المصابیح	الشیخ ولی الدین ابی عبداللّٰہ محمد بن عبداللّٰہ ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیة بیروت
مرقاة المفاتیح	نورالدین علی بن سلطان (ملاعلی قاری)۱۰۱۴ھ	دارالفکربیروت
شرح صحیح مسلم	الشیخ محی الدین ابو زکریا یحی بن شرف النواوی۶۷۶ھ	افغانستان
اشعة اللمعات	شیخ عبد الحق محدث الدهلوی ۱۰۵۲ھ	کوئٹه
دلائل النبوة	الامام ابی بکر احمد بن الحسین البیهقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مکاشفة القلوب	حجةالاسلام امام محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
شرح المقاصد	الامام العلامة مسعود بن عمر التفتازانی ۷۹۳ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
قصیده برده	الشیخ الامام محمد شرف الدین البوصیری ۶۹۶ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल

﴾शोबए कुतुबे आला ह़ज़रत﴿

उर्दू कुतुब :

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (زَادُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ़ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मारूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबादत कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

17....ह़दाइक़े बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 37)

अ़रबी कुतुब :

19, 20, 21, 22, 23.....جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰى رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس) (कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

24....(اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى) (कुल सफ़ह़ात : 458)

25.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74) 26..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

27..... اَلزُّمُزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93) 28.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِى (कुल सफ़ह़ात : 46)

29.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : 77) 30.....اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : 70)

31.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़ह़ात : 60)

www.dawateislami.net

﴾शोबए तराजिमे कुतुब﴿

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़हात : 896)
02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द (कुल सफ़हात : 625)
03.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرِفِىْ حُكْمِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़हात : 112)
04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِى الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़हात : 112)
05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़हात : 142)
06.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़हात : 54)
07.....जन्नत में ले जाने वाले आमाल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़हात : 743)
08.....इमामे आज़म عَلَيْهِ الرَّحْمَة की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَامِ اَعْظَمعَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़हात : 46)
09.....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 853)
10.....नेकी की दावत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़हात : 98)
11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़हात : 144)
12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़हात : 85)
13.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़हात : 102)
14.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जिम हिस्सा अव्वल) (कुल सफ़हात : 412)
15.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जिम, हिस्सा दुवुम)(कुल सफ़हात : 413)
16.....इह़याउल उ़लूम का खुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़हात : 641)
17....हिकायतें और नसीहतें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़हात : 649)
18....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़हात : 122)
19....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़हात : 122)
20....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़हात : 102)
21....आंसूओं का दरिया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़हात : 300)
22....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِى الدِّيْن) (कुल सफ़हात : 63)
23....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़हात : 36)
24....बेटे को नसीह़त (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़हात : 64) 25....اَلدَّعْوَةُ اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़हात : 148)
26....इस्लाहे आमाल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़हात : 866)
27....जहन्नम में ले जाने वाले आमाल जिल्द दुवुम (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 1012)
28....आशिक़ाने ह़दीस की हिकायात (اَلرِّحْلَة فِى طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़हात : 105)
29....इह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1124)
30....इह़याउल उ़लूम जिल्द दुवुम (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1393)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिए

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "ग़ौरो फ़िक्र" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए ।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

Faizane Madina, Mirzapur, Ahmedabad-380001 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006

feedbackmmhind@gmail.com 011-23284560, 8178862570

www.dawateislamihind.net FOR HOME DELIVERY 9978626025 *T&C apply